

(10)

मैथिलीक
वैश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी
शब्दावली

डा. कमला चौधरी

सौख्यिक प्रसंग

- प्राचीन भारतीय साहित्य, वैयक्तिक प्राचीन अथवा कालीन साहित्यिक चेतना-प्रमाणन सम्बन्धी शब्दावलीक दृष्टिर्हि एहि ग्रन्थमे जे गम्भीर अध्ययन करल गेल अछि से तँ प्रशंसनीय अछि। एहि परन्तु आधुनिक वैयक्तिक साहित्यिक विभिन्न विचारों काहि रूपमे चर्चा देल गेल अछि से कानहु भावो अनुसन्धताक हेतु सर्वथा प्रेरणाप्रद, अनुसरणीय ओ अनुकरणीय अछि।
- वैयक्तिक चेतना-प्रमाणन सम्बन्धी शब्दावली अतिप्रामाण्य प्रकाशित हो, कथनाचीधरीक ई ग्रन्थ न केवल वैयक्तिक साहित्य ओ शब्द मण्डपार्थ परिचित करवैत अछि अपितु मिथिलाक लोककृत (Folklore) ओ समाजविज्ञानक क्षेत्रक हेतु महत्वपूर्ण आधार सामग्री प्रस्तुत करैत अछि।
- जो.ए. त्रिपाठीक विहल खोजेपट नाट्यक शैलीक ई ग्रन्थ मिथिलाक सामाजिक जीवनक प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि उत्पादिक प्रक्रमान्तरों परितः देबल संगहि मैथिली भाषा-विज्ञान एवम् कोष-निर्माणक हेतु प्रभुत सामग्री उपलब्ध समर्पित करैत अछि। अत्रत्य भविष्यमे मैथिली शब्दकोषक निर्माता-संशोधक विद्वानक एहि ग्रन्थक एक बेर गम्भीरतापूर्वक परावण करन परम आवश्यक होइ जखनि।

श्रीश्रीक

- प्राचीन
प्राचीन
भूषा
दुःख
कष्ट
परन्तु
विभि
गल
हेतु
अनु
● वैशि
शब्द
डा
मैथि
रिगि
ता
मप
आध
● श्री
सा
शाम
इप
मप
का
अप
प
नि
क
पर

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

डा. कमला चौधरी

रीडर, मैथिली विभाग

एच.टी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

अभिलाषा प्रकाशन

बलभद्रपुर (एन.पी.मिना चौक)

नवदेवगढ़, हरद्वार- 246001

सहायिका : लेखिका

प्रकाशक : अभिलाषा प्रकाशन
बलभद्रपुर (एच.टी. मिश्रा चौक)
लहेरियासराय, दरभंगा- 846001

संस्करण : पहिल, 2008

मूल्य : 700.00 (सात सय टोका मात्र)

- पेशी प्राप्ति स्थान :
1. डा. कमला चौधरी
क्याटेर नं०- 6, कलिनैक कैम्पस
महंत दर्शनसुंदर महिला पदाविद्यालय,
बलभद्रपुर (मिथिला)
दूरभाष : 0621- 2246582
मोबाइल : 9905029611
 2. श्री अनुपम कपत (मुकुलजी)
अधिवक्ता
बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा
मोबाइल : 9835486070

मुद्रक : प्रिन्टवैत
रावर, दरभंगा

पुरोवचन

कोनहु घण्टक अभिच्यवित-क्षमता ओ विचार-सम्प्रेषणक सामर्थ्य ओकर शब्द-मण्डपपर निर्धार कएल गेल छैक । जाहि भाषाक शब्द-मण्डप जेतेक समृद्ध रहैत छैक, ओ भाषा जीवन ओ जगतक अत्यन्त सूक्ष्मसँ सूक्ष्म ओ व्यापकसँ व्यापक विमोचक अभिच्यवित करबाक लेलक सामर्थ्य होइत अछि । मैथिली भाषाक शब्द-मण्डप सेहो अत्यन्त समृद्ध अछि । एकर एहि शब्द सम्पदाकें संकलित करबाक प्रयास ईनसभे जगज्जीवने आरम्भ भऽ गेल छल, किन्तु ओ सफल भऽ परलैनहुँ धरि पूर्णतःकें प्राप्त नहि कऽ सकल अछि । अनेकजना मैथिली शब्दकोष आँशिक वा पूर्णरूपमे प्रकाशमे अवैत रहल अछि किन्तु कोनहुँ शब्दकोषकें सर्वस्य पूर्ण ओ वैधिलीक समस्त शब्द-सम्पदाकें सम्पूर्णतया नहि कहल जा सकैत अछि ।

सन्ध्या सवरी प्रतिष्ठित शब्दकोष पराशरिन्द्रा कृत कल्याणी कोष प्रचलनमे अछि । अखरी मैथिलीक कोष-वित्तनक दुर्लभ स्थितिमे देखैत ई कोष अत्यन्त उपयोगी अछि । मैथिलीक शब्दकोष-परम्पराक अद्यतन कृति होइतो ई नहि कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक सफल शब्द-कोष कल्याणी कोषमे आविष्कृत अछि । सामान्य लेखक देखल जाए केवल ३५ वर्षपर लगभग होइ सय शब्द द्वारा स्ताना भेल जकर सम्पत्ति नहि कोषमे रहि भऽ सकल अछि । एहि स्थितिमेकें अन्वयाभाविको नहि कहल जा सकैत अछि ।

कोनो भाषाक यथावत शब्दकोषक निर्माण जे केवल पुस्तकालयपर आश्रित रहि भऽ सकैत अछि, जे एक व्यक्तिमे सम्भव भऽ सकैत अछि । यथावत कोष निर्माण हेतु आवश्यक अछि जे अनेक व्यक्ति द्वारा विभिन्न क्षेत्रमे समानक सामर्थ्य निचला स्तरपर जाय पूर्ववर्तक शब्द समक संकलन कएल जाय । ई काम आर्थिक दृष्टिसँ सम्पन्न

कोनो संस्थादि द्वारा सम्मय । मैथिलीकें से मुविषा उपलब्ध नहि रहलैक अछि ।
भविष्यदुपे तकर सम्भावना नहि रहैछि नहि । परन्तु तकरा धरमे मैथिलीकें निराल
शब्द-सम्पदाकें निराल विमृष्ट होइत छलकालेत छैदना से जा सकैत अछि ।

एखन समाज भारतमे लोक परिवर्तन प्रक्रियाकें परिवर्तन होइत जा रहल छैक ।
लोकक जोषा मैथिली, आहार-विहार, आचार-विचार, शिक्षा-संस्कृति, निराल वस्त्र
जा रहल छैक । एखन स्थिति मैथिलीकें अत्यन्त प्राथमिक शब्दावली सेले प्रयोग-संस्कृत
प्रयोग लुप्त होयबाक स्थितिमे अवेत जा रहल अछि । एही सभ भविष्यतक लोकधन
(Folklore)क एकटा महत्वपूर्ण आधारभूत उपदान लोकभाषिक शब्दावली सेले
विमृष्ट ओ लुप्त होइत जा रहल अछि । ओकरा अनन्तकालकें संकलित कऽ कोषबद्ध
करब नितान्त आवश्यक ।

विविधविद्यालयमे अध्यापक लोकनिक हेतु अध्यापककें लगे अनुसन्धान करब ओ
अनुसन्धान करबब सेले कर्तव्यक एकटा महत्वपूर्ण अंग होइत छै । एकर निराल
एवं परीक्षणमे अनेक अनुसन्धान कार्य भेल आ रहिओ भेल । अछि सभमे एकटा सेले
एखन मैथिलीकें शब्द-सम्पदा । हम अछि दिसामे अनेक शोधकर्ताकें अनुसन्धान कार्य
काशाक हेतु प्रेरित करबलैछि । अछिमे लोक गोट शोधक अपन शोधकार्य सकलपूर्वक
सम्पन्न कयलनि । अवरमे ओ लोक शोधकार्य मैथिलीकें विशिष्ट शब्द-सम्पदाक
क्षेत्रमे बहुबल्य योगदान सिद्ध होइत यदि ओ प्रयोगक रूपमे वैदिक कालक
समय आबि सकय ।

अछि लोक गोट शोध-प्रक्रमे एकटा छलैत छै कम्प्युटरकें । किनर शोधक
विषय छलनि मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त वेरा-धृष-प्रसाधन शब्दावलीकें
माषातान्त्रिक अध्ययन । नालक लोक गोट मूलभूत आधारककें घर (घर, घर ओ
आवास)मे काय द्वितीय अतिथि ओ अतिथिमे अतिथिकककें करने अवेत अछि,
उकर प्रयोजन मूलभूतमे छलैक, यथामे छैक आ भविष्यमे छलैक- लोक-आवास-कार्य
रहा तथा भूत-विचार । कालक्रममे वाय यल-समुदायक छोट-छोट तथा
सम्पदा-संस्कृतिकें अधिष्ठातिक पदपूर्वकें अधिन बलि गेल । सन्दर्भ-वैदिक एकछि
संग दुइ गोट और समय छुटि गेल- धृष ओ प्रसाधन । वेरा-धृष-प्रसाधनक
इष्टान, चर्चा ओ परम्परा कोय सन्धक सम्पदा ओ संस्कृतिकें परिवर्तन भेल
जाइत अछि । प्रत्येक सन्धक धरमे वेरा-धृष-प्रसाधन सम्पदाकें शब्दावलीकें
विशिष्ट स्थान छैत छैक । काल-प्रयुक्त, ऐतिहासिक घटना, पञ्चनैतिक एवं भित्त
सांस्कृतिक संकषणसे वेरा-धृष-प्रसाधनकें प्रयोग सेले निराल परिवर्तन होइत छैत
छैक । तकर परिणामस्वरूप ओकर शब्दावलीसे निराल परिवर्तन परिवर्तन होइत

छैत छैक । मैथिलीकें वेरा-धृष-प्रसाधन सम्पदाकें शब्दावली प्रचुर परिमाणमे अछि ।
अछिमे बहुत शब्द सर्वथा परिभाषिक कोटिक अछि । अछिमे बहुत प्राचीन शब्द
अछि जे प्रयोग-बाद जा लुप्त भऽ गेल अछि तै बहुत नवीन शब्द बहुप्रचलित भऽ गेल
जा भेल जा रहल अछि ।

कम्प्युटरकें वे केवल अपन शोधकार्यकें सकलपूर्वक सम्पन्न कयलनि
अछि अपन शोध-प्रत्यक्षकें आओर संशोधन परिष्कारन ओ परिवर्तनकें एवं प्रत्यक्ष
रूपमे मैथिलीकें वेरा-धृष-प्रसाधन सम्पदाकें शब्दावली अधिधानमे प्रकाशन करा रहल
छि । ई अत्यन्त उपर कार्य अन्यत्र छलैकें प्रकाशन दिस अत्रार होयबाक प्रेरणा
प्रदान कलनि से आभा कयल जा सकैत ।

ग्रन्थमे बारह गोट अध्याय अछि ।

पहिल लोक अध्यायमे मैथिल वेरा-धृष-प्रसाधनकें सांस्कृतिक स्वतन्त्रकें परिचय
अछि । अछिमे क्रमशः प्राचीन भारतीय ज्ञापक आधारकें भारतीय वेरा-धृष-प्रसाधनकें
स्वरूप एवं अधिधान, मैथिल वेरा-धृष-प्रसाधनकें परम्परा तथा मैथिल सांस्कृतिक
परिष्कारन विचारकें प्रसार ओ कालप्रवाहकें कारणे मैथिल परिवर्तनकें विवेचन अछि ।

द्वितीय-पंचम छलमे अध्यायमे क्रमशः प्राचीन, पञ्चकालीन एवं आधुनिक
मैथिली साहित्य-लोकसाहित्यमे विभिन्न वेरा-धृष-प्रसाधन-विचारकें सम्पदाकें वर्णनकें
विवेचन ओ तत्त्वकें शब्दावलीकें परिचय दल गेल अछि ।

सप्तम-आठम-नवम अध्यायमे विविधकें आधुनिक सांस्कृतिक जीवनकें तथा
धरमे अनुवत वेरा-धृष-प्रसाधन सम्पदाकें शब्दावलीकें संकलन-विवेचन भेल अछि ।
ई अत्यन्त जरुर एवं कम समय अंग कहल जा सकैत अछि । एहि लोक अध्यायकें
महत्त्व एकर शब्द-संश्लेष, परिभाषा, प्रयोग-परिचय, अर्थ-विवेचन इत्यादिकें
दृष्टिमे अन्वेषक अछि । लोककें एहि लोक अध्यायकें पूर्णता ओ विवर्तनीयता इति
कारणक हेतु लोक-सम्पदाकें आधार बनौलनि ओ तकर अतिरिक्त कोनो वैकल्पिक
सधने नहि छलनि । अछि लोक अध्यायमे क्रमशः वेरा-सम्पदाकें शब्दावली, नारी-पुरुष
द्वय विवेचन अंगमे धरण कयल जायबला अधूषण एवं शारीरिक भिन्न-भिन्न अंग-प्रयोगमे
कयल जायबला अधूषणकें अंगकें शब्दावलीकें संकलन-विवेचन भेल अछि ।

अन्तिम दशम, एकादश ओ द्वादश अध्यायमे मैथिलीकें वेरा-धृष-प्रसाधन
सम्पदाकें शब्दावलीकें सांस्कृतिक दृष्टिमे विचार कयल गेल अछि अछिमे धरनि
समुदाय, शब्दकें प्रकार, स्वरूप, अर्थपरिवर्तन, शब्द-सधने उपसर्ग-प्रत्ययकें
विश्लेषण-विवेचन भेल अछि ।

અન્યમે લેખિકા ઉપલંભક રૂપમે અવન નિર્ધારક પ્રતિપાદન કયલને અર્થે ।

હુતમે અધ્યાયમે લોકસાહિત્યમે જ્વાલ વેશ-પૂષા-પ્રસાધનક સંસ્કૃત શબ્દાવલોક પ્રકૃતિયથે વહુશઃ લોકગીતક સંગીત લોકયંત્ર, લોકકોક્ત, લોકવધન, કકદ્દા, સેશક ક્રોડાગીત, પિઝાનો કૃત્યદિક ઉદ્ધરણ દેલ યેલ અર્થે । યેસર દિસ સ્થાનમે નવમ અધ્યાયમે લોકજીવનમે પ્રચલિત વેશ-પૂષા-પ્રસાધન સમ્બન્ધી શબ્દાવલોક વિવેચન અર્થે । લેખિકાકે પૂલ કાર્યે સમ્પન્ન થેલા ઉત્તર સેહી વહુશઃ લોકકોક્ત ઓ શબ્દાવલોક પ્રાપ્ત મેલ હલતે । ઓકર સવકે આઠ અર્વાકમે યયસ્થાન સમાવિષ્ટ કઃ દેલ અર્થેક સન્નોચીન મે અર્ચાષ્ટ લોકકોક્ત સમકે ગ્રન્થમે યયા સ્થાન સમાવિષ્ટ કઃ દેલ યેલ અર્થે । આઠ પરિશિષ્ટ 'ક'મે અર્ચાષ્ટ શબ્દક અર્થ સહિત સૂચી દેલ દેલ અર્થે । પરિશિષ્ટ 'ચ' મે સમ્બદ્ધ વિશવલોક દેલ યેલ અર્થે । પરિશિષ્ટક અન્તિમ પાલ 'ગ'મે ઓર્થે સમસા ગ્રન્થક સૂચી દેલ યેલ અર્થે જકર હીં ગ્રન્થમે સન્નર્થક રૂપમે ઉપયોગ કયલ યેલ અર્થે ।

પરિશિષ્ટમે જોન અર્ચાષ્ટ શબ્દક કોષવત્ સમાવેશ કયલ દેલ અર્થે, તકર વૃત્ત આકાર દેલ વેશ-પૂષા-પ્રસાધન સમ્બન્ધી સમ્પન્ન શબ્દાવલોક અર્થ સહિત સંકલન કઃ દેલ જાણતે હે ઓ મૈથિલી શબ્દકોષક દુષ્ટિર્ અન્વય ઉપયોગે સોર । હે નરિયે મેલા ઉત્તર હે ગ્રન્થ મૈથિલી કોષ-વિજ્ઞાનક ક્ષેત્રમે સહત્વપૂર્ણ યોગદાન નિઠ્ઠ થા શકત હાલિમે સન્દેહ નહિ ।

મૈથિલી ધાષા-માહિત્યક વિશેષજ્ઞ એન ડ્રબુદ્ધ વટક લોકનિકે ગ્રન્થ વહુશઃ વહુશે હુતમે શબ્દક સ્મરણ થા સકેલ હાલિ હે ગ્રન્થમે અનુલિખ્યક હાલિ યેલ । સજ્જ અધ્યેત યોર હુતમ હુતલ શબ્દકે અર્થે હાલિ હુતલ કયલે અર્થે હે ઓ એકલ મહત્વપૂર્ણ કાલ સોચત । લેખિકા હે એક અર્થેક અનેક પદ્યેક તક એક શબ્દક અનેક વૈકલ્પિક રૂપ દેલાકે પ્રથમ કયલનિ, હાલિમે વૃદ્ધિયે થા સકેલ અર્થે । અનેક પ્રયત્નકે કોનહુ શબ્દક જે અર્થ લેખિકા હુત દેલ યેલ અર્થે હાલિમે અસહ્યરિયે થા સકેલ । હુતદાશાપાર્થ એક ગોર શબ્દ વટકાસો દેલાલ જા સકેલ । નવમ અધ્યાયક પ્રસાધનક શબ્દાવલોકમે તિનુ-પ્રસાધનક ક્રમમે શબ્દ નિર્દિષ્ટ મેલ અર્થે જકલ જ્વાલયામે કહલ યેલ અર્થે- સૌષ પાત્રમે કયલ તિનુકે વટકાસિ/વટકાસો કહલ યાવુશ । કલ્યાણી કોષમે પદમાસો નહિ, વટકાસો શબ્દ અર્થે જકલ અર્થે કરલ યેલ અર્થે સ્વવધુક લોષ્ટ । કલોક મુદ્-પૂર્વેનયે મહિલામે વિદ્યામા કયલાલ જાલ યેલ હે ગત વિવરિતકે વિચાર, સપુશ્ચથી ઓ વિજ્ઞાનક અવધર સૌધક ઉપય પાત્રમે સોટલ કેશક છટોપર તિનુપર્વે ચિન્દુ, વૃત્ત આ રેલા અર્થેક કઃ પદમાસિ કયલ જાણતે, તકર પદમાસો સૌનુ કહલ જાણતે । ચિન્દુ હાલિ પ્રકાસક હે લેખિક

કાર્યે અર્થે હાલિમે હુતમ મિથિલી સૌધક સ્થાપનિક અર્થે । આ હુતમ છોટ-છોટ કારણે ગ્રન્થક મહત્વ ન્યૂન નહિ થા સકેલ ।

પ્રાચીન મૈથિલીય વાદ્યમ્ય, મૈથિલીય શાચીન ઓ મામ્યકાલીન સાહિત્યક વેશ-પૂષા-પ્રસાધન સમ્બન્ધી શબ્દાવલોક દુષ્ટિર્ અર્થે ગ્રન્થમે જે ગમ્યોર અધ્યાયન કયલ દેલ અર્થે હે હે પ્રાચીનયે અર્થે પરન્તુ આધુનિક મૈથિલી સાહિત્યક વિવિધ વિધાયકે અર્થે રૂપમે અર્થે દેલ યેલ અર્થે હે કોનહુ ચાલી અનુસન્ધાતક હેનુ સન્દેશ પ્રેરણાપ્રદ, અનુસરણીય ઓ અનુકરણીય અર્થે ।

મૈથિલીય વેશ-પૂષા-પ્રસાધન સમ્બન્ધી શબ્દાવલોક આધ્યાયનમે પ્રચલિત થા કમલચૌધોકે હે ગ્રન્થ ન કેવલ મૈથિલીય સાહિત્ય ઓ શબ્દ-સમ્પદામે પર્વચિત કાર્યેક અર્થે અર્થે મિથિલીય લોકવૃત્ત (Folklore) ઓ સમાજવિજ્ઞાનક ક્ષેત્રક હેનુ મહત્વપૂર્ણ આધાર સમગ્રો પ્રસ્તુત કરેલ અર્થે ।

જોર, પ્રિયસંનક કિહાર પોજેષ્ટ તાજુક શ્રેણોકે હે ગ્રન્થ મિથિલીય સામાજિક જીવનક પ્રકૃતિ, પ્રપૃતિ, સ્વચિત્ત્યદિક પ્રકાસનમે પરિચય દેલાક સંગીત મૈથિલી કોષ-વિજ્ઞાન એવ કોષ-નિર્માણક હેનુ પ્રપૂત સામગ્રી અપનામે સમાહિત કયલે અર્થે । અગ્રણે પતિપત્રમે મૈથિલી શબ્દકોષક વિષ્ણુ-સંગ્રહક વિજ્ઞાનકે અર્થે ગ્રન્થક એક શ્રે ગમ્યોરપૂર્વક પ્રયત્ન કરલ પરમ આવશ્યક થા જયતિ ।

વિભાસ અર્થે હે હે ગ્રન્થ વિદ્યાર્ લોકનિ દ્વાર અવશ્યે સમ્પન્ન હોયત । શ્રમપૂર્વક હુતમ ગ્રન્થક રચના હથા સાહસપૂર્વક તકર પ્રકાસનક હેનુ આવુષ્પતી કયલાલોકે હપર હાર્દિક અગ્રાંચંદ ઓ અગ્રેશ શુભકામના ।

મકર સંક્રાંતિ, 2026

લલિતપુ

લલિતપુ

સંપર્ક-846001

રામદેવજી

(પૂર્વે વિશ્વવિદ્યાલય પ્રાધ્યાપ

મૈથિલી વિભાગ, જ.પા.વિ.વિ.

તથા

પૂર્વે સરસ્વ, સાહિત્ય અકાદેમી, ચૈ દિલ્લી

आत्मोक्ति

मनुष्यक तीन एंड मूलभूत आवश्यकताये पोजनक ठहरे वस्तुदिक स्मान अकैत अछि । वस्तुस्य जेना-जेना मुक्तप्य ओ मुक्तिक होइत गेल, तसक 'संयनक' आधारभूत तत्त्वक रूपमे परिगृहीत करैत गेल । एते धारण शास्त्रीयक सौन्दर्यक' अक्षरक बनबलाक हेतु उत्प्रेक्ष्य बहैत गेल । इति आकर्षणक' अधिक कारणाक हेतु विभिन्न प्रकारक आपूरण ओ प्रसाधन उद्देश्यक कारन करैत रहल । एकर प्रमाण सैद्धांतिक रूप जति ओ धर्ममे उपलब्ध अछि ।

पैथिली साहित्य ओ धार्मिक विश-धृष्ट-प्रसाधन सम्बन्धी शास्त्रात्मिक ग्रन्थक अनुदत्तित रहलाक कारणे प्राचीन पैथिलीमे प्रचलित विश-धृष्ट-प्रसाधन सम्बन्धी बहुतो शास्त्रक अर्थ विलुप्त नहि अगितु बहुतो शास्त्रक अर्थ विलुप्त पऽ गेल अछि । अनेकमेक शैक्षणिक संकल्पनाक कारणे बहुतो शास्त्रात्मिक शास्त्र अस्तिमित एवं विलुप्त होपलाक प्रक्रियामे अछि । संसार बात ई जे अनेक नवीन शास्त्रात्मिक संप्रवेश गेल जा रहल अछि । एहन संश्लेषण कालमे यदि शास्त्रात्मिक संपूर्णता अध्ययन नहि कएल जायत तँ धर्मग्रन्थमे एहि शास्त्रात्मिक संपदक अर्थ-निर्वचन अधोमूलक पऽ जायत । शैक्षिक धर्ममे प्रकीर्त शास्त्रात्मिक विधुतिक गर्वमे चल जायत । एही अर्थक' ध्यानमे रखैत पूर्वमे एहि विश-प्रवन्धक विषय निर्धारण करल गेल छल । आज अजग अछि जे दुष्टकायक रूपमे प्रस्तुत ई पंथी एहि दिशामे सहायक सिद्ध होयत ।

प्रस्तुत ग्रन्थमे किछु परिवर्तन-संश्लेषण कएल गेल अछि । एहिमे हमरा १९९१ मे ल.न. मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी.क हिस्से प्राप्ति भेल छल । प्रस्तुत ग्रन्थ मूलतः ल.न.मि.वि., राष्ट्रीयक पैथिली विद्यालय केवलेकृत साधन होइ । श्रीचन्द्रनारायणक कृपापूर्व निर्देशन ओ पर्यवेक्षणक परिणाम छि । जिनका स्नेहपूर्ण साहित्य ओ शिक्षा निर्देश

द्वारा छात्रोई जीवन्त प्राप्ति होइत रहलाक सौभाग्य रहल अछि । विषय निर्धारणसँ लऽ सामग्री संकलन, उल्लेखन, विवेचन-विवर्तन धरि हिचका बहुत उदारता, गहन अध्ययन ओ गम्भीर अभिप्रायक साथ हमरा प्रवन्धक' पूर्ण कलामे ओ एतत्तु ग्रन्थ रूपमे प्रकाशनक मार्गक' प्रस्ताव करैत रहल अछि । एहि अर्थक' धर्मिक लिखि कऽ एकर परिष्कार' औरो थोड़ी बहुत चलाय अछि । एहि हेतु प्रत्य मुक्तक प्राप्ति कृतज्ञतापूर्ण हुनक समक्ष श्रम ओ एकनिष्ठताक प्रति आभार आधार प्रदर्शन मात्र कहल जा सकैछ ।

आइ मुक्त होइ । गौतमबोधनशास्त्र आशीषचरितमे लिखित छी मुदा अपूर्ण स्वरूपमे ओ हमरा सग प्रशस्त करैत रहलाक, से हमरा दुइ विश्वास अछि ।

श्रीभाग्यवत्स एहि शोध-प्रवन्धक परीक्षक सक्षि आचार्य प्रवर डा. जयमन्तमिश्र एवं दिवंगत विद्वान् डा. इलाहरीसिंह । डा. जयमन्तमिश्रजीक आशीर्वाद ओ सिनेट द्वारा सतत भेटैत रहल अछि । एहि दुनु विद्वानक प्रति आभार व्यक्त करैत छी । आभारी छी आदि गुरु लोकनिक' अतिशय धर्मिक छात्रावस्थामे प्राप्त भेल ओ हमरामे साहित्यिक अपिर्णित ज्ञान । मुख्य रूपमे आचार्य मुन्दरानुमन, ए. श्रीचन्द्रनारायणमिश्रभारजीक आशीर्वाद अविस्मरणीय अछि ।

विश्व श्रीकृष्णकान्तदा (अभिषेक) एहि ग्रन्थक' प्रकाशित करवावलेल सकत होवैत रहला । हुनक बेटी होचकाक हमरा गौरव अछि । हुनकाई बहुत किछु साखलहुँ आ पैर हमर लोभक धर्म बनल । अह निरिक्त रूपमे ओ हमरा एहि ग्रन्थक' देखि प्रसन्न होपला । विद्वत्तर स्वमुख गौतमकामो बहैन्द्रनारायणचौधरी (अभिषेक)क सिनेट ओ आशीर्वाद सेहो आगाँ बढ़बामे सहायक रहल । पातामह स्व. अच्युतानन्ददा ओ कान्तरी स्व. दुर्गादेवी (प्रम- मन्मोहन, बंटीस)क' नहि बिहारी पबैत छी, जे हमरा सनसक' बहुत धिक्क ओ साधक्य दऽ धन्य कएलनि । पति दिवंगत कन्हैयाचौधरी (होरीस), जिनका हमर पद-दुनव बंध लोक लागैत रहनि ओ वस्तुतः पैथिलीक बहिल काय बहैत रहनि । विद्वानक साथ होइतहुँ हुनका पैथिली धारण लोक पकड़ छलनि । ओहि समय हम बहुतक विश्वासी रहौ । आत्ममे हुनक बीच छेन्दीमे पत्राचार होअव । एका बेर ओ पैथिलीमे पत्र लिखैत ओइ कएलनि जे आगाँ पैथिलीमे हम सग पत्राचार करौ । ओकर बाद हमरा हुन सौक्य बीच पैथिलीमे पत्राचार होइत रहल । एहि दशमे पैथिली संयनक प्रेम हुनकासँ भेटल छल । ओना मृत रूपमे नहिओ रहैत ओ सदैव हमरा सग दिक्क होइत अछि । हम सहायक हुनक आशा ओ आकांक्षाक निबन्ध करैत रहलाक प्रयत्न कएलहुँ अछि । अह हुनक अनुपस्थिति कबहूँ अछि मुदा ईश्वरक विधानक आगाँ वस्तुतः किछु नहि चलैत छैक, से दूजैत हुनका बच्चा-सुमान अंगैत करैत छिछुरि । स्मृतिरोध पो. मुन्दरानुमन (अंगैत विधान, मन्मोहन बंटीस महाविद्यालय, लक्ष्मिधामराय, बंटीसगाँ) जे धर्मक दश-दश साहित्यिक अभिप्रायमे हमर निवृत्त रहनि, पैथिली पाठ ओ साहित्यमे

नीक नीच समेत छलह संगहि मैथिली, सिन्धी आ अंग्रेजी संघर्षक सफल काराकार रहिथि । मैथिलीक साहित्यिक आ सांस्कृतिक कार्यक्रममे हुनक सहभागितक लेल विद्यालय आ मकैल । जीवनक मात्र 34 वसंत दीस विज्ञ-प्रणाल्य आ अरुन स्थान बना लेने छलह । मैथिली साहित्य जगतक सेहो दिनकरक बहुत अवस्था छल, जे पूर्ण करि पऽ सकल । कोयल स्वरूप ओ मधुर-माधुर्यवान अनुभूतिक दृश्यमे इकठ्ठा भेल छल आ विवेक ओ तन्मय छलनि, से हम क्षण भरिलेल रहि बिचरि पवैत छी ।

डा. योगानन्द झा एवं छिपावै डा. मुगलचन्द्र झा ओ डा. ललित झाक प्रेरण आ सहयोग बिना ग्रन्थक प्रकाशन सम्भव नहि छल । शब्दजाली संकलन हेतु राम-चरक समयमे ललित संग देने छलह । ओहि प्रमाणक कतेको अविश्वसनीय कठिनाई चर्चा कऽ पुरानहुँ बहुत अनन्दक अनुभव करैत छी । इहि ग्रन्थक प्रकाशनमे कवि, लेखक ओ ईश्वरी प्रकाश शोधकालदेवशाक सहयोग पैरैत छल अछि । अतः हिनका लोकनिक हेतु आधार उद्धृत करैत छी । अनुभू प्रो. रामकृष्ण झा, इंजीनियरिंग कॉलेज, पारसपुर एवं संगठनकृष्ण झा, अधिवक्ता, लहेरियासराय, राँचिपंगाक सहयोग मदत स्थायी रहल । ग्रन्थक प्रकाशनमे ई लोकनि 'दीदी'क सहित हाथ बजल रहलह ।

पुस्तक प्रकाशनमे कतनहुँ अर्थ संकटक लेल कतनहुँ प्रेसक समस्या संकर बनल छल आ धिलख होइत गेल । पूरा समय पैच कातक मेलाइ पुजबू छी, सीनू डे डिड छनि इहि ग्रन्थक प्रेस धरि पहुँचा देलनि । पुत्र अतुल कमल (मुकुतजी), अधिवक्ता, लहेरियासराय, राँचिपंगा एवं नयाप (राँचिपंगा) निवासी ओ अमेरिका प्रवासी इमर अज्जा चौधुरीनन्द झा (इंजीनियर) ओ पुत्री श्री अभिलाषा कपल (मौन) सेहो ग्रन्थक प्रलेख व्यवसायी बनलनि अछि । हिनका लोकनिक उमर शार्पिक सुभाषी ।

ग्रन्थक निष्पादनमे प्रेस ओ सहायक समयक पुनर्गठन ओ सुव्यवस्थाक प्रति कृष्ण छियनि । आभारी छियनि ओहि समस्त सहयोगी सहित आ पुस्तकमेक इति जे राज्यजाली संकलन, अर्धबोच ओ प्रबन्धक स्वरूप निर्माणमे महत्वपूर्ण सूचना, सुझाव आदिनी सहायक भेलाह ।

आभारी छियनि ओहि समस्त बन्धु-बान्धवोंक प्रति तनिक प्रेरण आ सहयोगक कलस्वरूप ग्रन्थक प्रकाशन सम्भव पऽ सकल । श्रीमंजूरी (डिप्लोमा, राँचिपंगा)क सहयोग आ तत्परता हेतु धन्यवाद । अन्तमे प्रकाशन बुद्धिक हेतु धन्यवाद अछि ।

—कमला चौधरी

राजस्थानी
14.4.2008

मैथिली विभाजनक
एच.डी.सी.एच. कॉलेज, मुगलचन्द्र

(x)

विषय-सूची

पुनर्वचन	
आपत्ति	
विषय प्रवेश	
प्रथम अध्याय	01
वैशम्पा प्रसाधनक भारतीय परम्परा	
द्वितीय अध्याय	34
वैशम्पा प्रसाधनक मैथिल परम्परा	
तृतीय अध्याय	61
मैथिल परम्पराक प्रभाव ओ तन्मय परिवर्तन	
चतुर्थ अध्याय	67
प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वैशम्पा प्रसाधन	
पंचम अध्याय	94
मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वैशम्पा प्रसाधन	
षष्ठ अध्याय	153
आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वैशम्पा प्रसाधन	
सप्तम अध्याय	272
वैशम्पा शब्दावली	

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

विषय-प्रवेश

मानव तीन गोट प्लुतुत आवश्यकता अछि— भोजन, वस्त्र ओ आवास । एहिमे उदरपूर्तिक आदिष ओ प्राथमिक आवश्यकताक बाद वस्त्रादिक स्थान अवैत अछि । प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनसँ मानव आदिकालसँ पराजन्क आवश्यकताक पूर्ति करैत रहल अछि । फल जीवन प्रणाली धरि वस्त्रक आवश्यकतापर मानवक चिन्तन नहिने चर्को छल । क्रमशः जेन-जेन सुसभ्य ओ सुसंस्कृत जीवनक आरम्भ होइत गेल, परिधान दिन मानवक प्रयोग प्रक्रिया आरम्भ भेल । कर्पा, गोज, तापसँ बचावक हेतु वस्त्रक छल, चर्म आदिक प्रयोगसँ आरम्भ कऽ मानव तन्त्रा निवारण, शौन्दर्य सम्बन्धन ओ अनन्तः सुसंस्कृत जीवनक हेतु वस्त्रक जीवनक आधारभूत तत्वक रूपमे परिगृहित कऽ सेलक ।

स्वभावतः मनुष्यक किछु रिफायर जनजातिके छोड़ि अन्य सम्पन्न जातिमे वस्त्र निर्माण, धारण आदिक रिफायर जनजाति उपरि होइत छल । क्रमशः वस्त्र धारण सार्वजनिक शौन्दर्यक आकर्षक वनसजाक हेतु व्यक्तिगत निरूपक लक्ष्यक रूपमे परिगृहित भऽ गेल । एही आकर्षक ओ अधिकतमिक करवाक हेतु विभिन्न प्रकारक आपूर्ण ओ प्रसाधन उद्दीपनक काम करैत रहल । स्वभावतः एकर श्रोतक शब्दावली संसारक समग्र जाति ओ भाषामे विद्यमान अछि ।

मैथिली एकटा विकसित क्षेत्र ओ विशाल जनसंख्याक मातृभाषा छि । एहि जीवनक प्रत्येक गल-गामसँ छिट्ट छैक । एकर शब्द समापर्वमे वेशभूषा इत्यधनक शब्दावलीक संश्लेषक रूपमे स्थान छैक । मानव सभ्यताक विकासक विभिन्न चरणमे बस्त्रक प्रयोग होइत रहल अछि, वेशभूषा प्रसाधन क्रियाक रूपमे क्रमिक परिवर्तन-परिष्कार

[illegible][illegible][illegible]

शब्दावलीक अन्य स्वरु अछि लोकजगत । लोकजगतसँ प्राप्त शब्दावली
 तत्काल वाक्यत आ शब्दावलीक शब्द । अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 विकासक्रमक औपनिषदिक संगति अर्थ निरूपण भावक स्वरूप निर्धारण आ कोष
 निर्माणक महत्वपूर्ण उद्योग सिद्ध हुनयत ।

[illegible]

नैऋत्य धान प्रयोग करने के लिए एक अन्न द्वा सुधद्वारा के कार्य करने और त मैथिली नैऋत्य धान प्रयोग करने के लिए एक अन्न द्वा सुधद्वारा के कार्य करने और त मैथिली कहल बा सकरु । मुदा किनक शब्दसभ अत्यन्त व्यापक छलनि

[illegible][illegible]

चौथी कतिपय ही धर्माचारों में पक्षक गर्वणा अनुत्पत्तायन आ शनरांत गववाक
 ज्ञानात्त १ शनरांत ३ शनरांत ४ शनरांत ५ शनरांत ६ शनरांत ७ शनरांत ८ शनरांत ९ शनरांत १० शनरांत
 शनरांत ११ शनरांत १२ शनरांत १३ शनरांत १४ शनरांत १५ शनरांत १६ शनरांत १७ शनरांत १८ शनरांत १९ शनरांत २० शनरांत
 २१ शनरांत २२ शनरांत २३ शनरांत २४ शनरांत २५ शनरांत २६ शनरांत २७ शनरांत २८ शनरांत २९ शनरांत ३० शनरांत
 ३१ शनरांत ३२ शनरांत ३३ शनरांत ३४ शनरांत ३५ शनरांत ३६ शनरांत ३७ शनरांत ३८ शनरांत ३९ शनरांत ४० शनरांत
 ४१ शनरांत ४२ शनरांत ४३ शनरांत ४४ शनरांत ४५ शनरांत ४६ शनरांत ४७ शनरांत ४८ शनरांत ४९ शनरांत ५० शनरांत
 ५१ शनरांत ५२ शनरांत ५३ शनरांत ५४ शनरांत ५५ शनरांत ५६ शनरांत ५७ शनरांत ५८ शनरांत ५९ शनरांत ६० शनरांत
 ६१ शनरांत ६२ शनरांत ६३ शनरांत ६४ शनरांत ६५ शनरांत ६६ शनरांत ६७ शनरांत ६८ शनरांत ६९ शनरांत ७० शनरांत
 ७१ शनरांत ७२ शनरांत ७३ शनरांत ७४ शनरांत ७५ शनरांत ७६ शनरांत ७७ शनरांत ७८ शनरांत ७९ शनरांत ८० शनरांत
 ८१ शनरांत ८२ शनरांत ८३ शनरांत ८४ शनरांत ८५ शनरांत ८६ शनरांत ८७ शनरांत ८८ शनरांत ८९ शनरांत ९० शनरांत
 ९१ शनरांत ९२ शनरांत ९३ शनरांत ९४ शनरांत ९५ शनरांत ९६ शनरांत ९७ शनरांत ९८ शनरांत ९९ शनरांत १०० शनरांत

[illegible]

[illegible]

ਸਤ੍ਰਥੰ ਸੁਖੀ

- [illegible]

प्रथम अध्याय

वैशम्पयण प्रमाथनक भारतीय परम्परा

[illegible][illegible]

संस्कृत-भाषा-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी-221 005, भारत

सम्बद्ध शब्दावलीक परिज्ञान हांडशी अछि जातेमे अरको अपन प्राचीन समय के
अर्थ ध्वनि परिवर्तनक संग सङ्गो विधान अछि, अनेक शब्द-ध्वनि नवरक स्थिति अछि
है। तबले अछि की-संगे अनेक शब्द-ध्वनि परिवर्तन अछि। अनेक शब्द-ध्वनि
रहल अछि एवं पहिले एक शब्दावलीमे उल्बन्ध परिवर्तन हांडशी रहल अछि। हें
भाषाके अर्थ अछि अनेक शब्द-ध्वनि परिवर्तन अछि। अनेक शब्द-ध्वनि परिवर्तन अछि
हुनु एकर तीन खण्ड जयल अछि अनेक शब्द-ध्वनि परिवर्तन अछि। अनेक शब्द-ध्वनि परिवर्तन अछि।

- (क) खेड़ाभूषा प्रसाधनक धनतौर पर प्रयोग
(ख) खेड़ाभूषा प्रसाधनक वैधिल प्राप्त
(ग) वैधिल खेड़ाभूषा प्रसाधन पर प्रभाव एवं सम्बन्ध परीक्षण

[illegible]

अध्यापिका प्रियंका शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया।
 प्रश्न: निम्नलिखित में से एक शब्द का अर्थ बताएं।
 स्वभाव अर्थ
 वैदिक वाङ्मय
 जहाँ वाङ्मय की अभिव्यक्ति है।
 अध्यापिका उत्तरीय वाङ्मय की प्रकृत शब्द बता

कपड़ा प्राप्यन्ति कुन कपस आतिसे बस जानि जइत कुन । अथ सपयक
गुनीक सपयक कपस सपयक ।

2. मैथिलीक लेल भुक्त-अनायन सम्बन्धी शिक्कापत्र

असाव बहुत विकसित हूत असाव कपास एवं कलक कपड़ाक उपयोग होयत स्थिति
 २. असाव रसायन द्वारा असाव कपास अन्तर्गत युगान्तर वशाप्रशर्पे भारतक गायन
 करैत छलाह ।^१

[illegible][illegible][illegible]

शायी वस्तुका व्यवहार वैदिक सनातनधर्मक अवसरपर विशेष रूपसे कयल जाइत अछि ।

नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

सुनो कनो हं प्रामो वस्त्रक अतिरिक्त अजिन तस्य कुरमै चमन चमन चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

अजिन मूर्तु प्रानीन कानप व्यवहृत होइत छल । मन्त्रमै अजिन कप चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

पुनो वन तानो धरुनो । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

जगत् निवल पाण्डु । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

शरीरक उपरको पाण्डु । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । अजिन मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल । नानक मतमें चमन ह्रीय चरु दल ।

देशभूषा प्रसाधनक मंथिल पम्परा

[illegible]

विधिसाम्भ स बांगेन्तु क्षणच्छान्ताऽ इत्येवमुक्तं ।
अभिमन्देशो यत् कृष्णस्तस्मिन्वार्मान्निवाधत् ॥¹

[illegible][illegible]

सन्दर्भ सूची :

सात्वन्त्यस्यमृतिः श्रीकृष्ण संस्कृत संस्थान,
वाराणसी १ (आगत सं १०३६).
आचार्याय २ पृ. २

2. तर्कसूत्र, पृ.-12
3. तर्कसूत्र, पृ.-13
4. तर्कसूत्र, पृ. 35
5. तर्कसूत्र, पृ. 59
6. तर्कसूत्र, पृ.-60
7. तर्कसूत्र, पृ.-60
8. तर्कसूत्र, पृ.-60
9. तर्कसूत्र, पृ.-62
10. तर्कसूत्र, पृ. 82
11. तर्कसूत्र, पृ. 83
12. तर्कसूत्र, पृ. 95
13. तर्कसूत्र, पृ. 126
14. तर्कसूत्र, पृ.-67
15. तर्कसूत्र, पृ.- 128- 29
16. तर्कसूत्र, पृ. 29
17. एकात्मता सिद्धांत में तर्कसूत्र का उपयोग करके तर्कसूत्र को
द्वारा सिद्ध करने का प्रयास करने का प्रयास
द्वारा सिद्ध करने का प्रयास करने का प्रयास
तर्कसूत्र का उपयोग करके तर्कसूत्र को
तर्कसूत्र का उपयोग करके तर्कसूत्र को
18. तर्कसूत्र का उपयोग करके तर्कसूत्र को
19. तर्कसूत्र, पृ. 136
20. तर्कसूत्र, पृ. 35 पृ. 143
21. तर्कसूत्र, पृ. 326
22. तर्कसूत्र, पृ. 327
23. तर्कसूत्र, पृ. 327
24. तर्कसूत्र, पृ. 377
25. तर्कसूत्र, पृ. 412 स्तंभ 37
26. तर्कसूत्र, पृ. 417 स्तंभ 46

27. कृष्णचन्द्राचार्य, पृ. 23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-1046-1047-1048-1

56. कल्याणकर पृ. 114 कल्याणकर पृ. 148 562
उर्वेत् पृ. 230
उर्वेत् पृ. 561
कल्याणकर, पृ. 241
कल्याणकर, पृ. 65
कल्याणकर पृ. 544-561
उर्वेत् पृ. 564
57. उर्वेत् पृ. 561
उर्वेत् पृ. 109
58. उर्वेत् पृ. 551
59. उर्वेत् पृ. 551
60. कल्याणकर, पृ. 47
61. उर्वेत् पृ. 71
उर्वेत् पृ. 49 56 कल्याणकर पृ. 65
उर्वेत् पृ. 564
उर्वेत् पृ. 568
उर्वेत्
62. कल्याणकर पृ. 309
63. उर्वेत् पृ. 348
उर्वेत् पृ. 348
उर्वेत् पृ. 392
कल्याणकर, पृ. 370-381
बुधभगवत्पुत्र, विद्यापीठ, छ. इमानाबाद
पृ. 79
64. कल्याणकर, पृ. 38
65. उर्वेत् पृ. 44
66. उर्वेत् पृ. 564
67. उर्वेत् पृ. 576
68. कल्याणकर, पृ. 111

1. नरेश पृ. 11.
2. नरेश
3. नरेश पृ. 11.
4. नरेश पृ. 11.
5. नरेश
6. नरेश
7. नरेश
8. नरेश
9. नरेश
10. नरेश
11. नरेश
12. नरेश
13. नरेश
14. नरेश
15. नरेश
16. नरेश
17. नरेश
18. नरेश
19. नरेश
20. नरेश
21. नरेश
22. नरेश
23. नरेश
24. नरेश
25. नरेश
26. नरेश
27. नरेश
28. नरेश
29. नरेश
30. नरेश
31. नरेश
32. नरेश
33. नरेश
34. नरेश
35. नरेश
36. नरेश
37. नरेश
38. नरेश
39. नरेश
40. नरेश
41. नरेश
42. नरेश
43. नरेश
44. नरेश
45. नरेश
46. नरेश
47. नरेश
48. नरेश
49. नरेश
50. नरेश
51. नरेश
52. नरेश
53. नरेश
54. नरेश
55. नरेश
56. नरेश
57. नरेश
58. नरेश
59. नरेश
60. नरेश
61. नरेश
62. नरेश
63. नरेश
64. नरेश
65. नरेश
66. नरेश
67. नरेश
68. नरेश
69. नरेश
70. नरेश
71. नरेश
72. नरेश
73. नरेश
74. नरेश
75. नरेश
76. नरेश
77. नरेश
78. नरेश
79. नरेश
80. नरेश
81. नरेश
82. नरेश
83. नरेश
84. नरेश
85. नरेश
86. नरेश
87. नरेश
88. नरेश
89. नरेश
90. नरेश
91. नरेश
92. नरेश
93. नरेश
94. नरेश
95. नरेश
96. नरेश
97. नरेश
98. नरेश
99. नरेश
100. नरेश

19 विधियां द्वाभ्यामत्र नाटकमसह ३।
तस्मिन्नाध्याये पूर्वमेवापि, अधस्तमक ।
प्रत्यक्षम् सन्ध्या

20 तत्रैव पृ. 7।

12 पञ्चशावकः कथितस्तत्र अर्धेनरीश्वर
बौद्धस्या संस्कृत सौम्ये भाषिके
बनाममिले सं. १७१५ पृ. ३

122 तत्रैव पृ. 4

123 तत्रैव पृ. 50

124 तत्रैव पृ. 12

125 तत्रैव पृ. 18

126 तत्रैव पृ. 31

127 तत्रैव पृ. 13

128 तत्रैव पृ. 3

129 तत्रैव पृ. 52

130 तत्रैव पृ. 52

131 तत्रैव पृ. 52

132 तत्रैव पृ. 18

133 तत्रैव पृ. 34

134 तत्रैव पृ. 14

135 तत्रैव पृ. 50

136 तत्रैव पृ. 19

137 तत्रैव पृ. 10

138 तत्रैव पृ. 20

39 तत्रैव पृ. 71

40 तत्रैव पृ. 21

41 तत्रैव पृ. 22

42 तत्रैव पृ. 40

43 तत्रैव पृ. 43

44 तत्रैव पृ. 46

45 तत्रैव पृ. 45

46 तत्रैव पृ. 33

47 तत्रैव पृ. 45

48 तत्रैव पृ. 45

149 तत्रैव पृ. 45

150 तत्रैव पृ. 46

151 तत्रैव पृ. 46

152 तत्रैव पृ. 50

153 तत्रैव पृ. 50

54 तत्रैव पृ. 36

155 तत्रैव पृ. 30

56 तत्रैव पृ. 3

57 तत्रैव पृ. 48

58 तत्रैव पृ. 52

159 तत्रैव पृ. 41

60 तत्रैव पृ. 59

161 तत्रैव पृ. 43

62 तत्रैव पृ. 45

63 तत्रैव पृ. 45

164 तत्रैव पृ. 45

65 तत्रैव पृ. 45

66 तत्रैव पृ. 45

67 तत्रैव पृ. 3

68 विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 1
पृ. 3

69 तत्रैव पृ. 3

70 तत्रैव पृ. 3

71 तत्रैव पृ. 3

72 तत्रैव पृ. 3

73 तत्रैव पृ. 3

74 तत्रैव पृ. 3

75 तत्रैव पृ. 3

76 तत्रैव पृ. 3

77 तत्रैव पृ. 3

78 तत्रैव पृ. 3

79 तत्रैव पृ. 3

199 तत्रैव पृ. 183

160 विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 2
पृ. 92-93

161 विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 1
पृ. 124

162 तत्रैव पृ. 140

163 तत्रैव पृ. 158-159

164 तत्रैव पृ. 156

165 तत्रैव पृ. 148

166 तत्रैव पृ. 148

167 तत्रैव पृ. 148

168 तत्रैव पृ. 148

169 तत्रैव पृ. 148

170 तत्रैव पृ. 148

171 तत्रैव पृ. 148

172 तत्रैव पृ. 148

173 तत्रैव पृ. 148

174 तत्रैव पृ. 148

175 तत्रैव पृ. 148

विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 1
पृ. 3

176 तत्रैव पृ. 148

177 तत्रैव पृ. 148

178 तत्रैव पृ. 148

179 तत्रैव पृ. 148

180 तत्रैव पृ. 148-149

181 तत्रैव पृ. 486

182 तत्रैव पृ. 504

183 तत्रैव पृ. 486

184 तत्रैव पृ. 548

185 विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 2
पृ. 35

186 तत्रैव पृ. 37

206 तत्रैव पृ. 80

207 तत्रैव पृ. 81

208 तत्रैव पृ. 82

209 तत्रैव पृ. 83

210 तत्रैव पृ. 84

211 तत्रैव पृ. 265

212 तत्रैव पृ. 269

213 तत्रैव पृ. 285

214 तत्रैव पृ. 285

215 तत्रैव पृ. 287

216 तत्रैव पृ. 298

217 तत्रैव पृ. 304

218 तत्रैव पृ. 305

219 तत्रैव पृ. 326

220 तत्रैव पृ. 326

221 तत्रैव पृ. 347

222 तत्रैव पृ. 347

223 तत्रैव पृ. 347

224 विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग 1
पृ. 3

225 तत्रैव पृ. 48

226 तत्रैव पृ. 40

227 तत्रैव पृ. 34

228 तत्रैव पृ. 23-40

229 तत्रैव पृ. 34

230 तत्रैव पृ. 75

231 तत्रैव पृ. 146

232 तत्रैव पृ. 25

233 तत्रैव पृ. 147

234 तत्रैव पृ. 87

235 तत्रैव पृ. 60

236 तत्रैव पृ. 82

237. तर्क. पृ. 29
 238. तर्क. पृ. 12
 239. तर्क. पृ. 12
 240. तर्क. पृ. 40
 241. तर्क. पृ. 75
 242. तर्क. पृ. 75
 243. तर्क. पृ. 11
 244. तर्क. पृ. 1. 8
 245. तर्क. पृ. 117
 246. तर्क. पृ. 117
 247. तर्क. पृ. 40
 248. तर्क. पृ. 83
 249. तर्क. पृ. 35-213
 250. तर्क. पृ. 35
 251. तर्क. पृ. 1.
 252. तर्क. पृ. 1.
 253. तर्क. पृ. 1.
 254. तर्क. पृ. 35
 255. तर्क. पृ. 35
 256. तर्क. पृ. 40
 257. तर्क. पृ. 71
 258. तर्क. पृ. 101
 259. तर्क. पृ. 47
 260. तर्क. पृ. 22.
 261. विद्यापति गीतानन्द पृ. 421
 262. विद्यापति श्री कृष्णानन्द पृ. 32
 263. विद्यापति विद्यापति
 264. सङ्कल्प 485
 265. वि. वि. 1 पृ. 66
 266. वि. वि. 3 पृ. 62

267. वि. वि. 2) पृ. 62
 268. वि. वि. 3 पृ. 1. 4
 269. वि. वि. 15 पृ. 61
 270. वि. वि. 6 पृ. 71
 271. वि. वि. 27 पृ. 71
 272. वि. वि. 18 पृ. 71
 273. वि. वि. 27 पृ. 71
 274. वि. वि. 15 पृ. 61
 275. वि. वि. 4 पृ. 62
 276. वि. वि. 28 पृ. 71
 277. वि. वि. 4 पृ. 71
 278. वि. वि. 25 पृ. 71
 279. वि. वि. 29 पृ. 71

80. Folklore, Magic and legends of
 81. पृ. 1. 4
 82. पृ. 1. 4
 83. पृ. 1. 4
 84. पृ. 1. 4
 85. पृ. 1. 4
 86. पृ. 1. 4
 87. पृ. 1. 4
 88. पृ. 1. 4
 89. पृ. 1. 4
 90. पृ. 1. 4
 91. पृ. 1. 4
 92. पृ. 1. 4
 93. पृ. 1. 4
 94. पृ. 1. 4
 95. पृ. 1. 4
 96. पृ. 1. 4
 97. पृ. 1. 4
 98. पृ. 1. 4
 99. पृ. 1. 4
 100. पृ. 1. 4

तृतीय अध्याय

मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन

मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन

मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन

मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन

मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन
 मैथिल परम्परा प्रभाव ओ तदन्तर्गत परिवर्तन

[illegible]

[illegible][illegible][illegible]

अदिर्घा शिष्ये बन्नायेन कृतमनि कृषि ।^{५५५}

[illegible]

पञ्चमं— शरीर पर कस्तुरी आदिक विलेपन करन ।

गन्धर्वकित् आत्त आं फुत्तन्त बन्धवन् ।

[illegible]

६३. संविधानांक वेश भूषा परगणन नष्टक्यो शस्यकनो

१. अथर्ववेद आत्तमनिक शब्दस्य हृत्क शब्दः ननु सार्धं शीतुन कथितं ज्ञेयम्
 २. अथर्ववेदस्य अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ३. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ४. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ५. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ६. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ७. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ८. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 ९. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः
 १०. अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः अथर्वशब्दस्य अर्थः

[illegible]

संक्रमणकालीन अवस्था में निम्नलिखित कृषि क्षेत्रों में निम्नलिखित प्रकार के परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

19. बर्णन (अकादमी) पृ. 12

20. तरेव. पृ. 64

21. तरेव. पृ. 22

22. तरेव. पृ. 32

23. तरेव. पृ. 22-68

24. तरेव. पृ. 64

25. तरेव. पृ. 35

26. तरेव. पृ. 22-68

27. तरेव. पृ. 25

28. तरेव. पृ. 64

129. तरेव. पृ. 32-64

130. तरेव. पृ. 64

131. तरेव. पृ. 62-64

132. तरेव. पृ. 2

133. तरेव. पृ. 72

34. तरेव. पृ. 64

135. रामचरितमानस श्रीरामस गो-कल्प
पुस्तकालय

36. तरेव. पृ. 22

37. तरेव. पृ. 32

38. तरेव. पृ. 64

39. तरेव. पृ. 64

40. तरेव. पृ. 68

41. तरेव. पृ. 64

142. तरेव. पृ. 22

143. तरेव. पृ. 74

44. वपारिताकर सफल सुगन्धितक संस्करण
पृ. 4

45. बर्णन अकादमी पृ. 35

46. तरेव. पृ. 64

47. तरेव. पृ. 67

48. तरेव. पृ. 37

149. तरेव. पृ. 60

150. तरेव. पृ. 57

151. तरेव. पृ. 77

+

152. तरेव. पृ. 63

54. तरेव. पृ. 32

55. तरेव. पृ. 32

56. तरेव. पृ. 55

57. तरेव. पृ. 23

58. तरेव. पृ. 27

59. तरेव. पृ. 40

60. तरेव. पृ. 57

61. तरेव. पृ. 103

62. तरेव. पृ. 45

63. तरेव. पृ. 45

64. तरेव. पृ. 67

65. तरेव. पृ. 67

66. तरेव. पृ. 25

67. तरेव. पृ. 27

68. तरेव. पृ. 79

69. तरेव. पृ. 30

70. तरेव. पृ. 64

71. तरेव.

72. तरेव. पृ. 109

173. तरेव. पृ. 34

+

175. तरेव. पृ. 81

76. तरेव. पृ. 29

177. तरेव. पृ. 64

78. तरेव. पृ. 40

179. तरेव. पृ. 40

80. तरेव. पृ. 82

8. तरेव. पृ. 30

82. तरेव. पृ. 87

183. तरेव. पृ. 81

184. तरेव. पृ. 46

185. तरेव. पृ. 35

186. तरेव. पृ. 40

187. तरेव. पृ. 23

88. तरेव. पृ. 25

+

90. तरेव. पृ. 45

191. तरेव. पृ. 46

192. तरेव. पृ. 87

193. तरेव. पृ. 23

194. तरेव. पृ. 24

195. तरेव. पृ. 36

196. तरेव. पृ. 34

97. तरेव. पृ. 34

98. तरेव. पृ. 35

199. तरेव. पृ. 68

200. तरेव. पृ. 8

201. तरेव. पृ. 45

202. तरेव. पृ. 38

203. तरेव. पृ. 23

204. तरेव. पृ. 25

205. तरेव. पृ. 24

206. तरेव. पृ. 25

207. तरेव. पृ. 1

208. तरेव. पृ. 32

209. बर्णन अकादमी पृ. 3

2. 2. बर्णन अकादमी पृ. 31-46

211. तरेव. पृ. 49

212. तरेव. पृ. 42-46

213. तरेव. पृ. 45-85

214. तरेव. पृ. 30-83

215. तरेव. पृ. 31-88

■

[illegible]

यं तत्तत् पश्यन्त्येते तेषां गतिरपि वर्णितव्यवशात् अत्रापि श्रवणमत्र
चयान्तक इच्छितवत्तन्ना। अत्रापि इच्छितव्यं यत्किं तर्हि प्रमुखं अस्ति।

४. आर्य समाज के संस्थापक

२३। नाट्यक प्रबंधक मॉडल

म) अष्ट-संग्रहा खणः

च) वंश भुषण प्रसाधन सामग्रीक डिस्ट्रिब्यूट रल्लल

ପାଠ୍ୟ କ୍ରମର ପ୍ରାଥମିକ	ପ୍ରାଥମିକ ପାଠ୍ୟ କ୍ରମର ପ୍ରାଥମିକ ପାଠ୍ୟ କ୍ରମର ପ୍ରାଥମିକ	ପ୍ରାଥମିକ
ପ୍ରାଥମିକ ପାଠ୍ୟ କ୍ରମର ପ୍ରାଥମିକ	ପ୍ରାଥମିକ ପାଠ୍ୟ କ୍ରମର ପ୍ରାଥମିକ	ପ୍ରାଥମିକ

क ३ गड ५ कण्ड ५ का नंड नवन कडन पण्डकानंन निधनी मागित्यम
सकते किमुपनि कन क ग ड ग ड ग ड कय डुंगः शमान नय
बोद्धम सज्जनै ये पद्दिहि उत्तम रथे जीर ।'

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

निष्पन्नं तनुं कस्य वसनं धिराजि मित्रं सिन्दूरं ददौ लाञ्छनं श्रुत्वा ।

संतं भृगुं ददु भोक्तव्यं ज्ञानं । शक्तिं विद्धि दत्तं त्विह पणं क्व ।

चिकुरं मयूरी मण्डपं फलमप्यस्य । ज्येष्ठेति याज्ञिकं त्वन्वितं तु हारः ।

न्या किंकिनि कर वत जाल मणि गिण धरण कंदल डाल

1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766 2767 2768 2769 2770 2771 2772 2773 2774 2775 2776 2777 2778 2779 2780 2781 2782 2783 2784 2785 2786 2787 2788 2789 2790 2791 2792 2793 2794 2795 2796 2797 2798 2799 2800 2801 2802 2803 2804 2805 2806 2807 2808 2809 2810 2811 2812 2813 2814 2815

$$-3.5 \leq \ln \frac{1}{\rho} \leq 3.5 \quad \text{and} \quad -1.5 \leq \ln \frac{1}{\rho} \leq 1.5$$

अथवा अर्थात् ईश्वरी साहित्यमे वर्णित सेशाया चम

पक्ष्यकालीन घातिलो माहिन्द्रमे वर्णित वंशधृक् प्रसाधन

१. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 २. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ३. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ४. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ५. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ६. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ७. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ८. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 ९. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।
 १०. प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत २००० विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

[illegible][illegible]

माध्यमकार्तीय विज्ञान साहित्य संशोधन संस्थान, प्रयाग/105

पूजन विन्दु पूजन मंत्र चो । अथवा एक रहन नहि धो ।
 नृपुत्र शब्द सुनि काने करन शायत परमने ।
 नयन कोकर नहि मुख रति धाने । अतः तिलक शाय सर्वान्तर कर ।

तथा १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

॥ १२ ॥

काकरो ओतो पदो सत्त । तिमहुत गेव भरन अनुप ।
 पञ्च भरन तन तरुको रूप एतव तरुतुत ठसुत अनुप ।

॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

सोहा प्रमुख धूमिका रखेछ

अर्द्धनारीश्वर सपान- अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 मण्डित काने पद चरण । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।

जय जय शंकर जय त्रिपुरारि जय अंध मुक्त जयति जय नागे
 अथ भवत तनु आभा नैरा अधि पटोर अथ वृक्ष होत
 अथ बाग आथ भूमि किनास अथ प्लिक अथ नगवासा ।
 आथ सिन्दूर बिन्दु अथ विभूति । अथ हाइमल अथ पतपतौ
 पने कलि शत विधस्त भाने । दुह कए कलन एक पाने ।

गोविन्द कविक एक गोट अर्धनारीश्वर गौतम गौरीक कनकचन नयन, धौगम
 नार तथा पदोत्तम चन्द्रक वर्णन भेल अछि-

हम द्विर्गति दुह तनु छिरि आथ नर अथ नागे
 आथ उजर आथ काजर निरुध भोगन धाने ।
 आथ फणिमय आथ मणिमय । इतव देजर इर
 आथ आचम्बर अथ पदोत्तम विभूति दुहु उडिगम ।

रामदासक अर्द्धनारीश्वर वर्णन गौरीक कनकचन नयन, धौगम

आथ देह रक्तचम धासे आथ कनकचम बलिन विकाम
 सिन्दूर कन्दु आथ अभिमाये आथ विराज पुजग विमयाये ।

कनक च्यानन्दक अर्द्धनारीश्वर वर्णन- अथ तिलक गौरीक सिन्दूर
 तिलक धौगमधन गौरीक अर्द्धनारीश्वर वर्णन गौरीक अर्द्धनारीश्वर वर्णन
 अथ गौरीक कनकचम ओ गौरीक ललित अम्बरक वर्णन भेल अछि-

आथ मौलि कटाबुट विकर अति आथ शिखर अभिराम
 आथ भाल सिन्दूर बिन्दु शोधित आथ तिलक विमयाये
 आथ कनकचम अथ भवन नर आथ अथ अंगारो ।
 आथ हृदय इत पुकृतार्जित आथ विराजित बाग ।
 पटल वर्णन अथ सुनिमित्त अथिअ विषम विषमाने ।
 मंगल सहित मंगलक पुरा करण जयानन्द धाने ।

अर्द्धनारीश्वर वर्णन- अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 मण्डित काने पद चरण । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।
 अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने । अर्द्धनारीश्वर शिव शक्ति पद चरण काने ।

गौरी आचको सङ्ग हिलव नर गौरीमचार ।
 नाथ अर्द्ध अम्बरक केशरि धौगमि अर्द्ध उडाथ ।
 रौतन भूत पतगम नाथ मलि मलि भमय चदाथ ।
 सिन्दूर लाल जसक पनि मुकुता बाध बाग दानकाथ ।
 पुष्टमान उर जाल रतिन दिस बाधकल फलगत ।

मंगलपणितपाञ्चावक गौरी दिगम्बर कटकक अम्बरममे अर्द्धनारीश्वरक चन्दन
 कनक पल अछि । एतथे तिलक सिन्दूर ओ फुलमानक उल्लेख भेल अछि-

अथ मौलि मण्डन फलमाले । आथ नगद्विज सुरसरि धारे ।
 अथ अर्द्ध तिलक नव उन्दु । आथ साताआन सिन्दूर बिन्दु ।

अर्द्धनारीश्वरक पदवि कनकचम नयन, धौगम, अर्द्धनारीश्वर वर्णन
 अछि एतथे गौरीक शिखर वस्त्राभूषण उमाधनक उल्लेख भेल अछि-

रक्त कनक एत ईश गौरि संग एकहि कलवर कामे पुर असे
 शिव सुन्दरि धर कुसुम मान्य उन्दु सिन्दूर बिन्दु सांठ मर मोठ

[illegible]

श्री हावाक प्रयोग देखून कइल हामरी सम्बन्ध अन्य शब्दावलोकन अछि.

नानिग्रहः ॥१॥ नानिग्रहः ॥१॥ नानिग्रहः ॥१॥ नानिग्रहः ॥१॥ नानिग्रहः ॥१॥
 मोक्षः ॥२॥ मोक्षः ॥२॥ मोक्षः ॥२॥ मोक्षः ॥२॥ मोक्षः ॥२॥
 गन्धर्वकान्ताः ॥३॥ गन्धर्वकान्ताः ॥३॥ गन्धर्वकान्ताः ॥३॥ गन्धर्वकान्ताः ॥३॥ गन्धर्वकान्ताः ॥३॥
 गन्धर्वकान्ताः ॥४॥ गन्धर्वकान्ताः ॥४॥ गन्धर्वकान्ताः ॥४॥ गन्धर्वकान्ताः ॥४॥ गन्धर्वकान्ताः ॥४॥

मणिमयहास एतिमप्यत्र हा वा दुर्घटि ॥ ४ ॥ १०० माल प्रत्येक ॥ १०० ॥
मणि- वाग कल के मणिम माल ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

संस्कृत-नाम 'पेशन' व 'पेश' इति रूपेण ह्येव गुणहार-विधिप्रयोगश्च पाठे स्मृतः ।
इत्येव द्वितीयोऽपि संज्ञकः ।

[illegible][illegible][illegible]

मध्यकालीन जयला शासन आ सतप्रणीहतास ह्दकर दुधेशन स्वयं
सिद्धीसकई लोकास सन निम्नतर बनिन न गकई अछिइसाधर सोनन
प्रसाधर असाधर प्रसाधर अ कप्रान पलायन बयन प्रसाधन धनु प्रसाधन
पुत्र प्रसाधन असाधर असाधर असाधर असाधर असाधर असाधर असाधर

[illegible][illegible]

राज्य गान प्रकाश विभाग: राज्य अभिलेखागार ऑडियथल संस्थागत संस्थागत
विभाग: राज्य गान प्रकाश विभाग: राज्य अभिलेखागार ऑडियथल संस्थागत संस्थागत
राज्य गान प्रकाश विभाग: राज्य अभिलेखागार ऑडियथल संस्थागत संस्थागत

आन्ध्रप्रदेश (मि०प०, १३४) केज आन्ध्रप्रदेश अधर सुरुवायन, मि०प० ६४

[illegible]

क्रमांक : _____ दिनांक : _____

पत्राचार : _____ विभागाध्यक्ष, _____

अनकः ३ नरु कान्ता ५३०० धन ५१२ सिद्धावति न्यायलम्प १२
इच्छक अनकः ५३०० धन ५१२ १९९०

चित्रक विद्यापति का काल १५५० ई. में चित्रक गङ्गात नदी प्रयाग में गङ्गा में गिरा।

नवद्वारिका : २ : पान : २१ सिद्धिनुवायेंहमन्नाम । तारा : २ : अक्षक : प्रथम
फलक ऊर्ध्व ।

उद्देश - इस प्रकार तदप्रत्यय रूप कौवाचि संहो विद्यापतिक उद्देशे भट्टल अति है।

[illegible]

[illegible]

किंगेट कंगू करक कोन्पु कनक गनी कनकाय्यर इतिहस चरित्र २०६५२२
स्वरूपक देखि पढ़ैत-

इन्द्र नील पवि सविमल अंग । सितमुख लांचन पहकल रंग ॥
हार किरीट शंभु कंगूर । कटकादिक जाँघ भारिपूर ॥
श्रीवत्सन्वित कौमुद्य राज । सनकादिक स्तुति करवि सम्राज ॥
शंख गण्डहाद गदा जलजाल । कनक रत्नी कनकाय्यर गार ॥'

एहिना रामक चरित्रक अवसर पर बे हुनक श्रमार्थ कर्णन पैल अछि रहल
जयराज कंगूर ॥ १ ॥ चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००

नीलाचल रत्न श्यामल राज । चारि सुन्दर कनकाय्यर प्राज ।
अस्म सलज पर मुद्रा रम । कुण्डल भण्डित शीषा अमल ।
महस सूर सन मुखवि प्रकाश । कुटिल अम्बक मुपकुट भन पास ।
मंथरघाङ्गे गदा बेलजरी । बलपासी सिमरमुख अवदास ।
श्री शोचन्त हार रमणीय । कंगूर नूपुरगण कपर्दीय ॥'

मौलिक स्वरूपक उपायन कवि रामक इतिहस चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
तथा विशालनाक रंखाकन कथननि अछि-

कुटिल मुखिकन कोन विराज । अंग अलङ्कृत शशिपल ॥
मोहि हिनक अंगरागक सूत्रा छेहो अंग अलङ्कृतसँ सजित हाडक
न भयनमं जगद्गणक रत्न आभरण जगत्तम शब्दक ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
कि काम हार अचर्या आक ॥ अलङ्कृतो को महि रंग ॥
मोहक हेतु जोर ओ घमन शब्द एहि पाँतोमे देखल जा सकैत-
पेलनि तिगुन को जो जोर ॥ अपन चरित्र कथननि चरित्र ॥

चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
विशालनाक रंखाकन कथननि अछि-

चरण लम्बो देव दन कव ॥ कोषी एक मालि अति नीर ॥
किकिणि-नूपु निजित मूनि ॥ भूधरपति देल महि विचार ॥
प्रत्यमूल मृष्टि देल ॥ १ ॥ अ ओठी कङ्कष प्रभु शोध ॥
राज्य भन मुकुटासी चपल मन्दारो जवण गोटक ॥
शक्ति सँ मुह धूप पोष ॥ अमली निम रह्यो माँठ ॥

परतक जय कर मुद्राजय विजयल अलङ्कृत लगल ॥
रत्न किंगेटाकृत अङ्क ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००

२० परतक चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
कोनकाय्यर ओ कृष्ण महाकाव्यमे मंडा देखि पढ़ैत यथा-

जगत्तम लक्ष्मण अचर्या कथन पुनि स्नात
शक्ति पीत कोलाशुक कए परिधान, कस्तूरी करमीर तिलक अभिषेक
धारण कए कुण्डल अङ्कृत कोष, लक्ष्मण कनकमय रत्नजटित सभ दिव्य
कण्ठहार विदुष कोषी गौपेद इन्द्रनील मुक्ता मानिक वैद्य
पुष्कराय गङ्गाधर खचित विराट एङ्कृत पुनि जयपतिप्रकाश अम्बाम
नाचान्ति रत्न मुगमल कसरि रङ्ग ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००

मोहिलायादम प्रकाशन हेमवती जिलाय भुजनाक अचर्याकृत चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
प्रमाणन सान्द्राक इन्द्राज पैल अछि-

मोह कृष्ण को पेस्ट लेखणहार, मे राखै नौ इ मतिमल
मोता सङ्कत मुह भवकाल, के एकरा लम बैस यार ।
मोहक कबेक हाँस जहाँ कृष्णक श्रेयाम मुह तकक मोह ।
रक्षि देखि मुहको मोचना पैल, बापक गल्ली पूरे माँठ ।
मोहकवोसी विह ई देख, चुड़की बुल बुल राखै माँठ
सङ्कत कल एको नहि मर्न, लटकि पटक को रोओ नाथ ॥

चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
विशालनाक रंखाकन कथननि अछि-
१००००० ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००
अछि अने कोषी पैल अछि-

मायहु सँ यदि पै सतमाय सङ्कत सुता ममरा छ करीय
दे तनु केन फुलन छद कङ्कष कर लै मिरकस समझारि ॥

प्रथम सर्गमे माता द्वारा शिशुक परिपालनक क्रममे ओकर आ कोषी शब्दक
प्रकारमे भेल अछि-

पहल इपर मनमूत्र सौ ओकर कोषी एम
देखि हाँसि मुखे मगल मानि कथन धनि भाग ॥

चरित्र २०६५२२ ॥ १ ॥ १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००

अति- ॥१॥ चत्कलकमि जटी कनक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
क्यों न बटो अति ॥१॥

आदि- ॥१॥ अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
अति-

सौताकेँ बुझि धर्मक बटो । हुनक हनु सिद्धांतक पटी ॥
दलनि नव बसवाय मनोहर । छवें करिषि लय धमक पराहर ॥
हरमित हृदय विदहक जाय । नव नव आहूँ सारी सख ॥
आगरी ककना टिकुली भयना । निव नव कोकभि मुठि सुनवा
टकुरी अलता गहो हंग । साबुन सपनी सिन्दुरधरा ।
धनवरही पुनि रह विरंक । रत्न प्रसिद्ध मुषण प्रति ओंक ॥
नित पक्षितय निहारिषि सुसति । पानु विरचि सुवर्णक मृति ॥१॥

॥१॥ ॥१॥ अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
प्रयोग भेल अति-

टकुरी धनका सिद्धिषि बुनिया । ऐषण पुतर कुटिया पिसिमा ॥१॥
आंध्र छोयो बूझ बाकल । बलि भक्त सरकारी सदन ॥१॥

पैला द्वाय गण धर्मक अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
निकरि नव सखक वर्णन रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
वनल मव कानक । विरंक धनी सारी । अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
कामनि हागे । सावध विदहक जवमन । अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
कराई वि- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
छल । ने पछी नई काम कतरु छल ॥१॥

रूपमे वरपूषा प्रसाधन चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
रूपमे वरपूषा प्रसाधन चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

प्रथम सुखलई स्नान करीमनि । अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
लागल बलिषे पानक मनोर । पुनि जवमन आ सिन्दुर रीरी ॥१॥

आठम सर्गमे रोष श्री लक्ष्मणक शक्तपूर प्रपन्न विवरण अति । एहि क्रममे कवि
एहिठामक पुरुषवर्गक वंश भूषक सविशेष वर्णन करयनि अति-

हुनक मीय पर स्वच्छ पाग पैचक छवि छत्रय
जनु शिवमस्तक स्फुट कर पर चन्द्र विशाख
पडिरन चित्त छ स्वच्छ मरल मंजरी छौंके अंग्रेज

एहि रहल अति सकल सम्पदा लक्षण सातेक
ककरी धात्री लाल पालमे सखीहेक बानस ।
अति प्रसन्न मन प्रभु सकल अति ससिम्ह आनन ॥१॥

चित्र- ॥१॥ अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

अपनिह सन्दुक पैती पटी परम रत्न धनिहा
साध साही जाइगी सही बूझी विविध प्रकार
मानक पाक पानि पलङ्गक रसम मृदुल निवार
हरि मृदु नखपलक धनीहर सिद्धन साहाय
सोनक खुरखिया श्री महाता लागल अति अंग्रेज
एक एक कर कम् हनु पुनि बलिष बलिष कहार ॥१॥

॥१॥ ॥१॥ अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

किहु काम टकुरी सख नै मझपवत गहो छली ।
कोखन करीटा कटि पुनि मीनी नवीन बुनै छली ॥१॥
रह विरंक नृमा लहटी नवभूषण पहिराव
नोक विरुट हपट लय शक्ति क निनदिन गुलाय ॥१॥
पामर इह स्वारथ साहायमे विविध रत्नपणि दलान ।
निराख अनुपम पुत्रवध मुख भूपक हृदय कुडेलनि ॥१॥
छोल दुहु दिख माघ महीत काहि ।
नव कलस सुवर्णनि गारि छहि ॥१॥
उडुपन कुट्या विविध रत्नमम खचित सुहाइछ ।
सविचारिके पहिरि पानु छिपतय पर जाइछ ॥१॥

अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
अनेक रत्न चित्रपत्तं अति- ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

नवन रत्न मुपन अंग्रेज सख स्वरूपे खदल परिधाने देखु रूपी अनुर
मुकुन्ति कलिकामे धूमके दिख राजे अनुमति अतुरग गछ ई साज साजे
मुकुन्ति पुनि छत्र कुंजमे पुष पानु, सहर सुपग पाठे चामरा दिख आनु
॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

काशीनाम मिश्र मधुपद गद्यांशः पृष्ठ २०० ।
 अति एत विरक्त शरीरम् यत् पालयति यत्कचः ।
 वृत्तान्तादयः मधुपदम् वन्दन् ।
 वृत्तान्तादयः मधुपदम् वन्दन् ।
 वृत्तान्तादयः मधुपदम् वन्दन् ।

आधे पहर रातिमै प्रातै गाधि छलाह पहर जे दैत ।
 निन्दक धेने कमौ नाहि निन्दक कुन जन को खण्ड मुने ।
 बालि कुराई नयनि नकर धुत काम छंडा पागलि बुझि खेर ।
 चौकि चिहृकि ग्रीवा मे, साटफिकंड दैत कहनक भणै ।
 सहां नूद कुदानुस मानुस दुःखक पत्र कनकजक डाम् ।
 धनुषीगात्र अपात्र नरासै चलला कहि मुंठा माष ।

प्रातःपाणिना जल्य चर्चयेत् ।
 अन्य न पालयति विरक्त शरीरम् ।
 उत्तमार्थं कदाऽपि वचनं प्रमाणतः प्रयुज्यते ।

हाफो पर हाफो करैत आ जन जन दैत अद्वैतमै मंड ।
 अञ्चलमै नखकत डौल ओ घोषट पटसै विप्रत आ ।
 एच देखि क्या भुजि जैत, ते दैत किनु चक परि करि ।
 धार हुका भुंछ ओक क्या करइछ निज इतिविक विहार ।
 रति पौंसि आठन गिर तैअं अठन पर क्या दालि बहार ।
 ननोदक रिह करबामै पहिनेहैं वसन विभूषण म्छन सभारि ॥
 आनि कुअरसै नुपुर बकरो दुती गौछ पुरस्कृत भैस ।
 क्या कहि रहलि सखंसै भुलि मिनि गहुक सबल कोन खोनि ।

एकटा पदम 'नाक' कहारनक चित्रमै 'उठति' पदक प्रयोग भेल अछि ।

अयो कोरक सन कोमल कोरक कलहति शिशुक छोर पट चुमि
 छेपि उठति दुतागि माहि वचकनि दूध पिअबै अछि भूमि ॥

नायिका विरक्त शरीर मधुपद मधुपद शिखरमे कहारन हार ओ
 भुंगारहात आदि पारम्परिक शब्दक उत्पत्ति देखि प्रष्टै-

स्वयं मानुसक शनिका, पाणीमे मधुपद चाणीवास
 मधिकाशिक युगल सभलंकृत, भुति युग भुति सन जे अवधार
 फितवनी, माधव निकटहैं शिवलीक दृश्य होनु अत धार
 बहनि छोरगबहुरै दषा, कतऽ गेलो प्राणक आधार ।
 मन कुतम्भ रसाई भूतल कलधर चन्दुक प्राणसमान ,
 चफला-भुति सकुन्ध भुति शाकुन्ध गणनचित हंसक मान ।
 इन्दुखध भुक्तौ कन्दर्प-कलाक कुटी, वक उज्ज्वल हार ।
 बरसामै बहि बरसाम सुन्दरी कहाँ प्रणक आधार ।
 धरु चन्द्रिख छोरै चर्चित चणचणक चित्तौ चणचैत
 हुनसित हंस म्छनसै छिष हरि खज्जन नयनहुँ को उडनैत ।
 समलंकृत नृपति हारमै हस्त सविश कला देखनैत
 शरदहुँ सुन्दर अकम्भक, मधुपद भुतिक छवि जैन देखैत ।

एकटा पदमे पाणवली पवनजलक मधुपद पाणीमे दुकूल माला वन्दन यथा
 वध भूषण कहुँ किराट कंयूर आदि मधुपद प्रमाणक शब्दावलीक उत्पत्ति भेल
 अछि-

लालनलम विराल नयनवृत्त, अङ्गनाकुति करुण घन लम्ब
 रक्षि दुकूल फूल माला, जदम चर्चित शिखरन अलम्ब
 सब भुंगारौ सारिमत सस्मित, मुखकमल विपलाकुति धेष
 कनक-कल-कहुँ-किरीट, कंयूर कलित कौकल नपैत
 विहग वृन्द-चन्द्रित अनङ्ग कसुमपदक सेवा ब्रह्म करैत ।

अतः पाणवली शिखरनि नयन मधुपद अथवा कति धातु रति समय
 हार आदि आपूर्णक उत्पत्ति करन अछि-

यक विभूषित भुति समलंकृत अर्द्धक रूप जगदम्ब ।
 भाव कतर सुनि रहबै छै शशि अर्द्धक अवलम्ब ॥
 कलक धरि भुज अनुकम्पा अत हार अर्द्ध छै दैत
 इच्छि सुनारी-भुति सोनारिनि छै हम देवि नृपद ।

एतौ नौआडनिक शब्द मधुपदक पाणवली ओ भारत शब्दक प्रयोग भेल

गगनाङ्गना कर सहन में तप्य रहनी अर्चि ।
 कर्ण चान नख तर्हि किरणधामि मे दस औतल पहिने ।
 घोरि भिन्नी आनर प्रची भद्रे छह लम्बित ।
 सद्गुरु सैआदिन समान सकतहि सम्पन्न परित ॥

उत्प सगल शोकशोक करन अर्थिक अर्थ कोरुष्य छनि अन्तन उन्मान
 किरीट, कटक, कंयूर, कुण्डल घेतप्यार आदिक छल्लख देखि पदैछ-

पोताम्बर कर भुजिशणि आठनुबहु अपकथ है ।
 झौल्लुय कलित त्रिपङ्क चन्दनलिप्त अङ्ग बनबल्लम ।
 शोभित मोर पुच्छदूत रत्नकिरीट दैद धुति चालस ।
 रत्न कटक कंयूर कुण्डलें धुषित मान स्वल्प है ॥

मानन सगल शोकशोक दान पछाक धन औनकराज करुण प्रेमति ॥ भिन्नीक
 मविशेष उल्लेख एहि पदावलीमें द्रष्टव्य अछि-

करहत कांपल करसैं नहुँ नहुँ कुच्छल हून्छ कर्षल ।
 नहि यहि कहितहुँ किनहुँ नहि कहिय छूट कुण्डल लोल ।
 पुनि पङ्कजलाञ्जल चन्दन-कस्तुरी पङ्कज निखल ।
 अङ्ग अङ्गमें मल्लर किशोरिक निरल अह नख बड्ड
 रूप बयल्ल उगोल ताब पर, सगि मड केमरि दल
 केमरि मण्डित मुख सम्मुख कड रति-पण्डित चुमि लोल ॥
 शिथिलित लभित वसन कड वन यहि सुतेय्य ओर मन्दैक ।
 मदन दुन्दुयी नुपुर आघिल काज काज किछु गोल ॥
 किकिणि-ककन-मञ्जरीक धुनिकैल तुमुल अह अह ॥
 दुहुक दसान दुहुक दशनच्छद छत कौलक धरि पोष ॥
 स्वदसिकत गुमाज्वल विगलित कलपणन सेपल सिद्ध ।
 अचल पल छनि जिनिक पावि निधुवन कोटकम निन प्रभु ॥

जीवय सगल अथवात कृपापत्र प्रजान पुनि क गगन नभुल्लकैरि अन्तक
 मानन क्रम धर्म अन्तन ककम करुण नाम्बल उमन विधुवन कण्डा सुनी
 कामत आदिक उल्लेख भेल अछि-

करी बेमरी मान्य स्लाप कर, कवी मुचि जाम झल ।
 चन्दन ककुक्ष कम्पूरी छँ ककरो हाथ लगाय ॥

कवी लगील नाम्बल मान्य लड ईसइत मोह-विधाद ।
 नङ्ग विरयक उमन विधुवन लभित भवर्ष छन मोह ।
 ब्रह्मण्ड घट विषय कवी कण्डा सांपिक उपर राखि ।
 काज करित एक मानन कवी बल बल कान्दो घाखि ॥

ई कवि ई कवि नाम्बल मान्य लड ईसइत मोह-विधाद ।
 नङ्ग विरयक उमन विधुवन लभित भवर्ष छन मोह ।
 ब्रह्मण्ड घट विषय कवी कण्डा सांपिक उपर राखि ।
 काज करित एक मानन कवी बल बल कान्दो घाखि ॥

कमलामि धीत कुलक धारण । हारहोरे उपवील मोहमान ।
 धृष्य मे अह अह अह अह + धूल प्रफुल्लन वकुल तर लज्जित ।
 जौखि पडल पुनि बजल काटी । जयकुसुम अन् भुगक घाटी ।
 हंस धुकट शिर उपर चमकल । तैयार हार प्रसन्न गमकल
 एते अन्त प्रफुल्लन अमन । अक्षत मिलित लगीन्तनि ज्ञान ॥

कवि नाम्बल मान्य लड ईसइत मोह-विधाद ।
 नङ्ग विरयक उमन विधुवन लभित भवर्ष छन मोह ।
 ब्रह्मण्ड घट विषय कवी कण्डा सांपिक उपर राखि ।
 काज करित एक मानन कवी बल बल कान्दो घाखि ॥

स्वच्छ धारत कान नमका, छल जनी झनकैत रामे
 दोहन कापे छल कपडल दंड चापा काखि तर मे ।
 अह उवक छत आनन, धाल चर्विते चाक चन्दन
 उच्चरि छवि पकिलपाकेक संग मुखसै नद नदन ॥

गए कवणोक वचनम कवि रहन ओ सबही शब्दक प्रयोग करल अछि-

आमल पावनि मधुश्रावणी क आबधि लए भल ।
 मुन्दर खाड़ी रंग विरगल रहना सक अनुसार ॥

कवि नाम्बल मान्य लड ईसइत मोह-विधाद ।
 नङ्ग विरयक उमन विधुवन लभित भवर्ष छन मोह ।
 ब्रह्मण्ड घट विषय कवी कण्डा सांपिक उपर राखि ।
 काज करित एक मानन कवी बल बल कान्दो घाखि ॥

कनकौ मज्जर छवि निज भुगार मुख भण्डल मण्डन काध पुष्प पत्रा
 किमुक लए शीघ्र करिषि भिन्दुर हाँसि पत्रपत्र पट केसर सघ अङ्ग
 कस्य मुकांमल बृक्ष दिख अनूप शूक-पत्र मर्षी नुपु-धनि मल
 अन्तदन गुञ्जन मधुर बोध झंकल ॥

‘हिनक कवि छण्डकाव्यमे अप्परा पंचकंडी स्वरूप वर्णनमे वंशभूषा’
विज्ञानक समन्वित स्वरूप देखि पड़ेत-

तन्वी हंमलता अनु एषिव सुधास धन-कुनल घेणी सित-करन-समज
दोषकान नर्तन विनास वश स्वद सोकर सिद्ध, सुयष्टित फल, कषात
मृद्व लंछ ओकित भू-धनु कमलाक्षि दोषाया अंजन-रंजित, नाभय
धाष्टि पाग मणि-पुष्प मरसत रत्नाप विद्वम कानि सपरमम अघात
हयम विन्दु युत चिक्क कृष्ण मुणव अति विचित्र चन्दन परमोक्त वश
गुक्तमव अवमोदित कलाक मूलमोदितक आनन्द उदर दन्तुक्त
विचित्रो गति विन-
नूपुर मुखरित रंजित अंगित वाद परम प्रतुल्लव त्रिमुक्त मोदित रूप ।”

एति तरहँ एहि छण्डकाव्यमे गमिका सौन्दर्य चित्रकामक प्राचीन स्वरूप देखि
हिनक कवि छण्डकाव्यमे अप्परा पंचकंडी स्वरूप वर्णनमे वंशभूषा
विज्ञानक समन्वित स्वरूप देखि पड़ेत-
कानि अंगित वाद परम प्रतुल्लव त्रिमुक्त मोदित रूप ।”

गदगद कित अमरश अफि बहुनुल्य हान अकमे, हुनक जीवा पतिराव
पुरुष परिणामक उल्लंघन कवि बहुषक वर्णनमे संज्ञा कल्पनि अछि । नट
घनपाता धारण कयने जनाइ विभिन्न प्रकारक गान ओ मान्यरंगक वस्त्र धारण कयने
जनाइ नट-
मधु रत्नाङ्क दिव्य गंध सर्वत्र व्याप्त, पदु गन्धराह नह पद मन्त्र ।”

आपन मृदुद्वारा ममन के उत्तरा गुणक आन-
देखि पड़ेत वश-

कहुँ नृत्यावति परिधान-विधान समुद्र मञ्ज
कंचुकी शटिका अन्तर अघ परिधान रहत ॥
आंगिक आभूषण-कनक रजत मणि-रत्न रम्य ॥
रयामल सह घेणी-शोण चन्द्रिका चुरामणि ॥
नख रत्न छविद मुवि कर्णपुल कृष्णल कण्ठ ॥
नक्ष मणि मृद्व नखत प्रका होवक के गोल ॥
धिमहार बाहु केयूर मणि करुण अप्परा ॥
शोषो किंकिनि धुनि कटि लट, पद नूपुरक बाण ॥

नखक अंजन, अमरक रंजन, शूचि अंमराण
अभूषण चन्दन-अमर तगरक कुकुम पराण
अभिरमक धेश, परिवेश रूपकहु रमणोष
नन साधनी स्मिजत रसावश अभिनन्दनोष ।”

मधुमेह शीघ्र माहुरन मूस पंक्ति विज्ञानक अप्परा पंचकंडी स्वरूप वर्णनमे वंशभूषा
विज्ञानक समन्वित स्वरूप देखि पड़ेत-
नगितसट, शोनी आदि-

कंहव कपड़ा मूलवान हो हैं की प्रकार १ एगोन
बकर भोल काटिकै छांडन तकरा ॥
हैं हरे । मलमल होधु रेशमी कनी मदका ।
भट्टी, छपटी, नगितसट वः शोनी चटकी ।”

कंदारनख माधक लक्ष्मिभागनी छण्डकाव्यमे अरक स्थलपर वंशभूषा एगापदक
किछु परिभाषिक शब्दक निवेदन देखि पड़ेत वश-

मेचक पट्टासी फाति मोप मे स्वेन सनक सिनूरक रेखा छल ओकित
प्रोथ मे तरावलि-मनिक अनु चन्दहल अस्त्राएल छल
रत्नमंचनक चान-
वसुधक छेँछमे कन दमि सुबसा कर सौममयुत भेल ।”
बूझ मे गूढत बुद्धिमान पुनक किन्दी संयुक्त पण
सदम-रबरनित फुली गाल कंसत अघित अधगष्ट लाल
गोवा रे मणिमय हार बाल” कोषाम चाल नुका रखी”
रत्नमंचनक चान-
काजरक रख हैं परल गान टूटल छल गजक मणिक पाल
मों पौवन ओचर ओगल” जीवन आनन पर अंगराग लाल
महमह महमह कैंछि हिनकर ललाट पर हिनकर सन
सिनूरक बिन्दु चकमक करैत ।”

महमह कैंछि हिनकर ललाट पर हिनकर सन
सिनूरक बिन्दु चकमक करैत ।”
महमह कैंछि हिनकर ललाट पर हिनकर सन
सिनूरक बिन्दु चकमक करैत ।”

एतन्ना लक्ष्मण लक्ष्मणक वारन्तक रूपमे कविका आका नानार पत्र मिष्ट सिन्धु तथा प्रगोन्धल्लक्ष्मण मिष्टानक" छप्यु। खुलानि अलि जाहिने पुरुष समस्तक दुईगि शब्दक पवित्र भेटैत- दोष ओ फलैत-

सिन्दुर ढोप फुलेल सगार । मौंगिक मोलार्म सुसिद्धार ॥

हृदय हृदय ओं अधरुण कण्ठ । होमि होमि भावना से धिक्क लण्ठ ॥

पाटल पाटल तुल्य घटोत फाँटि रहैत न हाव भयन
 जानि झम्झव भूषण तंद्रित झम्झव सौंवे न तनय उमा
 बाहू तपार न धीर कने नत हाव । शिक्षा कहँ असंबला
 को कुलधामनि जाधि एत फुलसए कर धर्मत कुराखर 'मंत' ।
 तथा झपटल तोट मास झम्झे ध' फुलझाल
 जानि सीटि को धिआएल सारी जानि मरानो
 गोल गबैत चनेत चिना देखिनिहि ठि स्थानो
 अलमट्टे बोलि कहन, कुराखर दसन 'बाली' ॥

मधुपजीक मित्रभाव वरुण अ भुगालीन प्रसाद नर नरक भयन न भयन
 इसासन विद्यामक उत्तमं पल पल दिनक काएल प्रसाद नर नरक भयन
 एकटा प्रसाद नर नरक भयन काएल प्रसाद नर नरक भयन
 ऊधर नर राहुक प्रसाद नर नरक भयन काएल प्रसाद नर नरक भयन
 हम जेवै कुराखर सो गहि तं नर पति के कुराखर प्रसाद नर नरक भयन

गहरा अन्य गौरव नादिक कर्मवृत्तक तनय चट्टी नर नरक भयन
 अदिक उत्तमं पल अति-

पैर मे बाया बाला बट्टी भूतमे स्वदरो निगम
 केसनरी बंगालिन को छकै सुमै कुराखर कुराखर रहैक अकार ।
 कुराखर बट्टी मरुवा दिअ पीयो हुनू लण क हँ अर्पनीज ॥

एकरा गौरव आधुनिक नरक वरुण नरक भयन नरक भयन
 उत्तमं पल अति-

निदरी टा सौं चाहँ कहँ किहु कुराखर ने हटै हम
 बलसँ सपटी सधामे सटै हम ।
 टेढ़ टोपी कुराखर छादी भयल सँ डैटै हम ॥ कुराखर ॥

मधुपजीक परिचय प्रसाद नर नरक भयन नरक भयन
 योग्यमार्तिक चित्रांकन कथन नर अति कवि शिवा तपार प्रसाद प्रसाद
 निधामनक धर्मार्थपदक आ व्यंग्यमय वरुण कथन नर अति कवि शिवा तपार प्रसाद प्रसाद
 विद्यामक श्रुण प्रसाद उत्तमं पल अति एकटा प्रसाद प्रसाद
 गहरा प्रसाद व्यंग्य आ गौरव हुनू कुराखर अर्पनीज कवि चरना प्रसाद
 पल अति एहि कथनमे कवि अनेक गहरा सदा उत्तमं पल अति-

हंतीहँ हंतीहँ मे सम सम बकर हरक दिन कम
 गहिनि बौह तपारि छपकप चलायि बकरा गहि सुदम
 चट्टवदनिक सैह चानिक छति बाजू टार को हम ।
 एक टूटल तार छी हम ॥

एकरा संसा पदमे भारतीय युवक कुराखर अर्पनीज सभ्यताक पदमे कापस पल
 विपत्ति आ नूतन फैसन परतीक प्रसाद पदमे अति

फाकर फाकरन ही मेन सचकुरा फाकरन ही मेन
 आ छटा मे गौरवदेव मेन हा प्रतीति मे मेन अर्पनीज ॥

मधुपजीक मित्रभाव वरुण अ भुगालीन प्रसाद नर नरक भयन
 सोलागहराक स्वरूपक अति-

रुद्र पल चलायि सैह सुनि पहिनि झट घाग अंग
 बगड बे कटबोल भूपति आय सस्कृतिमे विमलमति
 नाहि मिथिलनकरक कृति समझकर ठट्टा छी हम ॥

एकरा कुराखर प्रसाद नर नरक भयन नरक भयन
 मित्रभाव वरुण अ भुगालीन प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 मधुपजीक मित्रभाव वरुण अ भुगालीन प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन

मधुपजीक मित्रभाव वरुण अ भुगालीन प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन

नरगम कुराखर प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर कुराखर प्रसाद नर नरक भयन

नूतन धर्मप्रति वरुणप्रसादक कुराखर अर्पनीज प्रसाद नर नरक भयन
 एहँ नरगम कुराखर कुराखर नूतन धर्मप्रति वरुणप्रसाद
 धर्म प्रसादक कुराखर कुराखर एहँ अति कुराखर
 नरगम कुराखर अर्पनीज प्रसाद नर नरक भयन
 कुराखर नर कुराखर अर्पनीज प्रसाद नर नरक भयन

नागें शृंगारके एहे मासगीक चरिते करि नरु नीकाने नागें कोन कहने
ओउ नरुके सतल मचल दुता पडबाक छव कुरां कषोत्र धानी नीनी नरुके नरुके

होगे कलाकाव्यमे सनसनीके अवसरन घन अलङ्कार काव्य नरुके
सोवराग पवित्राट गदहनाके चित्रांकन घन ओउ एहिमे एका नरुके अन्तर
माशोगन लोक ओ पुनघन आपरा अदित जववाक ज्ञान ओउ नरुके प्रकाशक ज्ञान
तेस ओ सिन्दुरक चरु भेल अछि-

चितुआमे शीघ्र भिक्षु जा अर्थिक नार प्यल मजल अरुणित जेहन
हुमे शुभे सुख गोंठ गट्ट धडीक डेल, त्वका फुलस सब के लम्पट

पञ्चाल बज्जक पाइक भाग पडल नरुके अन्तर नरुके नरुके
भूषण-विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

बन्धक हमर गहन मुख सारक सुनि होइकस जाउ
इयारिग सपेट ओ चन्द्रहार आ अमर्याद छद का संसार

एहे कथाकाव्य अन्तर सनसनीके अवसरन घन अलङ्कार काव्य नरुके
विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

तोमे कुमारी सुकमारि छवि रक्तामरुधरकेँ मरिखन पसरि
नै जाति कोन घर बाहि रहलि अरुधर धवल कुमुनि कण
गोटा लापस नरुके पट वहीमे अपण छटै नहि करब कहल
मधुपव एहेन पा मफल मुनि रहि कुमुन रङ्गमे सब साडी
होगे गाबे दिन रहि सुखित

एहे कथाकाव्य अन्तर सनसनीके अवसरन घन अलङ्कार काव्य नरुके
विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

पिरदा धरि मे आँख चहुल पहल पकरी मण्ट काइ छंडा
इँदकस, बिजौठ ओ चन्द्रहार नूरु औरी नव नकदस
अमुआ धाँउआ सनसनी सुनि पाँहि रहल गति दिन काय अणि
नहिना कुटने वर्णनमे ओकर नृपासधाममे चहुँक वगन भेटै-

छुटनी का कलि इललि मुसर स्वयम्भु भिक्षा कहि निरु शक्ति
चुटिक अनजानमे भित्त भित्त धम धम्य बाल अछि बज रहल

विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

नाइ पा वज गेँकिय करु सोनसुनक उमर सुवराध धरिने सनसनी

सान्त्वइत बोली घाटक दिशि सखी सबोन
उमर वही कर सुनि प्राति बान्हन जूझ
लैनसपक चुकै सिन्दुर समलंकुत आइ विलोकि एकर
नरुके अन्तर नरुके अन्तर नरुके नरुके

विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

पनी लोटा खोली जात कम्बल कलाँच अइपोंछा
भभ किछु कोनेक भइत नरुके पद उठि जाफ
नीट कल्ल लमपेनक सह अण भेटै छनि मेफटीगल
चमडौ वही कर जगह मे पनेवसे कूट पडै छय

विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

नव कम्बल जलपाउ फाटी छोहरी धोती झारा एक
कुकर सरापि जलमे पुरी आ रहल अपन धर्म कर टेक

विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

मैन किट्ट फाटल पुन पाय माच पर काक पर देने राबनीर सन अइपोंछा
नरुके अन्तर नरुके अन्तर नरुके अन्तर नरुके

विन्यासक विविध शब्दावली भेटैत अछि-

है कूट फेट कट टट्ट धै सुमनगत व्यक्ति
आबि आबि कुमोकि शोभा छवि कहा रहल

दूह चाँहि हमरा छन घाँसे और कुतवला
एक कल एबकाने जेकाँ बैसल छथि 'बक्यो स्या' १०

होतखक खानमायाक परिधानकें लभियकत करैत कवि कहयनि अछि-
नील जोगवाने पर माल कानन छै देने, कुन्कर फुँटा सौँटि बन्दने बड़कदम
मुया संगहि कवि मैथिल परिधान डेड़झाँसि पर्यन्तकें नहि छँडल अछि-
बूचा घाँसक समान करन भौ नच डगडगी होमि स्या ११ मुया बड़कदम

सुनयनी 'स्वदेस' गोपेक कविताक मैथिल भाषाक पाठ कानन भए
हिए ११११ प्रसंगक अधिलेख संपादक डा. बाबूराज दूधु अकरक बचन ११११ + १११२
नच अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
भेदापभेदक सामावली भेटैत अछि-

कृतक टापी साफ्न सान्हि अघकल घपकल घाँसी तनि
ई बड़ैना काल पोशाक हमर अपन अछि बछ फरक
धुटिया भिनी पाय कन घरक अकरक सुन्दर लाग
साँधी बोली हाँपटा फाँट अपन धरा मे खर्क न आन
समसौ सुन्दर सपसौ सस्त भूकराँगी अपन प्रसस्त १२

इनन कृतक डगडगी गोपेकन जेना गेहूँक सौँटि १११३ नील
भेत अछि-

गमय अछरसा एफलाय मौज कने सल दोमन
पहिनि ओहि पड़ैचलक कड़ १११४ बनूअन बकल सङ्ग पला

गमोय पंखा अछि छान परिधानकें धिनिष्ट अंग बनि बडल , कवि गैर माँ उमम
ई हन ननक जाल बनयलन ओह साँझ कृतक बचन १११५ नील
कयननि अछि-

छथि फटकैत बजेत हमर सन कें दोसा सुखदात
घाम न ठबम मकि न दुर्दिन होय न पंखा छल १११६

कविताक काननक सन गेहूँक सौँटि कवि बचन १११७ नील
प्रचलित भाषा पाठ साँझ पला १११८ नील
कृतक बचन १११९ नील

मेषक सल पला पला बिजुली दोमल सन घाँ
सुदकि आनि दुहु कन कें बरकल बसो पर गंधो

एही तरहें शारद कृतक छरणाक रूपमे वर्णन काँचि धुवतीक सम्राधुषण सध्य
सामरण हार, टिकुली नूपुर सिन्दूर ब्यादक उन्नेछ कथल अछि-

परिनि जिनीऽधराय सदयः नैश शीत स्नात
उन्दु बदन शारद सुवती छाड़ि भरित कात ,
सिद्धरहारक हार डर तीराक टिकुली सादे
देल नूपुर कृष निपुणा सुरभि नम परि बोँटि ।
अरुण किरणें पंख सिन्दूरित बकर सौम्यत ।
शारद श्रुतु सुन्दरी अझक सुखि नखत बनत ११२०

अन्यदिकक कविताक मझक एकगद विंगडत जेना धिनि अछि धिनि १
कानन नौ धिनि अछि आँ आँकलक वर्णन हन आँक कवि भाषाक नौपरी बचन पान
अछि ११२१ सामग्री छल। कृतक पलंग अरुणक छल ११२२ कृतक भूषण विद्यामक चित्र
भाषाक काननक चित्र पान समस्त धिनि पानत गेहूँक डगडगी गेहूँक आँक
मझक वर्णन हिनक छल मुक्तक सभमे भेटैत-

छानन- गमोय पंखा पिलाय छानन हमर ११२३

अछल अछि जगय धुपित कयक सुरभि पद ११२४

पान- पद सङ्ग फुल विद्या न नमगय फल अछि लपल ।
कवल पंख पान पंसक अपर रहि अछि सफल ११२५

कृत- रौद लप बसो अरो छल पीठ सौँठ
पुनि विपरीत कयल पदि अपनहुँ उनति पदेँ ११२६

कृत- कौटि हौट सहि पौक पदि फौक धूलि मल अंग
मालि रनि, नद अघाल सदि बूझ चरन प्रसंग ११२७

नानने कथांशा पंखक काँच लपेटत जेना आँधुणाक विद्यामक वर्णन
कयननि अछि-

होतक हार उलाहि तर हारी मीनक गम
पहिनि, माला कजरक जौपल लाल ललाम ११२८
नम टोका टोका पदेँ नूपुर माथ चहोल ।
हार हौदमे कनि बसो डगडल परी बनील ११२९

नलन नदरि बनि विपिन जेना आँ पंगुलक अछिनाक चित्र अनुचित

विशेष शोषक कथाकाण्डमें एहि स्वरूपक अछि

पाँचरि पर लहरी घुटन हस सोपरी मिनु कूल हमर^१

महा हसत चह पावत^२ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
अलि तैआ करे छथि हमर स्वार कहन कहन ठोष जानन कैगिर^३

गुन धिछनी काल काल^४ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
गदगद नहि छथि इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

मेल पुरान पघड़नी दुआ, सहां कारत चेफकी लगल
रहक रह अमनज तहपर मुह फड़क गइसो दागल
बगड़ा जेना लगवए खाँवा, तेहन सच कह छठ नोहर
दू क हारो मय माथ कहन किंचित सस छठ नोहर^५

हमिसे परमिदक साड़ी कथन^६ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोप कथन गल भाँट^७ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोकर ओ पाहि सून जइदिक विचार अपन अछि-

जी कथितिक बगड़नी साड़ी अति अपर

वे कथि नौक ने भूत नोकर खर सूर कहन सहां छिछार^८

परमिका शोषक कथन^९ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

मुह कटार ठोस लालेलि बावड़न बेश कथन कथन कथन
भरै बेश फिदीन ममवही टाकु सन कथन अछि कथन
अनकृत मुलादरी आवत शरुष नाथि रहल ओसो रहक कथन
हमिबसना आइ कालहुक शधिका^{१०}

भाधुनेक पा^{११} इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
भा^{१२} इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

लहरी घुटन हस सोपरी मिनु कूल हमर^१ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
महा हसत चह पावत^२ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
अलि तैआ करे छथि हमर स्वार कहन कहन ठोष जानन कैगिर^३

गुन धिछनी काल काल^४ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

आ तहिये सपेठन चय्याफूलक माथ

गए नु ककर ककर प्राण सेबही सौ आह^५

हमिसे परमिदक साड़ी कथन^६ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोप कथन गल भाँट^७ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोकर ओ पाहि सून जइदिक विचार अपन अछि-

सुतल आँख की आगत शोषक अछि त

सा मूष कथ छठ फोफ कथि कथि कथि पर अपर

भरत छठ^८ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

मुनि परति दानी अमनज^९ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न

नोहर सन एनभ ओकरा रोहक कथि लगइ कहन दिब

मय किय बरैत अछि कथि सुत मुनि अबत मेल छैन परि रति^{१०}

हमिसे परमिदक साड़ी कथन^{११} इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोप कथन गल भाँट^{१२} इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोकर ओ पाहि सून जइदिक विचार अपन अछि-

लहरी घुटन हस सोपरी मिनु कूल हमर^१ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
महा हसत चह पावत^२ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
अलि तैआ करे छथि हमर स्वार कहन कहन ठोष जानन कैगिर^३

इत कथी टनिक हठती आँखर हुनका मनक बंधक के

की दखि नहि लेलक हुनक चक्क बुनाकी सक्क के

चिहिनहि है छथि देह सपखन, इय सए नए आरुनी

पैत ससुर मुनि मेल कथनो तनिकर अछिनी फासी^४

हमिसे परमिदक साड़ी कथन^५ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोप कथन गल भाँट^६ इ प्रसन्न मानन पर कथन पर नहि न
छोकर ओ पाहि सून जइदिक विचार अपन अछि-

को आग सैह विचार के सम नाव-कलह हाथियों ?
 नव मूढ बूढ़ चढ़ा सनातन भेष धूषण आग दो
 सौभाग्य सूचक चिन्ह ३ साहो तथा कुड़ो हरा
 धूम्रो हयर्दुं भ्रम आग कालर कांठ पैजाया हल ?
 ६ । प्राण राहो कर्ष सौ बंजक जड़त सौभाग्य हो ?
 प्रति रीति सकलौ भक्ति गुणयो-बुद्ध पुरुषक धाम को भव

घोष विद्युदावलीक आंशम जे विद्युत दैल गेल अछि ताहिमे सामान्य जमाक
जातगेल तब चलायगएक विद्युत विद्युत दैल गेल अछि
मोटाका अछि दुई व कदकाक आंग ३५ गज सेहो, १५५ गज सेहो
मे लयंग लिगल लाम्पमे अछि ३५५ विद्युत दैल गेल अछि
विद्युत ओ फागिभाकि शक्तमे सेहो लंतनि अछि-

आबहु सम्भारधु, घोष कादधु, हँसधु बाजधु मन्द सौं
 सध स्रन रहधु अति नय मन्त्रक तथा धाम्म सौं ॥
 जे बात बन्धवि 'ताहि स्रन, बाजधु प्रियावि किनहि क' ॥
 'त नहु बलधु आह्वगनहु मरि चोखुर भस्मवि ससासिक' ॥
 इत्यादि साधुक सुनि सकल कामन्त-पुरुष कवनतलौं ॥
 मुरझल कि पिच्छशाल छे कदव तनिकर मत्तक पङ्कज कला
 बस ताहि स्रन सौं घोष तानक' लल मनन ॥
 'चावक हंसक', नहु नहु बलक मन कव ललान्द मरि न से ॥
 'ताहि दिने सैबन्धक छल कस जे झोपा बज्ज
 मधदा मरिदि बनाव ललनैक नव कधुक खोपा बज्ज
 जति मेल बलमन्त्रक बना पौह लल सें चोचा बज्ज
 लंगी पहिनि सल्लसद संतनि शान्तिषी काँचा बज्ज

निज खड्गिष आँखर चम्प कौस्तुभस्य लेखनि नेमसौ
 छोखे दुषददा तानि नव कनेस अर्को अति डुमसौ
 ठाकलाह भोजन हुनु आइन् बस जनानी भैसम
 निहारेख मन्द चर्नेत मधु मुनकैत मीदावेसम ।¹⁰⁰

सूक्ति ३ वक्त्रं संस्त्राजं हन्तं रात्राजं मध्यमं वा अथवा इन्द्राजं त्र्यम्भं तत्तदा
मध्यमम हांस्त्रं तत्तदा संस्त्रं कर्त्तुं एहि रूपं दत्तं अस्ति-

इसलिए कि जिसका अर्थ है 'बलत' अथवा 'तार्किक' नहीं मान्यता है 'सुष' या 'द्वारा', अर्थात् 'द्वारा'।¹⁴⁰

ग्रन्थक गङ्गाक प्रति व्यवसाहक वर्णन कइ करि विधिलाक तारी समाजमे एका
उनाइ क संस्कृत ज्ञान कानन अछि। एहि बहु भागमकरतामे प्रस्तुत भाषाक पथक यथ
ज्ञान क वांछ यथ साहित्यिक व्यापन प्रयोजनक संदेश स्थान अछि। गीत के पथ
आपुनक विविध प्रपदक अन्तर्गत भेल अछि।

दोसर बनि छसि जात बसामे गहने काण्ड चलौते ।
 सैह प्रसङ्गक मय कय मे निह कलकटि लगौते ।
 सुमकक बोर झरत बाइते उरिह दोसर आब गहायब
 छुट्टुम नीति लागै छसि बिनु काना कतहु बहयसह
 ए । ए । अथ । काज बहक अछि हमय एक अकौसौ
 के परि सोन सुतिने छमल कहू गहबौल कहसौ
 नजकी देखि ठै अछि झड़की खड भवि मोहि न भावै
 लोक भाय से पहिनि अपन के बचनो जान सोइसै
 बाहुबन्ध पैषाक दल अछि चन्द्रहार एहि अमक
 कर्णफल मे बहुत मान छै गेल मानव गाभक
 जकरा पवनिक ह्यैठ प्रशंसा मे थिक पैठ बुन्दकी
 गहना बहक कानम देतनि कनिहहि हनुमुन काको
 संगतोर रही बहकौ फदर फदर बलिआइह
 न बहना गुरिया छल एकहु रे सिन्दुर ने झाही
 मटका भेटकी धारक धान नहि छुन कतहु हो कापै
 बिनु बहना गुरिया के सवै तन मनसे मर लागै
 घरमे भस्मा घेना बे निबहै बाहर कयो ई त्पामै
 नहि अपन हो तँ अनका सौ ई सभ मटल जाइक
 किन्तु बिन भडक-गुरिया के घर सँ क्यौ बहाउल

कौं कहूँ पिरतम ? कछन कछन करि नमक धौन भई अति ।
 होमक लंन रहियो नहि हाइछ होमनहुँ फेट फुनै अति ।
 भूमिक यास कौं जगल छलि से लाजक रैनगमे ।
 चुच्छौ काना बिन्दा गहनके जामक सकात मेरा ये ।
 झांकल बरसो बिना गहन केँ हम सय जीँ बहारनहुँ ।
 एका डेम चमियो नहि हाइछ लाजिदि सौं यार जैतहुँ ।
 बस , एहन एहन दिनकर भए चुच्छे स्वेस जानै ।
 मल्लो अनाकर्ता ! ई के साथ ? चिन्हल + गहनमल्ल ।

महक वसंत वित्तव कवच शाल दोहाल वन्द जुड मन्द गलाकण
अतर गलाल मरा विविध वसुधायक मरक मरुत वसन्तु शीत मरु

॥ अ रहम हर्ष निर्विश शोभा, संग ज्ञान योगात् मे ॥
 धाम्नि कतवा काल निद्रा वृत्ति निद्रुताक घन ॥
 इति मन्वा चत्तरी बाता सन्तु, बुद्धा सभासि ॥
 मञ्जरी सिन्दूर रेख समान धिर आपाद धरति ॥
 विविध रत्नधरण चुनुपक फहरि लक्ष्मि पंथ कंतक ॥
 हवैस शिखरिनि मनाइ, रसिकचर राजा वसन्तक ॥
 है विविध सौरभ सरस, लज्जलक्ष पवनहुँ पद शोभन ॥
 आर और गुलाल म अति ऊ रहत सब रूप सोइत ॥^{५५}

संप्रदायिक धर्मिक गुरुकुल शिक्षण प्रणाली
परिचरित मध्यमिक शिक्षण आचारसंहिता १९७४ च्या अटी
प्रमाणानुसार शिक्षण देण्यात येईल. शिक्षण देण्यात येईल.
अध्यक्ष मंडळीत—

उन्मादक दौला पर कुनैत मधु रागिक पिचकारी भरैत
बालिकक अञ्जल बचल करैत मन्थनित स्वपुत अति शिगम
आएत वसन्त । जाएत वसन्त ॥

नृत्तं किञ्चिदपि परिपालय भार । मुहुः मञ्जु माञ्जरीज हेम हार ।
 रत्नं कुसुमं धाम कुङ्कुम-रिङ्गाद । मञ्जलङ्कि वन दवौ, ज्वलि अनन्त ।
 आरुण वल्लभ आरुण प्रसन्न ॥¹⁴²

साहित्यिक क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के लेखन जैसे कि उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, आदि के माध्यम से समाज के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास करना।

182/मी.सि.सं.क. पैज-बुध-अशुभकर्म सप्तमी अष्टमिनी

८-३३- 'राक शंभु उवाच- वृद्धा ककभि मितिलां रत्नं च आनन निवात
सः विवात एवा ककभि- ३३- कथं गन् अति- एव कक- वाप्याति, गंधान
आति- अति- एवा वृद्ध करक ककभि वर्णन भैल अति-

५३३ सलन खेका धांती बत्तां मुदक खर भूजल पपवादिज
नलाका धांती पर पैल पग दए चलाका मुद बनल लयफर^{५३३}

[illegible]

कवि इन्द्रक वसन्त-वासक नाम्ना विष्कम्भ शिव उपस्थापित कवलनि मन्त्रि-

एक टाउटो कनडो एउटा मानव गड्डा बास्ना हान्न सिकिन् नेपाल गणपदो नाल
एउ बबोय अनाटक काह भिन्नै गुणगुण कृदा कपाल
गुनै कपाल अन्तै पायां पुगुन

लघु क्रांतीक सौजन नयान फल अस्मिन् तद् शिल्पि चतानम्

प्रतिज्ञास्येति शेषं आ कांक्टो नृजः पुषदक इत्यन्तः पाणिपाणिः अस्ति

कन्नौ शंखक कचित्तमे कवि तीक्ष्ण श्रौंगिक प्राध्यमं भर्त्ताक अर्पचित्रकं
उद्वर्गिण कदवाक हंत उन्नी शब्दक प्रयोगं कथय अलि.

फलान्तरका दो चद्रका नदकाके अन्तका दो

चन्द्रा हैं जेकी पाँच संस्थाकें फॉर्मोपर हयें लटका दी ॥¹²

[illegible]

आधुनिक वैज्ञानिक साहित्यमे वर्णित वैज्ञानिक प्रमाणन/१४३

समस्त काव्य सौ पौष्टि औष्ठि के बाकल गकी ली कमली तौर लखन से शनै
 शनै के अश्वमेध के बरत नर में न लिखक दिवस के नै न लिखक
 सन्तान में सन्तान सन्तान सन्तान के सन्तान के सन्तान के सन्तान के सन्तान के

सुगमनक कविर्वाज सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सिन्दूर उल्लेख कथननि अति-

पधुवास रहे सविस्तर एहि मन में पोकर झोकर छह दूध सौ
 यिर सिन्दूर साधे जीवन में अइहव परतनि सौँठ चउर¹⁸⁶

एही अश्वमेध सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 समेटने दुष्टियाकर हाडत छथि-

विस्त पिलन हानै धरनै सौं सुनन औ दर्शन-बोवन-बद¹⁸⁷

पधुवास सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 गहिमे पौनै आ क्षीया सन्दक उल्लेख मन अति-

दुर दुर सोया सोया सोया
 एका लुटि नै दह के चलनि दक्षि जै अति बोख
 पदै गुनै के नाम नै लेती मँडरी पौनै कोय ।
 सोधि सोधि हम परल जाइत छौं किछु नैत नुनैषि सोय ।¹⁸⁸

गायक जयय गायक कविर्वाज सौपातजीआकादेश सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान

पौटंगर सौटंगर बककनै गौर दसक छल
 सबहक छौती छल नल नल ओ पीय होनिया कर कषांर
 कनिकी कषा कनिकी पट्टय कनिकी केवल कुण्डल लटकल

नकुषक पर कर सुन हाल सन्तान सौँठ सौटल छौती
 संध गलगता गंधो कपर जाली लउनी अदिने लइह
 जाली छानि कपच करै सगिसे विमल समकैत छल

संध कलकल सगिर्वाज सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान सन्तान
 होष्टा आंजन सगिर्वाज दसक कर जाली¹⁸⁹

सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ

सौँठ कथ कहव को सजनी सुन छानै करगती ।
 दिपनै सौँठि पर ओढल छल, नै छल तेल न बाती ।
 सौँठक सिन्दूर रंछा सौँठि हम धनधनौ
 लख नू लइतीसं हाँइछ, मधवाधे नित मनतौ
 सन्तान सन्तान ऊँचै छथि भेया, टिकुनी सन्तान परल
 बयर मनक कपूर लइबय नहुँ नहुँ सिद्धि बसल ।
 सन्तान सन्तान हमरा नै ओ सिद्धलनि दुइजो पौनै
 लपर सन्तान विवस् धरनि कय भल नयक चन बारी
 भा अछन सन्तान बांगमल जल भोजन सौँठ सारी
 अँसर बरक चुल्ल मोठ सन संहलै हमरौ छारी ।¹⁹⁰

सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ

नव सन्तान पर उव दुँधदल लइती उव नव धान रे
 सगि बानि सौँठि अगिपने गछा नव सजने कोर होप
 सोन सोन धरनि औँठ ई बनल न रौ अछांय
 दुधि धान नै उहाँ को पुनि नयधुम कर सुयन रे
 धिया पुता धरनि क कचरत गंगा कफला कोर
 गिती रिती रहत बनल नहि अनुपुनी कोर चौर
 सौँठिछायं धन मँडल पुनित मूढ पर मँडल गान रे ।¹⁹¹

सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ
 सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ सौँठ

निश्चित सामग्री समयक इन्तख चीन अछि । ईसा-

भयुआसँ चारि दिन पहिने कछन लालरंगक फूलदार लिफाफा ट्यकपिउन हावा-
रकद्वारा तैयार आ बुझाईल गेल आबि मुदा एकरा पहिनेक अवसर अछि ।

पुनः इन्ना चढाऊक अवसर हो लिफाफा सभक सभू तबक नदबान
कयलनि अछि । अंतमरक पहि चोपट्टा इष्टक गल्लवने सभकक न होइ
अतःश्रीक श्रमन पर गल आछि एकरा भुक्ति-मार्गक सभक श्रमककन योउक यउ
भुंगारक मनावृत्ति सेहो तदभावित भेल अछि ।

सभक फलुवाक अवसरपर सभक हुनु इच्छन काबजक नन नदबान सभक
एहन अतयात्त प-सोइ हुनु निश्चित एकराक प्रसाधन योउको अ-उक न होइ
सभक दृश्य सभक प्रतिकल्पन कौन होइ । अछि कथन योउक निश्चित योउक
आधुनिक वस्त्र या इमाधक रत्नसभ कयल । योउ आबि गेल विनयाक नदबान किर
नृनन एकरा सभ मो कयनय नय शब्दक आनरक गेहदुव सभस्थित इष्टक प्रसा

नयसो नय गेहकाल वद नय य शक्य नयत । अतः नय क्रम परत अछि
अतः नय गेहकाल अवसरक बुझ गेलोइ नय कय इमाधक नय अछि
भुलावबल कुपुकुम ओ पिच्छागोउओ नय विनयाक ।

पहिल सैन्यो नय नय भाना माइओ अछि सभक सभककुछी । गमट केनय
गमन कयल नय नय सभ वन नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

कयन सभो नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
कउ डमर सभक देन कैलोइ ।

नयन नयकाल नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नयक सामने ठाढ़ भनय । ईद नय कय नयनय ।

नदुआबला पाग फोरि कउ जैतइ । अछि नयन केँक पुछैतइ ।

अबीर और सुलाबल पहि कउ छथ कयनय होरो सुला देन कलेइ ।
नयनो नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयन पाउरल नयन नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नयनो फुटि कउ नयनो नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नयन नयन प्रचोन्नत प्रसाधन सभकरी अनभिज्ञ नयनो नयनो नयनो
नयनो सभक अनुनयक नयनो नयनो नयनो नयनो नयनो नयनो नयनो नयनो

नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नयन सभक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नयन नयन नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक नयनक
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय
नयनक नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय नय

[illegible]

मिथिलाक संस्कृति पन्थक पुनर्जागरणक एक प्रयास अछि।
साधनक अभावक बावजूद, मिथिलाक संस्कृतिक अन्वेषणक प्रयास
कयल गेल अछि।

[illegible]

कक्षा चिनवार यर अक्षा फांक्रमिक । स्थान कुलदवडाक र्छा क कातेक ?

हम - दखन अद्वैत की विचार जं धरन्का गाने - बोलते हैं।

[illegible]

॥१६॥ वैश्विस्मृतः क्षेत्र-धृष्टा-सम्पन्नः सम्पन्नो गण्डात्तमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

हे रूप पांचो भद्राका जना भावना केल्या हाड. हांचे नगरे हावना आनि ११

५. अंतराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, वित्त, वाणिज्य आदि विषयक कुतूहलपूर्ण विषयों पर विचार
मार्ग दिशिका २००२

[illegible][illegible][illegible]

उत्तराखण्ड प्रजासत्ताक शासन द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र

निम्नलिखितों द्वारा * प्रथम उत्तर प्रियंका शर्मा उपाध्यक्ष
द्वारा * अतिरिक्त सदस्य राजेंद्र साहू पांचर वैपरी आसमानो
कान चन्द्र कुआ लाल केसी द्वीप नन्दलाल सिन्हा गाने गाय पांचर मयूर

[illegible]

सन्देशक वरपुष्पा विनयमक वर्णन कथक्कम एतत् शब्दे कयलौन अछि- "जाने
 कयलौन उचरत भेटौं कयलौं आबौं हाथम मांमन दूटा चूगे कानम मकड़ाक ताल मन
 डअरिगन कान मे कडुन कण कपल दग खुमल एकटा लट गवाण मे फुलक पाला"

आधुनिक वैदिकी वाङ्मये वर्णित रोगाधुना इन्वेषण, १९७

एहि तरहें आधुनिक वैज्ञानिक कालावधि में कृषि व व्यापार व्यवस्था का विकास हो चुका है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

मौसमी कृषिप्रणाली में किसानों को पौधों के चक्रानुसार काम करना पड़ता है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

धनधान्यकृषि दुनिया की प्रमुख कृषि व्यवस्था है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि व्यवस्था दुनिया की प्रमुख कृषि व्यवस्था है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

औ- कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

एहि तरहें कृषिकों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि व्यवस्था दुनिया की प्रमुख कृषि व्यवस्था है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे किसानों का जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

कृषि हमारे जीवन का आधार है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है। इससे हमारे जीवन सुखी और समृद्ध हो गया है।

[illegible]

प्रमाण विद्यामक शब्दावलीपुत्र आचार्य कथं सम्यक् रेखनीति मपर शब्द व
 खगम ५ मिन्दु टिकलां गन वंशः ५ किं ऊरु चित वंशः ५ ऊरु ५ ऊरु ५
 चना पन गन मिन्दु पा ५ ऊरु पा ५ ऊरु पा ५ ऊरु पा ५ ऊरु पा ५ ऊरु पा ५

अन्व इमाधन सत्यगोषर आचारित कया समक बागरी अति
कहुतल^{२०६} अमरनाथपुत्र । कबारायल आँखि^{२०७} हा०अमरनाथपुत्र टोप^{२०८}
गंकरा^{२०९} २५ पगल्ले तिकुर^{२१०} नित्यामज्जा मरग बुकरा^{२११} गना^{२१२} मनभातेन ॥१॥
जैदुर^{२१३} - कंठारकवल

[illegible]

उत्तराखण्ड वैश्वीय माहिनीयं ऑर्गेनल सेवार्थुषा समुदाय, २०३

दौघाक छव आउ आल तँ बड़ आदम्बर अछिअर हउक नै कहत छिउउ छुटिआ छव आल आल क भएई आगम लेगल हउक। सब छेत्त क सान मुकुर अछिअर नहि आब तँ तीन टाका कषात्र ओ कएक छव मिआइय अछि हउक।

हस्त प्रयोगीक ताक अधिकतर खिछी गिणाय जे किन्तु 'नक' हस्त जे चारो हाथक प्रकार संतोने गहनाव 'प्रमाण कुट्टा' अथ 'द्वय' धारणामे एकट बनिअनि य गज्जी प्राथ दंडवै करवैक ह००

[illegible]

'नमो भगवते वासुदेवाय' श्रुतिः ॥ १ ॥
 भगवत्पूजा विना न भवति ॥ २ ॥
 भगवत्पूजा विना न भवति ॥ ३ ॥

[illegible][illegible][illegible][illegible]

पिंपरीलाचे क्रांतिविचारांचे स्वरूप किशोरावस्था म्हणून अस्ति अर्थात विविधता समक

[illegible]

पञ्चरत्न अतिशय श्रेष्ठ वेश्यापूज्य प्रसाधन विद्यासिद्धि सम्बन्धित अनेक छिटफुट
महान्तर -
... ..

प्रसिद्धकृत 'गोबय्य शांति' - विद्वत्पंडित सूर्यकांत शर्मा द्वारा अनुवादित।
 प्रकाशक: प्रकाशना प्रसिद्ध कृत 'गोबय्य शांति' - विद्वत्पंडित सूर्यकांत शर्मा द्वारा अनुवादित।
 प्रकाशक: प्रकाशना प्रसिद्ध कृत 'गोबय्य शांति' - विद्वत्पंडित सूर्यकांत शर्मा द्वारा अनुवादित।

[illegible]

न्यायशंकरमिश्रक पिथिलाल कमलानंद द्वारा रचित 'न्यायशंकर' नामी पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें न्यायशंकर के विचारों का विस्तृत वर्णन है। यह पुस्तक न्यायशंकर के विचारों को समझने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

सबसे अधिक महत्वपूर्ण किताबें विद्वानों के द्वारा लिखी गई हैं। इनमें से कुछ किताबें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें से कुछ किताबें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें से कुछ किताबें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

[illegible]

संसाधन कर्मचारी आ आर्थिक विकास के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। यह एक महत्वपूर्ण पहलू है जो हमें ध्यान में रखना चाहिए।

संक्रांतं च त्रिंशत् प्रसन्नं विद्याम् न तस्मात्तस्मात् तस्मात् तस्मात्
 तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात्
 तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात्
 तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात् तस्मात्

1. $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{5}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{7}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{9}$ $\frac{1}{10}$ $\frac{1}{11}$ $\frac{1}{12}$ $\frac{1}{13}$ $\frac{1}{14}$ $\frac{1}{15}$ $\frac{1}{16}$ $\frac{1}{17}$ $\frac{1}{18}$ $\frac{1}{19}$ $\frac{1}{20}$ $\frac{1}{21}$ $\frac{1}{22}$ $\frac{1}{23}$ $\frac{1}{24}$ $\frac{1}{25}$ $\frac{1}{26}$ $\frac{1}{27}$ $\frac{1}{28}$ $\frac{1}{29}$ $\frac{1}{30}$ $\frac{1}{31}$ $\frac{1}{32}$ $\frac{1}{33}$ $\frac{1}{34}$ $\frac{1}{35}$ $\frac{1}{36}$ $\frac{1}{37}$ $\frac{1}{38}$ $\frac{1}{39}$ $\frac{1}{40}$ $\frac{1}{41}$ $\frac{1}{42}$ $\frac{1}{43}$ $\frac{1}{44}$ $\frac{1}{45}$ $\frac{1}{46}$ $\frac{1}{47}$ $\frac{1}{48}$ $\frac{1}{49}$ $\frac{1}{50}$ $\frac{1}{51}$ $\frac{1}{52}$ $\frac{1}{53}$ $\frac{1}{54}$ $\frac{1}{55}$ $\frac{1}{56}$ $\frac{1}{57}$ $\frac{1}{58}$ $\frac{1}{59}$ $\frac{1}{60}$ $\frac{1}{61}$ $\frac{1}{62}$ $\frac{1}{63}$ $\frac{1}{64}$ $\frac{1}{65}$ $\frac{1}{66}$ $\frac{1}{67}$ $\frac{1}{68}$ $\frac{1}{69}$ $\frac{1}{70}$ $\frac{1}{71}$ $\frac{1}{72}$ $\frac{1}{73}$ $\frac{1}{74}$ $\frac{1}{75}$ $\frac{1}{76}$ $\frac{1}{77}$ $\frac{1}{78}$ $\frac{1}{79}$ $\frac{1}{80}$ $\frac{1}{81}$ $\frac{1}{82}$ $\frac{1}{83}$ $\frac{1}{84}$ $\frac{1}{85}$ $\frac{1}{86}$ $\frac{1}{87}$ $\frac{1}{88}$ $\frac{1}{89}$ $\frac{1}{90}$ $\frac{1}{91}$ $\frac{1}{92}$ $\frac{1}{93}$ $\frac{1}{94}$ $\frac{1}{95}$ $\frac{1}{96}$ $\frac{1}{97}$ $\frac{1}{98}$ $\frac{1}{99}$ $\frac{1}{100}$

वर्णकः अत्राग्रे वस्त्रापरेषु प्रसिद्धं च तस्मिन् यत्र तत्र भवति अत्रि ।

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

साइल तैय धुमेल कथाय उबदन जाँवे अछि जहाँ गंग पूजाक सभ्यता
विन्याससँ सम्बद्ध भेटैछ यथा-

कोने बास कटोरा बेसाहल, ओ बे थाल फुलेल पैल ई ।
कोना बाबी कमल पिसाजल, कमल कंजोर दए ई ।
गयो गोरी बहिन सिया के, पोले पोले कुटिया हे सुकुमारि सिया के ।
धीरे धीरे उबदन लगल हे सुकुमारि सिया के ।
सुन्दर सियाजी के हाँह छैन बसाहनि देखि देखि नयन कुड़ल हे ।
किनका के हाथ मे तेल नरायन, किनका के हाथ कमल हे ।
किनका के हाथमे सब रङ पटिया के उहागि आइ हे ।
अम्मा के हाथ मे तेल नरायन चाची के हाथ कमल हे ।
पोसी के हाथ मे सब रङ पटिया, नहिन उहागि आइ हे ।
सुन्दर सियाजी के सुन्दर बदनमा, मुन सँनिय हे सुन्दर कंस नकावन
उपदन तेल लेय अंग उकारक, मुन सँनिय हे केन बिब कायर समायक
सुन्दर गहना नय सिया के कज्जल, मुन लही गयो हे तेल के तेल गहनाक

इत्ये प्रकार एक गद्य गतय अछि त ई गीतसभ आबैत छी, जहाँ पद्यक
रामपद प्रयुक्त होएत अछि त एकरा गीत गद्य कहैत छी। एकरा गीत गद्य
एकटा अत्यन्त सुन्दर किछ एहि गीतमे दृष्टिगोचर होइछ-

बाँहि वन सिक्किाँ ने हालय बाँहि रहारय र
ललना ताँहि कम पदमनाँने काँना बाबू ओहू धरने कति बरओ रे ।
पहिरो जे पारननि पिरिगा बा मुगलना चाहिय रे
ललना तब कय पिरिगनि मुगलना मुजोर डोरि कहिय रे
कहाँ सोपइन बाबू के पिरिगा पिरिगनात्त चाहिय रे
ललना कहाँ सोपइन बाबू के दुखैलिया मुजोरडोरि कहिय रे
ललना कान्हे सोपइन बाबू के पिरिगा मुगलना चाहिय रे
ललना हाँह सोपइन बाबू के पिरिगा मुगलना चाहिय रे
ललना हाँह सोपइन बाबू के मुजोरडोरि कहिय रे
ललना हाँह सोपइन बाबू के पिरिगा मुगलना चाहिय रे ।

इत्ये प्रकार एक गद्य गतय अछि त ई गीतसभ आबैत छी, जहाँ पद्यक
रामपद प्रयुक्त होएत अछि त एकरा गीत गद्य कहैत छी। एकरा गीत गद्य

प्रथम भाग अछि-

छाँरी दलियनि नीची दलियनि गेल अइया
एकटा मण्डल लेय करे छीम खेखना ।

एहि गीतक गीत सभ अछि त एकरा गीत गद्य कहैत छी। एकरा गीत गद्य
रामपद प्रयुक्त होएत अछि त एकरा गीत गद्य कहैत छी। एकरा गीत गद्य

ललना बंटी कुमारीया बला नालाख भाइय दइजय
नयाँ लख एमरि कालाख बेसरी बजोलाख पाइय धेनु गायो
कमल ईसय पुरनि किहुँसय सँवर पारि हिमकोर यो
गति कैयो नहाय बाबा मुखयब नामो नामी केस यो ।
कथिए खोलौ बाबा कथिए पहिरलौ कथोले धेलौ बीबकालयो
खोर मे खोलौ बाबा धीरे पहिरलौ सिन्दुर लय गेलौ बीबकालयो
पहिरल दान बटो सिला कुहा चन्दन धंभर कान धनु छोन यो ।
रंभर दान बटो सिला कालाख चारिय गाय महोस यो ।

एहि गीतक गीत गीतमे वर द्वारा विभिन्न प्रकारक वस्त्राभूषण प्रसाधन सामग्री
बिचोराक तथै चारि अथ वस्तु द्वारा कालाख वर्णन भेलैत अछि अछि।

वर को माँमे छोन के अरुँठो कमल पाँगे
वर चन्दन रोन्ही लगाय पाँगे । वर को माँमे
वर भिक्कड़ी पाँगे वर भिक्कड़ीमे कड़ी लगाय पाँगे ।
ग्रीक टोपीमे रूप लगै, पहिरि त रामजी देखब परि नकरी
सोन के कुबलमे धोनी कर पहिरि त रामजी देखब परि नकरी
इतरक पाँगेमे चन्दन छिमे करु त रामजी देखब परि नकरी।

बिचोराक सिन्दुरक एकटा विशिष्ट व्यवहार मानल जाइत अछि। वर कन्याक
पदमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे
त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे
त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे त एकरा कानमे
सर्वश्रेष्ठ प्रथा एहि प्रकारक गीतमे दृष्टिगोचर होइछ-

मखन मण्डल अति सुन्दर बितेब हे मुगलैनी सोता
आबि मन सिन्दुर कर बंर हे मुगलैनी सोता
सोताको गुंजा नय वस्त्र पहिरोलनि हे मुगलैनी सोता
कंस दोनि छोरिख गुंजा हे मुगलैनी सोता ।

फल्गु क्षिप्रिया तैहर जखने भागलपुर में शोर ।
जब क्षिप्रों धनी आठ बरसक खल्ल भ्रमराने गंहाय
रूपरस मँगए झुपका टोकर ई घर रह्य की कय
जब क्षिप्रों भेलै चौपड़ बासके मृती जमी ने सांझय
दपसँ माँगए सिल्कक साड़ी ई घर रह्य की कय ।^{१००}

एकल हिरकमय अलङ्कार प्रमाण आदुर दह पाँच काचक पछ मोनियाँ
दह पाँचकाक चरण भेल अछि-

पाय सात सड़ुन लऽ कऽ दौड़न अबधिन फल्लौं भेया
अए मात्रि मूनि कऽ मफैया इतनि हे भालरि मुनि कऽ
सातटा लँसिया नेन दौड़ल अबधिन फल्लौं मैथ
आठ भालरि मुनि कऽ रगड़ि कऽ पाछबनि हे भालरि मुनि कऽ^{१०१}

एकल हिरकमय उम्मापुष्पाक दह पाँचकाक सात साड़ी १०१ जानै सुमका सकेन दुखन दह अछि

ठगय ठगय इनामिया राति क्षिप्रों कउय गेली
गेलीमें गेली क्षिप्रों दर्जीका दाँकातक बगलमे नऽ कऽ मृति रहलै
भाया साड़ीमें दह टेलकनि धरि भोरि इतक चलि अयलै
गेलीमें गेली सोनस दाँकान बगलमे नऽ कऽ मृति रहलै ।
जाली सुमकासँ कय टेलकनि धरि भोरि उठि कऽ चलि अयलौ ।^{१०२}

मपलबनि में कल्लौं लँसिया १०२ जानै सुमका सकेन दुखन दह अछि

आकरा गतक अछि १०३ जानै सुमका सकेन दुखन दह अछि

जब डौड़ौ चलल ठहर राखि देखे आबा पन चलि गन हे गह
आबा पन रँखिटाँय धगड़ोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह^{१०४}
मंगलि पितकुलक एहि प्रतिष्ठाकेँ पिताक सोनेक फँच कहल गन अछि न

एकल जगजग मङ्गलक १०४ जानै सुमका सकेन दुखन दह अछि

जब डौड़ौ चलल पूछ राख बाबू मन पहिए गेल
जब डौड़ौ चलल धौलोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह ।^{१०५}

एकटा सुमदाइनि सेतमे धियाकेँ सिन्दुरक कारणेँ विरान कहल गेल अछि
सिन्दुरक कारणेँ सिन्दुरक कारणेँ विरान कहल गेल अछि
जब डौड़ौ चलल धौलोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह ।^{१०६}

किए नऽ खसलहुँ केँयें किए पहिरलहुँ, कयी सप भेलहुँ वीरान
आर नऽ खसलहुँ बाबा खीर पहिरलहुँ, सिन्दुर लय भेलहुँ विरान ।^{१०७}

पायक हिरमामन पनाक बार जखन हुनक कनिजक अर्बैत चलि आ मग कोन
जब डौड़ौ चलल धौलोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह ।^{१०८}

मेला मेलाई जखने जखन मग मग लखे अछि
जब डौड़ौ चलल धौलोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह ।^{१०९}

एही तरहें कियहसँ डिगमन मयंत विभिन्न अवसरपर जे लोकगीत संग
जब डौड़ौ चलल धौलोक फँच बकौ अब डौड़ौ जानै सपुर देश गह ।^{११०}

तावाडि वन हम जखन फूल लडन हे
मझर सिन्दुर भल साहाग बलमु संग गौरी पूजब हे ।
काते वन हम जखन फूल लडन हे
पाड़ हे काख धल सांझग, बलमु संग गौरी पूजब हे
दन्तर वन हम जखन फूल लडन हे
मझ हे जांझरि भल साहाग, बलमु संग गौरी पूजब हे ।^{१११}

शोकसौकुनिक अनुसंध पञ्चाचार कीर्त विंजित पंतीह अंश-

कधिए फारिए कांरा कागल गै सजने, कधिए काजल मयितन गै सजने
अंधरा फारिए कांरा कागल गै सजने नयन काजल मयितन गै सजने ॥५॥

एकदा शुष्मरिप नाकांतिका चलावकास मध्याह्नक अंश-
कयलनि अंश-
प्रत्युत प्रीतिग प्रीति गति-
आंश आ पंच व्रमम नायकक रिप-
अंधरा फारिए कांरा कागल गै सजने नयन काजल मयितन गै सजने ॥५॥

एक आंरि बिकं राधा दहौ चूड़ा चिनिज
त एक आंरि है राम बिकं सोनक सिक्कीक
त एक आंरि है राम अपन मडल सौ निक्कलन सुन्दरिया
त करु सोनरा राम करु सिक्कीकें सोनया
त करु सोनरा राम
सारा से न होमता सुन्दरि सिक्कीकें सोनया
त भोज दिअउन है सुन्दरि अपन समुजको
हमरो समुजकी तं उजाकं नैकास्य त हुनि कि कनका है सोनरा
सिक्कीकें सोनया ॥५॥

एकदा शुष्मरिप नाकांतिका चलावकास मध्याह्नक अंश-
भाज अंश-
प्रत्युत प्रीतिग प्रीति गति-
आंश आ पंच व्रमम नायकक रिप-
अंधरा फारिए कांरा कागल गै सजने नयन काजल मयितन गै सजने ॥५॥

कहि लयता बाजुबन्द कंहि लयता चूरिया स कंहि लयता तं
रंग बेदुल दिक्कुलिया स कंहि लयता है
नव जाली फुंदेनका स कंहि लयता है
बाजु लयता बाजुबन्द मैया लयता चूरिया स सैया लयता है
रंग बेदुल दिक्कुलिया स सैया लयता है
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥

एकदा शुष्मरिप नाकांतिका चलावकास मध्याह्नक अंश-
पयितन छहति लया खडायक-
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥

नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥

एकदा शुष्मरिप नाकांतिका चलावकास मध्याह्नक अंश-
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥

सोनरा बहि गहि दंतकइ गहन हमर गै कउ लइ रगइ गै ना
एकर कनि दंतकइ ननुखइ पतिने लय मौलिक मठाइ
ओ न पडा कउ गंतइ, दपेगा शहर गै, कहर छइ रगइ गै ना
कहलिअइ गहि द दंतकइ कांरा आंरि कुलकी बधिषा छइ
इउचइ मे क दंतकइ कांरा नयन गै कइ लइ रगइ गै ना ॥५॥

पैथिलीक वेज-भूषा-प्रसाधन संध्या अंश-
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥
नव जाली फुंदेनका स मैया लयता है ॥५॥

उतर दक्खिन सै अयलइ नयिनिज रे जान
अल बहसि मैला चनवा बिगड़िया रे जान ।
छिंछिरी छिंछिरी वलस शोकरल कतासया जान
बान घसी बहार मोली सुंदरी पुराहुआ रे जान ।
अनुरा निहुरि अलग नामो सपो कंजिया रे जान
बान छिंछिरी गंत नंदन मुख दिहिया रे जान ।
बधिषा नैमल सासु बगदितन रे जान ।
बान दिअ शयु कामल कडांगिया रे जान ।

इव फारि कति सपला प्रभु पतमल अंगमरा रे जान
बान बहसि गंत दहुरि अमाय रे जान ॥
नचक तिगिजवा अमा दंडुई अंगमरा रे जान ।
अनि हयार निगल कजल चाल गेली रे जान ।
तंहर तिरिया गोदक छिंछिरी रे जान ।
बान चान गंत बटवा सिगिदिया रे जान ॥

मिक्की तू है जय तरबाक धूर उड़ रह है कूलबोरन कपना हजर
वाप जातू डू जॉनन वजः । विदमः संगः मीनः लपकैः जॉनन मडियाः लपस
मडिया तू है जय तरबाक धूर उड़ रह है कूलबोरन कपना हजर

एकान्त अथ गावसं जना द्वाश विभवा जयं जलनंज दनु टीका सनवाक प्रभन्त
नपण धीन प्रति पुदा जटन साध लककं खोजन कवाक पक्षम गदि अंति जयन
हठकटा प्रवर्तक कारपी आ भरा दुग अभिन टिककं कोड कउ नउ कवाक वचन
कवेत अंति पुदा एवसं जयक जवव जयन कवा आधन गदि जेडन टिक ज्ञा पुनजव
आदि टिकल गडनापं यदयवाक दनु टीका योड कवाक उरति-

भी कता कहाँ जहाँ बिम्बा बान्हि कः । हम पण्डित छौं छः बिम्बा बान्हि कः
 २ की की लयब बिम्बा बान्हि कः । हम दिक्कल संग्रह बिम्बा बान्हि कः
 कैंकरा पंखयब बिम्बा बान्हि कः । हम जलिनक पंखयब बिम्बा बान्हि कः
 हम ताँडि कः गंगयब बिम्बा बान्हि कः । हम फग रौ गङ्गायब बिम्बा बान्हि कः

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

चल चल है जतिन यमनक किना दिवस बिकाइ छइ लखनगर है जतिन
न पक के पड़तइ टिकवाक नमो पल पारो रे बट
न पारो के पड़तइ चल चल है जतिन यमनक किना
कंठा बिकाइ छइ लखनगर है जतिन तइ पंख के पड़तइ
कंठाक घण्टी बट पारो रे बट तइ पंख के पड़तइ ॥१०॥

इति वार्षिक इन गत वैद्यत नववत्स फायदाक विनाश गंत अंगे एका
हक एत गंतम इतर अपन बटवुकोक कारण गिबुन जांछि जे यनाक जनाज
मुनुनय नहि बुझेन स्वभावत बहिष्कृत कर्णो कर्णोम अंगे सहक थोडा जीका अपन
हक कानक जिक अनुकूल नहि बुझना जगत लोक जितनक एहि चिन्तनक्रम
आधरवरी भस्मरु जनाक पोषाधिक शक्यता उन्नत बुझिनास दोरु-

नधिया नदयलहँ अनमांस नाक, मोर नीक ने ।
 कोन जयबड़ जयक पलंगपर सुरति मोरा नीके ने ।
 तरकी नदयलहँ अनमांस कान भौरा नीके ने ।
 कोन जयबड़ जयक पलंग पर सुरति मोरा नीके ने ।
 कोन जयबड़ जयक पलंग पर सुरति मोरा नीके ने ।
 फुलवा नदयलहँ अनमांस मांग मोरा नीके ने ।
 कोन जयबड़ जयक पलंगपर सुरति मोरा नीके ने ।

[illegible]

हमरा बहिनके मंगे शांसे टिकुली अरक चढ़ि बहमे अरक चढ़ि बहमे
अरक गुलाब बह बस करधिनह हमरा बहिन से मत भालू जी
हमरा बहिनके कान शांसे सज्जी अरक चढ़ि बहमे गाड़ी चढ़ि बहमे
अरक गुलाब बहिन बस करधिनह हमरा बहिन से मत भालू जी
हमरा बहिनके कान शांसे सज्जी अरक चढ़ि बहमे सरक चढ़ि बहमे
अरक गुलाब बह बस करधिनह हमरा बहिन से मत भालू जी ।
हमरा बहिनके हाथ शांसे घड़ी, चढ़ि चढ़ि बहमे गाड़ी चढ़ि बहमे
अरक गुलाब बह बस करधिनह हमरा बहिन से मत भालू जी ।

[illegible]

सिनुहा बखन कहरिग्यो रे जटा सिनुहा किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल सिनुहा किए ने लयलें रे ।
 सिनुहा बखन कहरिग्यो रे जटा साहो किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल सिनुहा किए ने लयलें रे ।
 टिकुली बखन कहरिग्यो रे जटा टिकुली किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल टिकुली किए ने लयलें रे ॥
 टिकुली बखन कहरिग्यो रे जटा चक्का पर कऽ घेलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल टिकुली किए ने लयलें रे ॥
 साहो बखन कहरिग्यो रे जटा साहो किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल साहो किए ने लयलें रे ॥
 साहो बखन कहरिग्यो रे जटा साहो किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल साहो किए ने लयलें रे ॥
 ओगो बखन कहरिग्यो रे जटा ओगो किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल ओगो किए ने लयलें रे ।
 ओगो बखन कहरिग्यो रे जटा ओगो किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल ओगो किए ने लयलें रे ॥
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥

गीत २५३ : *[Faint text in Devanagari script]*
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥

कांतिरूप पासमे परिचर्यामे सम्यक्भावक उत्सव हाइह आछि । एहि उत्सवक
 अर्थक भावकभावक अर्थक रे सिनुहा बखन कहरिग्यो रे जटा सिनुहा किए ने लयलें रे ।
 सिनुहा बखन कहरिग्यो रे जटा सिनुहा किए ने लयलें रे ।
 टिकुली बखन कहरिग्यो रे जटा टिकुली किए ने लयलें रे ।
 टिकुली बखन कहरिग्यो रे जटा टिकुली किए ने लयलें रे ॥

दुपिवा भोजन करु हे सामा हे चकवा लखि गेल घाल कोरे दोकाने
 ग २३ जे घाल खिलने पटवा मे फल्ल घाल गि लल बल्लो पल्ल गेल
 ग २४ दुपिवा भोजन करु हे सामा हे चकवा लखि गेल घाल कोरे दोकाने
 ग २५ जे घाल खिलने पटवा मे फल्ल घाल गि लल बल्लो पल्ल गेल
 ग २६ दुपिवा भोजन करु हे सामा हे चकवा लखि गेल घाल कोरे दोकाने
 ग २७ जे घाल खिलने पटवा मे फल्ल घाल गि लल बल्लो पल्ल गेल

सामा चकवा सांकात्मिक एक गीत अन्य गीतम झागुरि, घटोर, झिलमिल
 केशुआ ओ सिन्दुर चरमपुष प्रसाधन चित्रात्मक वर्णन आयेछि-

फल्ल घाल गेल लल बल्लो पल्ल गेल
 ग २३ जे घाल खिलने पटवा मे फल्ल घाल गि लल बल्लो पल्ल गेल
 ग २४ दुपिवा भोजन करु हे सामा हे चकवा लखि गेल घाल कोरे दोकाने
 ग २५ जे घाल खिलने पटवा मे फल्ल घाल गि लल बल्लो पल्ल गेल

गीत २५३ : *[Faint text in Devanagari script]*
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥

तम घाल कइसे आबे झापोर घाल दिसत आबे
 घालसे घुल गइइह आबे ललबल्लो मुँह पोछत आबे
 कंधासे चक झाडइह आबे
 तम घाल कइसे आबे घालकोर घाल दिसत आबे
 घालसे घुल गइइह आबे ललबल्लो मुँह पोछत आबे ॥

प्रकृत अन्य गीतमे सामाक द्विगमनक अभिव्यक्ति देव विविध वस्तुमे गहन
 चित्रात्मक चित्रण करि गेल आबे सामाक चित्रात्मक चित्रण देव विविध वस्तुमे
 गहन चित्रात्मक चित्रण करि गेल आबे सामाक चित्रात्मक चित्रण देव विविध वस्तुमे
 गहन चित्रात्मक चित्रण करि गेल आबे सामाक चित्रात्मक चित्रण देव विविध वस्तुमे

गीत २५३ : *[Faint text in Devanagari script]*
 नथिया बखन कहरिग्यो रे जटा नथिया किए ने लयलें रे ।
 हरि हरि बाली समझ अमगल नथिया किए ने लयलें रे ॥

[illegible][illegible]

248/पैरिऑडिक ताल: कक्षा: प्रभावर सयक्यां प्रकटवली

हंसूली गदा दम हो बड़ाली बाबू हंसूली गदा देहो ।
हंसूली पहिरि हम धिँयवा खलनै हनिजा देखतै हो
हनिजा देखतै हो बड़ाली बाबू हनिजा देखतै हो
चान सरसिमे नजरि लगतै अमर नै लीवै हो ।

हय गतीये गतीये धूमऽ हऽ यतीनिजा सेहरा पेंहिहऽ हो बचे ।
हय मोहरा पेंजहऽ माति बइहऽ काना सम्हरिहऽ हो बचे ।
हय यदवा यदादरि बहिनी मोहरादि अहो सम्हरिहऽ हो बचे ।
हय गतीये गतीये धूमऽ हऽ दलीबधा मोहरा पेंहिहऽ हो बचे ।
हय यदवा पेंहिहऽ माति बइहऽ काना सम्हरिहऽ हो बचे ।
हय यदवा यदादरि बहिनी मोहरादि अहो सम्हरिहऽ हो बचे ।

प्राप्तः प्रमाणः २०१६ अन्तर्गतको राष्ट्रिय प्रमुख पत्रकारिता पुरस्कार प्राप्त भएको छ।

विनका सिर जलसिन्धु दोरा
विनका सिर इड धनुष हाथ
हाथ बज्जल सिर जलसिन्धु दोरा
कलमा सिर इड धनुष हाथ

[illegible]

छा आहत विषयबद्ध हो तो भी सुत्र के द्वारा ही जान बन जाना ही होना ही है।
 कराये औरत लगबाये लेलनि तोन धन धन दूछ छुआ चारो बहक सल्ल आ हीन पर
 धान न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क
 धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क
 पर आ बुतल दला पर भुंछे मरवाक कारण पुष्टि कर कहैव मंतपे-

मौन देखु और देखु हीन पर लौं देखु
 पैर देखु औरत देखु हीन पर लौं देखु
 खाया देखु चारो देखु न धिक्क न धिक्क न धिक्क
 माने छौ मोन छौ धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क

एहि तरह फलक चक्रकथाक आधार पर जो कथा है उस चक्रक
 की वजह से चक्रक मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक
 की वजह से चक्रक मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

लाल फलक हौं बिछोना आ नोकक के छट ।
 दया धन लौं सोवें बगहिया । हब मचिहें मटमट ॥
 छल्लो छपल्लो छुली छपल्लो नान्न रंहु काआर ।
 यौवन पुनू कटो नयन छै टिकल्लेक कोन भिगर ॥
 पगिला तोहर लम्पटका धरिय । धातं ओर छिनार ।
 ककपट के कमक मस छौ शेषक कस भिगर ॥
 लाल छिगुर लाल सिन्दूर लाल अटहुल फल रे ।
 सौं धे लाल रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 कारी ओजन कारी कांजन कारी धातु मस रे ।
 लाल के कारी रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 पोसर बीग पोसर बाबुस पोसर इरिह रंघ रे ।
 ताहूँ के पोसर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 उज्जर पोधी उज्जर धातु उज्जर चन्ना मस रे ।
 ताहूँ के उज्जर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ॥

औरत पत्रक कथाम धुनी शब्दक प्रसंग पर विस्तृत कथन चक्रक के अन्तर्गत
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

इस प्रकार अति प्रसंगिक औरत के चक्रक वहाँ पत्र कथाम थात न चक्रक मन्त्र
 दया धन लौं सोवें बगहिया । हब मचिहें मटमट ॥
 छल्लो छपल्लो छुली छपल्लो नान्न रंहु काआर ।
 यौवन पुनू कटो नयन छै टिकल्लेक कोन भिगर ॥
 पगिला तोहर लम्पटका धरिय । धातं ओर छिनार ।
 ककपट के कमक मस छौ शेषक कस भिगर ॥
 लाल छिगुर लाल सिन्दूर लाल अटहुल फल रे ।
 सौं धे लाल रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 कारी ओजन कारी कांजन कारी धातु मस रे ।
 लाल के कारी रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 पोसर बीग पोसर बाबुस पोसर इरिह रंघ रे ।
 ताहूँ के पोसर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 उज्जर पोधी उज्जर धातु उज्जर चन्ना मस रे ।
 ताहूँ के उज्जर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ॥

मैथिली लोककथा ओ मध्य गीत मध्ये संहो अनेकठाम प्रसंगिक प्रसाधन
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

मौन देखु औरत देखु हीन पर लौं देखु
 पैर देखु औरत देखु हीन पर लौं देखु
 खाया देखु चारो देखु न धिक्क न धिक्क न धिक्क
 माने छौ मोन छौ धिक्क न धिक्क न धिक्क न धिक्क

मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

कानि कानि औरत फरि कागज बनौलनि
 नैनाक काजर पोंछि के मंगल बनौलनि
 काम कनगुरियाकें चोंचि कलम बनौलनि

औरत फलक कथा प्रसंगिक औरत के चक्रक वहाँ पत्र कथाम थात न चक्रक मन्त्र
 दया धन लौं सोवें बगहिया । हब मचिहें मटमट ॥
 छल्लो छपल्लो छुली छपल्लो नान्न रंहु काआर ।
 यौवन पुनू कटो नयन छै टिकल्लेक कोन भिगर ॥
 पगिला तोहर लम्पटका धरिय । धातं ओर छिनार ।
 ककपट के कमक मस छौ शेषक कस भिगर ॥
 लाल छिगुर लाल सिन्दूर लाल अटहुल फल रे ।
 सौं धे लाल रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 कारी ओजन कारी कांजन कारी धातु मस रे ।
 लाल के कारी रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 पोसर बीग पोसर बाबुस पोसर इरिह रंघ रे ।
 ताहूँ के पोसर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ।
 उज्जर पोधी उज्जर धातु उज्जर चन्ना मस रे ।
 ताहूँ के उज्जर रंखल पगिक मस सिन्दूर रे ॥

मैथिली लोककथा ओ मध्य गीत मध्ये संहो अनेकठाम प्रसंगिक प्रसाधन
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक
 मन्त्र जहाँ आ एहि कथा के चक्रक खराब हो कर चक्रक

चम्पक छण कडईक घण्ड सन बाँध
चबल नयक सज्जन नयन आ सल हम्पक बोज
आइयोमे हुनारि लागल आ ताहि मे जम्करी कऽ होरा दीकल ।
आ वगुन दीपन / ~~दोहरी दसकर दोहरी उर~~ दुहरी दुहरी के वनर
आ धरषा जहाँ घुटकि घुटकि बाध
ओ लकरी दिस ताकि दैक करबके सल दैक ।
आ तकरा कोइमे पासनक हुनक पैसि खदक
ओकर टिकुली ओगोर जहाँ छिटकेक
आ लोषा चानक फलक काटी फलक सिखर जहाँ लगेक
ओ सल सात हम्पक लट धरामे बहुरा बुझि पड़ेक
अन दिनापर जगनि खनि रहल हो ।

एहि नर नरि सप्तहम नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक
नयनविन्यासक चोख आ नयन साइद बिगार करब दक्षिण चोर पहिरब पाटी मसगल
काज लगायब मिमि बेसाउब जिक कइल टिकुली आदि गदगद गिरिब चोखि करब
थन अछि त मेथिल वनपूषा सगल विन्यासक छलक स्वल्प नयन करैक

सोलहो सिंगर कैलिक बादक फुलदाली लेननि
रंग बिरंग फुल सोलहो बसनाइ स्वायंक अरु

तथा पुन

दोना मलिन दक्षिण चोर पहिर ललनि छटी मसगल लेननि
नैच काजरे कैलनि सोक सोक भिसे बैरा लेननि
हाथमे बाँक पहिर ललनि पैसि चइल पहिर लेननि
मांगमे तारा चन्द टिकुली सल लेननि अरु बसनाइ बनि

नयन बहुरा नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक
नयनविन्यासक चोख आ नयन साइद बिगार करब दक्षिण चोर पहिरब पाटी मसगल
काज लगायब मिमि बेसाउब जिक कइल टिकुली आदि गदगद गिरिब चोखि करब
थन अछि त मेथिल वनपूषा सगल विन्यासक छलक स्वल्प नयन करैक

जाहि मध्यम कंयो स्नान करैत छलनि जाहि फलर आदि पदक नयन न
मायल । कासोक चइ इकाताओन बुझयनि

हुनक पयस बिछिब बहुत बर धरि अंगन कसि रहल ।

गदगद नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

धरषाभरि अनेत काल सोराधर नर कऽ गहवर्य आनि मिंगार पटार
जदलनि । सोलहो भिगार । बसोसो आभरण

कऽ नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक
नयनविन्यासक चोख आ नयन साइद बिगार करब दक्षिण चोर पहिरब पाटी मसगल

कइमा रहन गानी कहनी लट झारने कइमा केले सोलहो सिंगर
गंग छप नइलहु सेवक सिद्ध भट्टारसी भे फैली सोलहो सिंगर

जिरानक नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

कथि पोरि हं मंगल तोहरो नयन भेल कथि पोरि छिटकार

कटमे पुरान गहना मयक मंगल अरु धन पटमार पहिर छिटकार

छलक नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक
नयनविन्यासक चोख आ नयन साइद बिगार करब दक्षिण चोर पहिरब पाटी मसगल

राखे मलिन नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

कइमी गेल किए भेल सोलहो रे भैय्य गदिये दिओ न

गहनी गोर बिछिब सोलहो गेय रे भैय्य गदिये दिओ न

कइमी नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

नयन कं कनीसो गेय हो, कइमा हरेकउ हो कइमा धरौगऽ तोर धनुष हो

नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

अं दिन गेना हं वंश कं भैलर हाडिकं दोनी को मलीना ने भैले ए

नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

अप कं कहन को हाथ कं सोपेए

नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक
नयनविन्यासक चोख आ नयन साइद बिगार करब दक्षिण चोर पहिरब पाटी मसगल

नयन नयनस्थान राखि देना जानि नयन छलक नयनमे हुनक

उड़ो लट झारि कऽ लट झारि कऽ

एहि एहि गति पिया कइसो अयल छी राखि खेत सुदरीना सँ आयल छी
हाथमे दुन्दुन पैस काइ नै जागिनिजा कर दलमनिजा

अप ओ कनिजा रहिओ छी भरि

जानन थकयक जानन गाऊ जानन औरन चौक कोत
 भगल गुगल गुगलके भूप कल हे सँस सब कोकर ओह
 कोबर गेने बड़ अनुगन बैसक देलनि भूकक कल
 एकहि पटोर छर दुइ कुमारी नाम छी कनिया रहिने छी भनि १००
 कागजक हथ पुनिक बनए ठहि अँध काजर धरि
 आँहि काजरक लइक कसहि पैर भइति दिन आय १००

एक भविष्यक भविष्यक नाकाजि ५०००० फरसत उवन बूझो दैल
 सगल अँध १०००० मरा वात्रापुन प्रपन १०००० मरात लेन १०००० दँड
 पहेत अछि यम

लोकान्त

1. पत्रिणै सब उपकारैए कयो बना
2. जन धाँवपर घाबो बनय तब सँहरापा छनन पहय
3. क बैसक न जनकहि बल दहपर बस न प्रथम धान
4. कंठ रोपि कष्टे रहि पाले को दैतहु सोखे भल
5. "गन्धक" संवने जान दुनू भनि बनिपक" संवने छयक भनि जान
6. बौद्धक कनिकाके नै जाना सोखेना
7. इम्कली किनहु कनपट्टे भिनु
8. कातबो सह पाग सन्दरणि तैयं गटक छंड
9. छैव गुन कयक कुठौव गुन कोउ
10. राजाक अँधना बाबोक अँधीन
11. दंडल कनिका रंजने नै काँठे तँ किछुना क
12. धार्मिक धरि विश्व गदबाक भाषा मी
13. नूअर तँ धाँवो धाँ दंत मूरा मुँह के धाँ दंत
14. धनन पदल चमार धर निर उठि कतरय चाम
चनन निर दिन गवय पदल छडय कोप
15. पाल बिना जहाँ को ? माउमि बिना पदाँ को ?
16. सब रसम नून सहायय धाँ कपड़ाय फितारि धाँकोकट नै छार
17. जतर नेपूर तकन सान उवन पहिर तँ ककरक कोक

18. पेटयं खड गँह मुँहमे छान
19. धेखे धोख
20. धान कल तँ सोन नहि सोन अछि तँ कान नहि
21. भिनु रिक्कले बसल तँ पेटो लमो पड़ल
22. कल कं बहु नै तत कं लहल
23. अल मरुके" कोर-छाप बिनादिक" भरि मरुके
24. बिफनिक मौअति भाष मास
25. सहिरी धनिकाइन जहाँ राखौ परोब जक
26. पुन कपड़ा आ बडमान आरमोक ठेकान नहि
27. काँआ नाकं टेढ़ कोओ नकपुनिधे" टेढ़
28. गंधारक घोरहि दुनू दिस धिक्कन
29. धान भरि छारो नब भरि नहि काँई
30. धनि दहिमंगा दहरो अँध
31. चौआ ललितगर, बूना पुगन
32. पेट कय कुभबुल बड़ा करव महमर
33. कयोदन राइर भाषा चोघट
34. एकटा बहु तब नूअर नै धात दोनो बहु लय छातो फाट
35. नय सग बैसो खड गुआ पान, कपड़ा लय बैसी कटवी दुनू कान
बल जलन नै नूअर पान नय लयान नय पान
37. कस्त कनिया रहिये गेल जुलपी कयचल वर मुरिये गल
38. फटल तँ पदमर टटलो तँ हधिसर
39. नकरा बरह बोभ बाँह तकत हाँडने इगदारी नहि
40. नडाइत चोर के मंगोदियो भल
41. छय गुन काजर, छय गुन छोर
42. पेटयं खड गँह पिघय तेल
43. मोन कमल बस कपपर छपा
44. किनय यजमनके मया
45. उधरसँ मीटकट बीनमे बाँधामध
46. बँड गूड लयन कान छेदीन

- 47 किंदन कज्जनकेक हम् चटोय पदिम्नहुँ
सौखि कसलके हम् संगहि रहो
- 48 बधिनिजा मीमी सिफली बूज्ज मूँतम टिकुन्ने
- 49 दडबा रे अउरंगा
अकना (किंदन)मे गुदरी चेकरी
तकरी (किंदन)मे बूकर्गा
- 50 असधीक लुटि छः कोउलापर जप
हुत्तुन्नरिक भायमे कपसोक तेल
- 51 पित्तिक बुलकोपर एके गुमान
सांवाक रहितो तँ जलित्ते उठान
- 52 हायमे कड्कन तँ अचन्धक कोन कल्प
- 53 एक बुनि कसधि बौआक बाप
जिनकासँ हेत नुआ घन
- 54 हायके पगड़ी थोकिआक ओझान
- 55 सिन्धु इन्धु सऽ को करबे
गुड रसित्त तँ चटिगहुँ
सौंझ मुझला कानन कते
माथे फाटल झेअब कन
- 56 तेल मयकोआ केल फलकोअ
- 57 नहि गङ्गायमे तँ दखहुँ दोउज
- 58 तीन फुक जातो
- 59 मधिया बिना घूठ पयिख सन
तइकी बिना घूठ फडको सन
- 60 अलकल घोलै फलकल टोक
तखने बूझु तिरहुत्तिया थोक ।
- 61 रामधनीके कोन कन
मगव फाट तनयलो
- 62 अलपी सौगंके सवा माक बुलको

- 63 अलपी भानी कटोगर तेल
अलिक गेल महगो घोबि गेल तेल
- 64 शतकको बहु ने उतकके लड्डो
- 65 उदुन खेती मुठिबा टोक
तखन बूझी तिरहुत्तिया थोक
- 66 गहरं क्काय गायती को ?
- 67 अपन पिवा इंस तँ गुदरी लेपेता
फरचट पिवा इंस तँ चुनरी दखि लांभेवा
- 68 बधन छनहुँ बापी झरो
तखन पालिस खंडू सगरो
जखन मयनहुँ काकरा घर
छाकि ठपगि कऽ देखलक घर (पिहारी मकह
अजैत अजैत शोया हठी कनाहि
- 69 लटको लचकका बारस तीन मसपर पूअ फाडय
- 70 सांघ बन्हायल पीया नीक लागै ?
इमरा त नीक लागै
गमक नसक मुदा थूक फकीए
बनन भनल बहु काको सन
स्टोक दलनि बहु हाकी मन
गुदरी त उजटि भल
दठे त सुनरो भल
सनमाच खंडल सतधांके बूज्ज मूँतम काका
बानस मुँट को जौधए घन
- 71 नध धजौनजा टोकमे झांनि
- 72 नध गेनिजा बहुने झिमोइमधिया
- 73 पिवा बज्जला होमि डाँदक नूका गेल अधि
- 74 मार पन्ना रिनयो बकस गुअ खोय
आगु पाहु रिनयो सौदागर जकाँ जाय

82. बिपही बंधनि चटाचटी मट छिनकाकय बंस
हम पछी धरोरी तोर पिप कान बरस
83. काजर बिनु मुह गजर सन
टिक्लौ बिनु पूर... सन
84. घरमे छट नहि देहमे सिमको
गरमे छीब नहि कानमे गड़को
85. नैहरक आनहनि सामुल डोट
नाट चलथ नहि झोपमे पीट ।
86. दरमंगा कृताक कहल अंगा
नहाय पांखनि बाजय गंगा ।।

मोहावरा-

- | | |
|---------------------|------------------------|
| 1. चोकरही सारब | 2. सनमे युगलि हायब |
| 3. इगडोमि डोल करब | 4. खेदरा आदि कउ बी पोर |
| 5. ओचर बाहुक | 6. इगडोमि डोल डोयब |
| 7. पाग खमब | 8. पाग खमब |
| 9. ओचर पलाय | 10. ओचर मरब |
| 11. ओचर पर आगि छारब | 12. सिनु पर आगि छारब |

फकट्टी

1. कृति पीसि खां धनि बहु हमर छे नुआ फारी व पैरु के
2. बाहर सुखाड छनि जोड़ा धोली, पर फने अंठि कृषोड छटै
3. बंका जमल फेर बहुए ने
4. परि हाय लहटी धान क कृती, मयि पनखोना खुनि क फूकत
5. ललकल धगिध फलकल टीक लखने बहु टिङ्गिया थोक
6. न चण्डिया पी गड च न लख न इ लख न इ लख न इ लख
7. पैरमे आगत सोए किए घात, पल क कउ छल्लो रेलिपे सेडो गुन न छल्ल
8. गर कान लकरी उपर कान लूट्टी कोच मिट्टी रैत पिसमे
खोपा उच्चो छटने बुझलहुँ बड़हाक बेटो ।
9. सब दमरनुआ चुनिह के फूकत सब इय लहटी धान क कृती
10. गड़लौ किदनमे घडल कापड़ कपड़दन करय उतर झारड

किदर कहलक हम परोर पहिरलहुँ, ओखि कहलक हम संग छे
कायपेलन चिनु गहन छे गहनलहुँ छे गजोफलो किहु नुआ छे दहसाग छे
छोट सैप किहु सैप छे गोडबतना छे

13. गहन नैहर कल ततक नामुर गोट
बेलन सकलमुख गहन गहन गति
गहन अपने छे गहन गहन गति
14. घरमे कुर्बोक रोटी
बलर कंसलन धोनी / गहर गहनमुख धोती
15. एहन हैत कभी लय एहन कार कभी लय
धोनेमे खड़ी मिलैब कबो लय
16. एकदि पटोंगे नी रे नी
कहबह मनुसा बड़छ छीम तमर लग कउ पूर जोम
17. उलगाये धल रउ ककब आन
18. इनका कसदिय तीन टिकुलो
एग कच्ची एग पक्की एग मस बिदुलो
19. अरबरे नवै छे सिनु टिङ्गिया पवेछी
20. अरबो बंधनि तमर तेल
21. अनकर पहिरब सब बड़ छीने ललक त ललक बड़
22. अंग न रोषो निपटिया शप
23. भूस क नहरी पिप के घत । बपरा नुआमे जलजल बसात
24. काना काना मगही सामुर जाय बरिजा डोलनिठे जाय
मछो गिलगबने जाय कनही बिनादि दुधओटनी जाय
लुननरि बनमोबा जाय आगू पारु धरिआ जाब
नै नै खडखोदुख जाय । मछ मछ नुआ जाय वैसी मगही नगर तम
25. माय । माय । माय । अब दिन बिदुल माय ।
पियाक पछादिख हमर अदिख, चाकिवा घरमे एके संग मुखाय ।
26. बँ सैयों मिलाने रीजत । तँ को धेल पिरोत ।
मिअनरस दुनब फयब । तँ सैयाक पियासि कहायब
अन्ना भरमे लागे सोक । तँ खनु के धेल पिरोत

28. बल सैय्य हठा । मुदरिए लोभता ।

29. चौक धिमाइ छनि चिनकार । तनिकर ज्ञान बह् जगजिहार ॥

30. सनैलीकं धितक कनेलो

1. मेमा मय लट जगो भूत तना चनि ठका मन जन अतिरुप विरुध निरुध

काइली सनक बाल कं मनु अनमाल

32. भगन राइ कोखि मांछ, बनल रह्य अपन समर

33. बैसन खाय चिवाइय धान, से को रखत दरकं धन

34. बलि भक्तमे विपन अचार, बूझ बक्समे सब मिराज

35. निर्गुनिजा हय की मून केहन जानन तेहने वून

36. ठचठिहकं की बैमक चाइ ? कटिमुगैकं को कांवर ?

37. विधवा घरमे सब दिन मरदव निर्धन घरमे कर्तिक

राजा घरमे सब दिन अगहन, फागुन घर अर्धशांतक

वचन

1. रविके पाय सोपके दरपन, मंगल बिनु किबु धनिया चारन

बुधके राने बुधपति ३ राइ करण १० राइ जानन आने करण १२ अठरा रा

2. नकटे पहिरी भुखल खाइ, जहाँ मन हो तहाँ चड

3. शनि साई रवि जानय, सोंम कम्य मुद्राह

मंगल बेचरी जानसी मरै, बुद्ध करै उच्छाह

कपड़ा पहिरी छैन दिन, बुध बुरम्पति रुक दिन

4. एको पानि बी बरिसए प्यालो कुरफिन भरिअ सोन फलो

5. कुल कायइ चौतले नेक

बुझैअलि-

1. कनी टय जौहीके लल पधरी मिरचड

2. कनी ट ट जौहीके परि बौड ललतो -मकड

3. रोग बिराज टिकुसो सारथि, होख रोग अंजन

चापोके इला लटकाऊ संतमे लई छवि पाहिनी -मकड

4. बाने लहु शनि गे चान देचन

जालाई बि पाह धन लल पज्ज म पा चून लल पू

5. भुन गज्ज कानी बाम जे वृज्ज र नका शन र

ननाक अंदागीन-

1. हो मंडिलो । की छोटकी ? बडकी कहाँ गेल ? बौंस काहँ गेल

बौंस मे की ? ककही । ककहोमे की ? कंश

कंशमे की ? डीन । डीनमे की ? सोख

सोख पठपर मरै छी । करिअ झुम्परी खेतै छी ।

2. भाक अने बै मया कथोपर ? हाथीपर

इरक मया खगधपर । बैमू मया पिडहोपर

3. कको इ बाबा हो, सुगम सब लख छंत हो

गंघा बटी लछमी, रैरमे देबड बैजनी

मन्त्रमे बेटी समुसमे, मंज देबै कानमे ।

4. सुपुआ मय, तपबध्ध । बौझके गहा देब काल दू सोन

बौझक मरुत की सय बिकाव ? अंग रोपी मिठी बिकाव

कोन दे पापी रीठो कं रीठो पुता कथो के । अगर जन्न कस्तूरी के

5. निनिजा एले विरिनवास बौआ एले पुरिनिजस

एक मूष अन्नल दसरिअ धान, कीनलहुँ बौआ लए वृआ धान

गुरंतिन कहय हमय गूए नीति पनेतिन कहय मोरा पने नहि

बौआ कहन मोरा दौते राह

6. जस निनिज मर रे आ इमर नेन कं कांरा खुला

नेन देली झांझ पर धान, सूखे भरि भरि दसरिअ धान

धान बेचि कोन्हे भूआपान हिरिया बिरिया बड रंगरसिया

हाथमे देबौ जंजा चुड़ी कानमे देबौ सोन छन

1. आ रे कौअ कटबी कान, बौआ लय भविहँ पकले लताम

बौआके मरुत की की बिकाव रिटका-रिटिट चानी बिकाव

चटनो रूटि गेल, बौआ इमर हसि गेल

2. अन्नपिडेय अथिहँ रे अण्ड पारि पारि गेहे रे

अण्डा तकर फांडबौर बौआक निनिजा टाहँ रे

निनिजा पने विरिनजस बौआ एले पुरिनिजस

दोना दोना के बिकाव जंग हाथे जागा वकाव

1. ५ बापा लपज

अगर जन्न कस्तूरी के भावके कसपुज

9. अनिया मे धनिया मे गोला बड़द खेले खल्ले ली मे
कतऽ मे डीहपर रे, डोहक खबर क मे, बाबा मे
बाला गेली पुरनिया मे ललल ललल बिहूआ अन्तरे मे
कोन्हापर घुक्कौलो मे कोन्हापर कऽ खरिरे मे
सामको गाढ़ लंगिरे मे, नन्दिक कुन्करिरे मे
नन्दिक बेटा कान मे, नन्दिक रे नन्दिक
गवऽ रे पपरियाको देखऽ रे मिमियाको
लल पर डठ, पुछन पर लसे
10. आ रे चन्ना आ रे आन्ऽ बार अहबऽ नदिया किन्ना अहबऽ
एस कुस्कार ललल करक पर ललल
सोनक कटोरी मे दुध मल नम आन्ऽ, बौआक मुहम्म परदुक ।
बौआक ऐठ कुट क खाय, नन्हा खाय
बाबाक ऐठ कुट क खाय, मल खाय ।
मायक ऐठ कुट क खाय, मेध खाय ।
भैयाक ऐठ कुट क खाय कसे मे खाय ।
भैया अघिअवला बाय, कुत्ता नेहरीन खाय
खल्ले हो रे कुत्ता । मरबी रे कुत्ता ॥
11. बाबू रे बाबू लोहर नसे अले ली छोड़ी दलाम दुध अले ली
फरसा प्रामे लहू आने ली शर्मि कुत्तामे छोड़ी अले ली
गुदर नेछरा होसे अले ली
12. अर बर नैज पंग बनेए, बौआ क गोले सगाद कोए
मुल मुल बौआ नैज आदि क
पोसी लोहर ओली बिलेक बिनिक
13. कासक बांनके रंगे रंगे कमला बहल कम
घारक काटे मालिन बटिक कोर फागल ।
मगला मगली पान्नी । हभर नुअ सुखोन नो ।
14. मैना मे मैनी मे तोहर गीत हरी मे, हरी नहि उ कने
माला सब सुपागे खयतो ऐल नहि उ कने
पोही बहि कऽ दुनहा एले ऐल नहि उ कने
कानध कनकूल देती, देव ने उ की

15. कौचे महुमके लचनच पुरिया, बाला बगीचा के आप
महा युधि खेले मैया, बंसा समुदर
सम देतने जोहर खेले, समुर देतने गाय
सामु देतने कंचन बंदी, अछरी धरम
अछरी खेले अले खेले कान लोप खेले
मालम बहटोकर शोमम, सिनुरक संग
ऐम बालम कनकूल कान काजा सांघम मैना
उडि गेल मैना ।
16. "महादेव कुन्हा कदम जाही कुल पगल" त पगल" चढ़ी कि फांदल"
17. आ रे कुत्ता आ । नहरो डोना
नहरोमे आगि ललल बापको बोला
बाय दलका अला रोपी गुदमक नाकके बुलाकी देनकी, तबलाक
18. नुदके रंग । मग रोह बाह ।
मगो ने भेट बकर नूल लल ।
एक खिल्ले पान खेलेक दौत रंग बाह
बादलक पान पीवष फट परि खल ।
19. काका रे बाबा रे ककरा खेले नहि नमल हो
बाग रे, बगीचा रे मोकियो ने डाले रे
मेध मल कमलक फूल पीजी मल पर पाटी सिनुर
उतु मे पीजी मल पटार, आदि देवी टिकुली रंग देवी लो
20. माक मल चाका पहाद बाला मल
मानक दीप कडक नेल, लटकवली लगल मल
सुख सुखगी देवा बावी दुख दगिर मल जात मल मंगार मल आगु जात
21. मल ककरी रे कौ ककरी रे । मल पर बैमल पंदुकिया रे
छोरा खल खल खल आम्बरसे अमल मनम है खोपा बान बान बान
नुहा दल कटिकऽ खेले सवालिकऽ ।
22. खटकी एनी कडकी एनी गनी नहल
कान मल लहूके मेननि ईल । आब की खिरती ?
कौआक लो कौआक लो व कौआ, आब की पहिली ? साही
साहीमे त पिलुअ । आब की खिरती ? खिल्ले

361. विधिका विधान न्यायप्रणाली में
अन्तर्गत की कृष्णपुत्र. पटना 1

362. वि. वि. 3 अंश 82

363. वि. वि. 2. अंश 68

364. वि. वि. 4 अंश 75

365. वि. वि. 25 अंश 79

366. वि. वि. 15 अंश 6

367. वि. वि. 30 अंश 82

368. वि. वि. 21 अंश 82

369. वि. वि. 28 अंश 77

370. वि. वि. 6 अंश 76

371. वि. वि. विधानिका

372. वि. वि. 10 अंश 8

373. विधिका संकाय गैल. सं. कार्यालयदेवरी
विधिली अकादमी पटना. 1980

374. विधिका संकाय गैल. सं. 53

375. विधिली व्यवहार गैल. सं. 82
इन्टरनेशनल फ़ैमिली फ़ैमिली, न्यायिक
पटना-4, 1984 गैल. सं. 19

376. विधिका संकाय गैल. गैल. सं. 81

377. तैय. गैल. सं. 82

378. गौतम गैल. सं. 346

379. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 23

380. तैय. गैल. सं. 18

381. विधिका संकाय गैल. गैल. सं. 79

382. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 37

383. गौतम गैल. सं. 335

384. विधिका संकाय गैल. गैल. सं. 89

385. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 147

386. तैय. गैल. सं. 149

387. तैय. गैल. सं. 150

388. विधिली लोकगैल. सं. संकायप्रकाशक
द 2

389. विधिका संकाय गैल. गैल. सं. 143

390. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 90

391. तैय. गैल. सं. 107

392. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 136

393. तैय. गैल. सं. 137

394. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 190

395. तैय. गैल. सं. 14

396. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 14

397. तैय. गैल. सं. 14

398. तैय. गैल. सं. 14

399. तैय. गैल. सं. 14

400. तैय. गैल. सं. 14

401. तैय. गैल. सं. 14

402. तैय. गैल. सं. 14

403. तैय. गैल. सं. 14

404. तैय. गैल. सं. 14

405. तैय. गैल. सं. 14

406. तैय. गैल. सं. 14

407. तैय. गैल. सं. 14

408. तैय. गैल. सं. 14

409. तैय. गैल. सं. 14

410. तैय. गैल. सं. 14

411. तैय. गैल. सं. 14

412. तैय. गैल. सं. 14

413. तैय. गैल. सं. 14

414. तैय. गैल. सं. 14

415. तैय. गैल. सं. 14

416. तैय. गैल. सं. 14

417. तैय. गैल. सं. 14

418. तैय. गैल. सं. 14

419. तैय. गैल. सं. 14

420. तैय. गैल. सं. 14

421. तैय. गैल. सं. 14

422. तैय. गैल. सं. 14

423. तैय. गैल. सं. 14

424. तैय. गैल. सं. 14

425. तैय. गैल. सं. 14

426. तैय. गैल. सं. 14

427. तैय. गैल. सं. 14

428. तैय. गैल. सं. 14

429. तैय. गैल. सं. 14

430. तैय. गैल. सं. 14

431. तैय. गैल. सं. 14

432. तैय. गैल. सं. 14

433. तैय. गैल. सं. 14

434. तैय. गैल. सं. 14

435. तैय. गैल. सं. 14

436. तैय. गैल. सं. 14

437. तैय. गैल. सं. 14

438. तैय. गैल. सं. 14

439. तैय. गैल. सं. 14

440. तैय. गैल. सं. 14

441. तैय. गैल. सं. 14

442. तैय. गैल. सं. 14

443. तैय. गैल. सं. 14

444. तैय. गैल. सं. 14

445. तैय. गैल. सं. 14

446. तैय. गैल. सं. 14

447. तैय. गैल. सं. 14

448. तैय. गैल. सं. 14

449. तैय. गैल. सं. 14

450. तैय. गैल. सं. 14

451. तैय. गैल. सं. 14

452. तैय. गैल. सं. 14

453. तैय. गैल. सं. 14

454. गौतम गैल. सं. 368

455. तैय. गैल. सं. 267

456. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 14

457. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 14

458. तैय. गैल. सं. 14

459. विधिली व्यवहार गैल. सं. गैल. सं. 14

460. तैय. गैल. सं. 14

461. तैय. गैल. सं. 14

462. तैय. गैल. सं. 14

463. तैय. गैल. सं. 14

464. तैय. गैल. सं. 14

465. तैय. गैल. सं. 14

466. तैय. गैल. सं. 14

467. तैय. गैल. सं. 14

468. तैय. गैल. सं. 14

469. तैय. गैल. सं. 14

470. तैय. गैल. सं. 14

471. तैय. गैल. सं. 14

472. तैय. गैल. सं. 14

473. तैय. गैल. सं. 14

474. तैय. गैल. सं. 14

475. तैय. गैल. सं. 14

476. तैय. गैल. सं. 14

477. तैय. गैल. सं. 14

478. तैय. गैल. सं. 14

479. तैय. गैल. सं. 14

480. तैय. गैल. सं. 14

481. तैय. गैल. सं. 14

482. तैय. गैल. सं. 14

483. तैय. गैल. सं. 14

484. तैय. गैल. सं. 14

485. तैय. गैल. सं. 14

486. तैय. गैल. सं. 14

487. तैय. गैल. सं. 14

488. तैय. गैल. सं. 14

489. तैय. गैल. सं. 14

490. तैय. गैल. सं. 14

491. तैय. गैल. सं. 14

492. तैय. गैल. सं. 14

493. तैय. गैल. सं. 14

494. तैय. गैल. सं. 14

495. तैय. गैल. सं. 14

496. तैय. गैल. सं. 14

497. तैय. गैल. सं. 14

498. तैय. गैल. सं. 14

499. तैय. गैल. सं. 14

500. तैय. गैल. सं. 14

वैशक शुद्धावली

[illegible]

1. 2. पैंगल्लोङ्क लक्ष्म. पुरा. प्रसन्न पण्डितो गच्छवन्ति

[illegible]

विशाल तानों आ धारोमें विनितल वम्भक फसल / विश्रुत कहल जाइत छैक

पृथक् नताटक प्रस्थापित क वक्त हनु खुदिया गनक एक गन नताटक शान
जाइत छल पक साक्षा खुदिक गदग सौदर छैक एक गन नताटक क अन्तक
जाकपक बरफवाक दनु गाल प्रकृतिक एक गन चपकदग नताटक ई गन नताटक नताटक
छल गन नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक
मे नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक नताटक

नाटक सतयबाबू हुं गी अं गुण गल अंनय मियु बाबेन जं
 १५ ठोप कवन जहन रैक घोषिक क बाबू दुक्त पुन कनारन चदनक ठोप यडा
 कौन छशि होप गार क्षमिन् गच्छरं गुल कननक नारायन न नरक विपुण्ड जहन
 जइल दुह गार दण्डाक्षिक नननक नपक निनक ठरका जहन बइल कननक
 चाननक सनारपर प्रयांग प्रसाधनक रूपय नहि देखल जइल

ओ३कारादि नलाट युष्मन् अणोन्त आदिभ्यः प्रत्ययान्त करवाक हेतु विहित प्रत्ययः
अवतनक वषायां इतिह एकस्य स्त्री एतन्ती इतिह गड्डय पुनरागत्य कामस्य विहित
ओ सौमभ्यक्त करवाक हेतु पौडार उपपत्ति चर्वाक प्रत्यय इतिह

नयन ओ धृ प्रमाणन 'साहित्य' स्वयंभूत कलाक मनु इत्यं नयनक बालमै विकसित
धूमपानिके समाप्त प्रकरण पदार्थ चरान्तर जाइछ 'क' कला कला कला
कानन बाइल 'साहित्य' कलाक 'अज्ञ' अज्ञ कला जाइछ 'अज्ञ' स्वयंभूत
इत्यं पदार्थक 'क' कलाक कलाक 'अज्ञ' अज्ञ कला जाइछ 'अज्ञ' स्वयंभूत
नैया कला जाइछ 'अज्ञ' अज्ञ कला जाइछ 'अज्ञ' स्वयंभूत
कलाकला आ अज्ञ कलाक कला अज्ञ कला जाइछ 'अज्ञ' स्वयंभूत
ओ बांटे पात्र कलाकला कला जाइछ ।

[illegible]

कपोलप्रसाधन- कपोलको संकयक बनयबाक लेल एतय शब्द एउटा ठोका के आ
मं भुनिपेल कहल जाइत छल। भोजन सभित्यन पोर हनु अलक अलकनिकक आ
अलकनिकक शब्द एतेछ। एते शब्द कुतल प लेल बड्डा कहल।

दलप्रसाधन दौरेक वपकला एगेशन कारक हीन एकर गनक प्रयोग करे हईन छल एकर धिम्सी विधिया कलन जाइत छलैक । एकर दुइटाई हलके करी गेलौन । रौनक गहन बेसि जाइत छलैक । अध्यापन दौरेक शर मग चपचप टाँस गइल छलैक । सम्प्रति दलप्रसाधनक लगभग एकर प्रथम मनाएलाय अछि । एकरा दुइटा शरक अछि । अछि कहल जाइत छलैक ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

कल्लस नादछः मौर्य पानक खिल्लिके बौद्धा, सिद्धिया अिद्धया कहल आइछ
अहंकार शक्तिस बाढ़ पक्ष सारथी यन्त्र जेह न बाढ़ा जात । क
आइले बौद्धके गिल्लीरी करल नादछ

गानक मंत्र सुद्ध विभिन्न पदावली सुषारी नामक फल पुण्ड्र अति एकर
परायण करेनी वृक्षा मृग सुषारिदि अति गहिर हेतु एका परवाक नद
मानी ३ इत्येक प्रया इत्येक पञ्चम एत जागतिक लोकाक प्रया पावत्य
काल माल एका अत्य प्रया ५ अति हलिया कालमानो जितो नमनिपा
अति ३ अति लोकाक कह्या कालिक प्रककद फांक प्रकिया इत पलाज
इत कहत जाइत । सुषारिक सतर पहर कल्कोक इतरा कहत जाइत

१. निम्नलिखित कथन पढ़िए और प्रश्नों का उत्तर दीजिए।
 २. निम्नलिखित कथन पढ़िए और प्रश्नों का उत्तर दीजिए।
 ३. निम्नलिखित कथन पढ़िए और प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

पाने (स्वभावक) कर्तक* पानवर्तक, पानवर्तक कर्तल बाइल । छान्ट पानवर्तक*

ध्वनि विचार

જા. નં. ૩૪. સી. સી. ૨૨. ૧૯૭૨. જન અધિકાર નામ પડેલું એક પત્રક ના
અંતર્ગત પ્રસુત થયેલું.

[illegible]

शब्द विचार

[illegible]

मंजु + संज्ञा

टोपन + फोटक	-	टोपीफोटन	काज + पट्टी	काजपट्टी
मसर + दाज		मसदाज	मंहर + भाला	- मोंहरभाला
कृप + छर	-	पिपिकार	कम + खेपी	कनखेपी
कल + छपझ		कलझझ	सुगझ + लल्ला	सुगलल्ला
नाक + बसर	-	नकबसर	नाक + चन्दा	नकचन्दा
अम्प + कलौ		चम्पकलौ	कदम + मिकड़ी	कदममिकड़ी
काध + नह		बघनह	गाल + पांझ	गलपांझ
नाक + छिन्नी	-	नकमिन्नी	पान + खौक	लखौक
खिल्लौ + बट्टा		खिलबट्टा	पेट + बट्टी	- पेटबट्टी
वीर + झुम्पक		वीरझुम्पक	मुख + रुद्धि	मुखरुद्धि
गाल + योछ		गलयोछ	लगन + फुतली	लगनफुतली
खर + खौ	-	खोरखौ	घाट + रंग	भटरंग
झल + यौरी		झलरौरी	इअ + योछना	- इअयोछना
खर + बाली		कनबाली	नाक + फल	- नकफल
सुग + पञ्च	-	सुगपञ्चो		

संज्ञा क्रिया

गृह + भग	गृहभग	गर्भ + कृ	गर्भकृ
अग्नि + धी	अग्निधी	कर्म + क	कर्मक
मातृ + भू	मातृभू	कर्म + क	कर्मक
गंगा + काट	गंगाकाट	कर्म + क	कर्मक
खापा + बान्ह	खापाबान्ह	कर्म + क	कर्मक
कल + ज्ञा	कलज्ञा	कर्म + क	कर्मक
संग + स्था	संगस्था	कर्म + क	कर्मक

विशेषण + संज्ञा -

एक + रंग	एकरंग	गोप + आश्रय	गोपआश्रय
द्वय + चक्र	द्वयचक्र	द्वय + चक्र	द्वयचक्र
आठ + हस्त	आठहस्त	गर्भ + क	गर्भक
आधे + बाँह	आधेबाँह	गर्भ + क	गर्भक
आठ + बाँह	आठबाँह	गर्भ + क	गर्भक
गोप + छत्ता	गोपछत्ता	गर्भ + क	गर्भक
गोप + खण्ड	गोपखण्ड	गर्भ + क	गर्भक
गोप + गन्ध	गोपगन्ध	गर्भ + क	गर्भक

विशेषण + क्रिया-

आधा + काट = आधकाट

योगिक शब्दक विभाणमे किन्तु विशिष्टता देखि पडैछ । कलत्र न अस्मिन् योगिक शब्दक बाँधे रचापने रहि बाँधे रचा-

पेट + बढी	पेटबढी	गर्भ + क	गर्भक
बम्बा + कल	बम्बाकल	गर्भ + क	गर्भक
मछि + रंग	मछिरंग	गर्भ + क	गर्भक
मूख + शक्ति	मूखशक्ति	गर्भ + क	गर्भक

मुदा एहि प्रकारक ज्यति अधिकांश योगिकक निर्माणमे रहि देखि पडैछ ।

अधिकांश योगिक अवयवक स्वयंभूत निर्माण प्रकारक गीतमे रहि पडैछ । एहि परिवर्तक स्वयंभूत अछि । यथा-

क) पहिल अवयवक पहिल दोस्रो स्वर हुस्व भऽ जाइत यथा-

कर्म + धी	कर्मधी	कर्म + क	कर्मक
कर्म + चक्र	कर्मचक्र	कर्म + क	कर्मक
कर्म + रंग	कर्मरंग	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक

ख) पहिल अवयवक दोस्रो दोस्रो स्वर हुस्व भऽ जाइत यथा-

कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक

ग) दोस्रो अवयव आकारान्त भऽ जाइत यथा-

कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक

घ) दोस्रो अवयव ईकारान्त भऽ जाइत यथा-

कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक

योगिक शब्दमे वस्तुतः दोस्रो अवयव ईकारान्त भऽ जाइत तँ अहि अवयवक स्वयंभूत हुस्व भऽ जाइत ।

ङ) दोस्रो अवयव इकारान्त भऽ जाइत यथा-

कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक
कर्म + क	कर्मक	कर्म + क	कर्मक

उपसर्ग औ प्रत्यय विचार

प्रत्यय	कृदन्त	वर्द्धमान्त
आ	घा + व = घौआ	हृत् लसत् एक इच्छाक प्रथम
आइ	सी + व = सिआइ	न नगड यज् यफण्ड ने कटु जेठ वैराग
	घा + व = घौआइ	
उआ	लील + व = लिनुआ	बोख-बिधुआ / पैरक शकुन विनाश
पौर + व = पिरुआ		
इआ	कल संहु + व = कलसंहिआ	चूट्यो कुटिआ, दे गते - जिनो बिदिआ, खुद्यो खुर्वा
का	चौर + व = चिरक्का	हाल-हालका

इसल कं बिउसं कयोनलस अर्थक मल्ल बनौस गथ बिउ + इअल- जिउअल

गंगाजल विविधता रूपक चित्रण पर ३ वृत्तों में गंगाजल रसिक । २०७५
निम्नी पत्रिका । अज्ञात कालका । अज्ञात कालका । अज्ञात कालका । ४ । अज्ञात
गोरा-गोरिय फेड़ों-पिडिया बच्चन-बच्चन, धारा-पर्याय, मलय-मर्याद ।

अनङ्ग-विशेषणार्थं विज्ञापकं निधनमा मरुः । अन्तर्गतं विन्दुं यत्नः कृत्वा कर्तव्यं ।
पक्का पकिरी, मांठ, घाटिआ ।

क्रिस् मन्ता गवर्नर ई एन्ड्रयुसोफोव गवर्नर निराण कौछु य ईन रिपु
काठ कछिया कछुअत-कछुअत ।

औआ वश भुजसमधन नम्यनी शब्दवित्ता तह दुखदयो दग्ग र सुमे उरुगनी
सावन इष्टिगोशर होंछ यश- कसप कलपीआ, तह तहौज ।

अन्य. आश्रयार्थे इत्ययं पञ्चमकं वाच्यं आश्रयकं शब्दकं साधनं चोक्तं कर्तृकं कर्तृकं
तत्संज्ञं इत्ययमर्थं निर्दिष्टं एवमाश्रयकं तत्संज्ञं निर्दिष्टं कर्तृकं तत्संज्ञं निर्दिष्टं
कर्तृकं तत्संज्ञं इत्ययमर्थं निर्दिष्टं एवमाश्रयकं तत्संज्ञं निर्दिष्टं कर्तृकं तत्संज्ञं निर्दिष्टं

भा. ई. इत्ययं गुणावाचक विशेषणम् । निर्देशात्मकं विशेषणकं निर्देशं करोति यथा-
 कायं कः कश्चित् लालः लालका शीघ्रं गच्छतु । तांश्च हस्तिवन्तः श्वः पश्यन्तः
 छोट-छोटका

हम ई पलक अनेक शब्दों के कुलायक विशेषण के रूप में कहेंगे कि यह स्वतंत्र चेतना
पहले कहलस कि हम भूलबुझा वृद्धों की सेवा करने के लिए हैं।
अन्यथा धिक्

4. इस प्रकार मनुष्यक गुरुणा स्वयंका लब्ध्या कर्तुं यथा यैव भवति
 किन्तु शब्दों में आचार्यपुनः निराधारक लब्ध्या कर्तुं य. लुक्तं तत्र

हा प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष दुर्लभाधिक सिद्धाणका विनिर्णय केंद्र केंद्र-प्रदेश

देखि पईछ चर्षा- आँदु + च + ई = आँदुचो (कन्याक उत्तरायण)
 काली + इआ + का + ई = कालियकाली ; इरिख + को + ई = इरिखको
 घांघ + ट + आही = घांघटाली । कच्चा + औटा + ई = कच्चीटा । जोर थ + अ
 = थोरकाली । बांग्ल + आत + ई = बांग्लाती ।

गर्भे लक्ष्मीं दत्तुं तौ न अश्वत्थामप्रधानं सन्ध्यायः सव्यतलांश्च दत्तुं विधानम्
न जातं सन्तं दत्तुं शश्वत्थामं गौर अश्वत्थकं सन्ध्यायं यथैव मयि सक्तं लक्ष्मीं

का २. इस कानून का अर्थ है कि एक व्यक्ति को अपने अधिकारों के लिए दूसरे व्यक्ति को उत्तरदायी बनाना पड़ेगा।

[illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible]

आधुनिक मीडिया भीषण वक्रपथ प्रमाणित करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर एक
जो भी सत्य तत्वक प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न अंतर्गत रूपों में प्रकट होता है। प्रत्येक व्यक्ति को
विभिन्न संघर्ष प्रमाणित है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रकट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को

341 वैश्विक वंश-वृक्ष प्रकाशन सम्बन्धी माहिती

रुडिवाले एकादश मन्दावलीके हस्तके भीषण काहरी लखल गल भांडि कहेन रघुनाथक मन्दावलीके एहिमे सपेठके मैल अछि ।

[illegible]

प्रकाश पट्टे ।

ध्वनिपात्रांतक विभिन्न प्रक्रिया एवमि पदार्थ

मन्त्रालय के अन्तर्गत कार्य करने वाले अधिकारी एवं कर्मियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :-

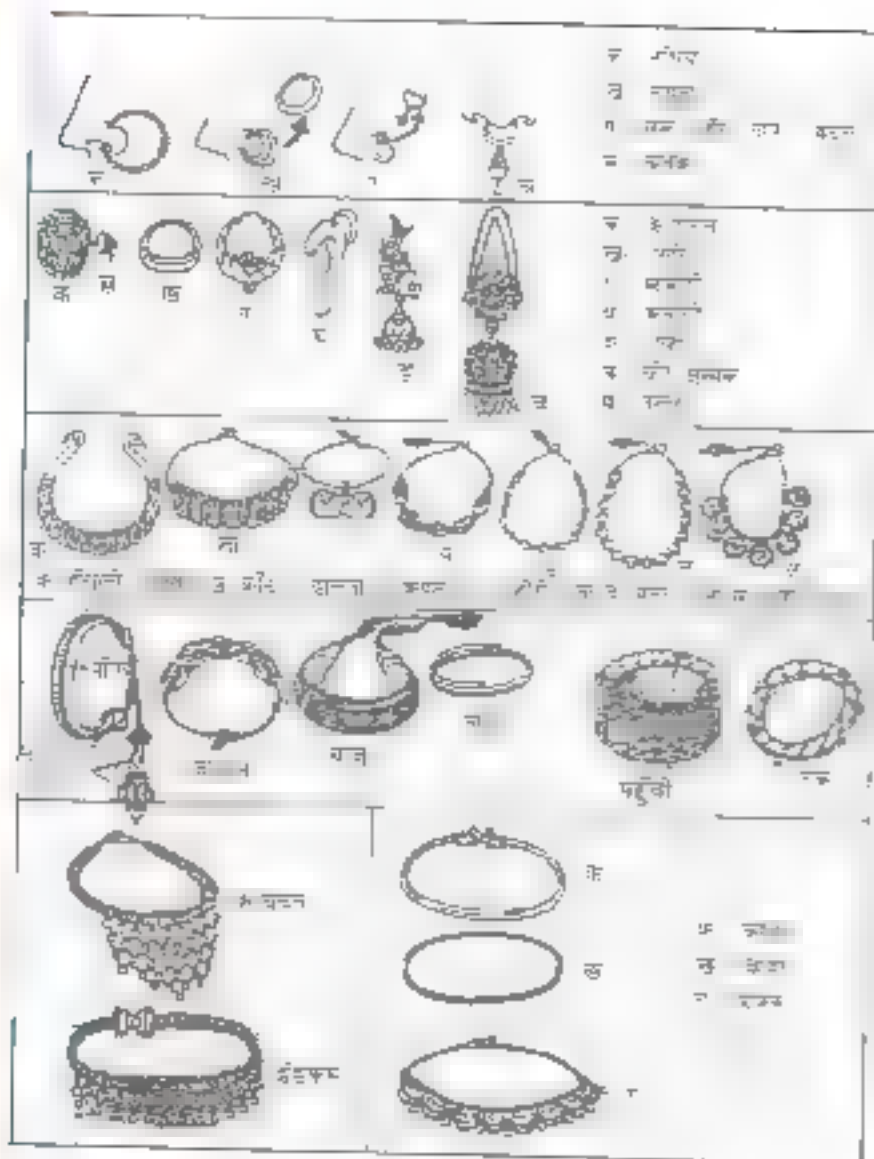
उद्देश्यक दृष्टिकोण प्रति शास्त्रज्ञत्वमे परम्परागत देशी तथा विदेशी प्रकृतिक राज्य

अंडो- एक प्रकारक खसमावय
 कजरोट- पैस कजरोट
 कठगिया- तांबराण तांबरे नखन मार
 कथपूत- कानक पुष्पाकार अलंकरण
 कपचन- किंकरु छोटब
 कपकस- मेखला
 कबनपत्ती- कमलक बागवत ईक लगन
 कालुक- चाला
 कालेज- गुनगुन गुणवत्ता चरित्र
 काल्हि- अन्य का
 जट- मर्याद पुनर्जा विनय
 जोगरा- जुव का
 कारी- पुजुइय खूब कारी
 कारोनाइ- खूब कारो
 कारिल्याह- अंत्यरा कारी
 कोआ- सिन्दुरादि रङ्गबाक युग्मपत्र
 विरोध
 कोप- पांठी पाठक आकृष्टिक गर्दनिक
 गहना विनय
 कुण्डलान- अत्यधिक लान
 कुठर- पुसगाज ऊब ओ फूलसँ अंगवस्त्र
 बिन्दाक औजार दिमंज
 कुसुम- अम्बरज्वरक पुष्प विशेष
 कंधय- पदंला
 कैबिन-धो धोप- एहन छोड जातिप नुस्
 झोपल रौंछ मुदा एकद्व भाति
 फुजल रौंछ
 कंठी- तुलसीछाँटक मल

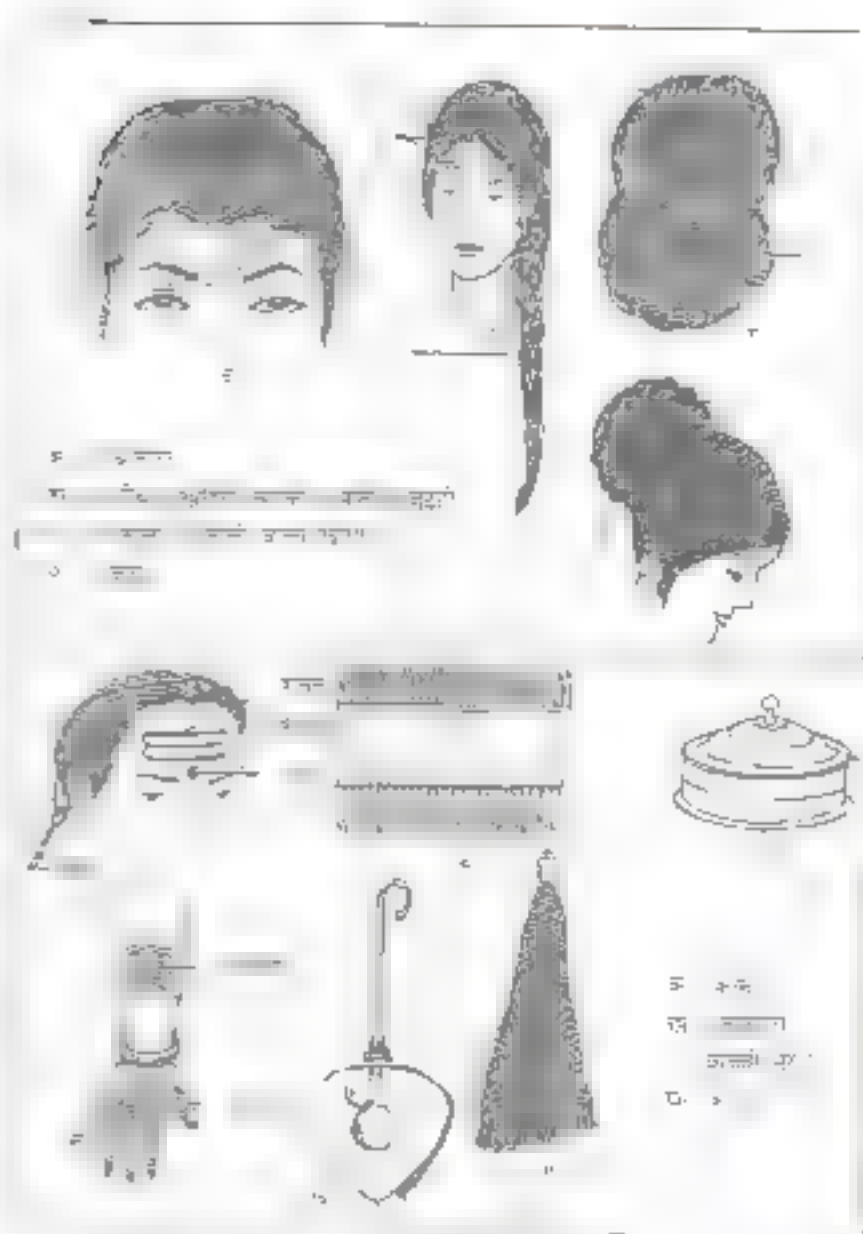
[illegible][illegible]

चालीबन्द- शिबुको
 चौकटी- छोटे चौकट बाहुभूषण
 चौपैतब- चरित्तशायब
 छपाड़- छपवाकलिया
 छपुआ- छापसै युक्त
 छटब- छोटे करब
 छप, छपा, छपा- छपनामै छपन आकृति
 छपड़ो- पहराकेँ त्यक्त वस्त्र
 छपछप- द्रव्य अन्य छिल्लाहपन
 छर- दाही । प्राचीन प्रयाग
 बय- छट्टिक गहना विशेष ।
 गमोन्- बौद्धिक गहना विशेष
 गहमन्- गहनेक भूषण विशेष
 जायबाद- वस्त्रविशेष
 गिना- शिपुगतिशय
 बितिवह- गर्दनिकभूषण विशेष
 जगनू- गर्दनिक भूषण विशेष
 बांगनी- भूषण विशेष
 बांगौली- भूषण विशेष
 जानहन- जानह दार विशेष
 अथकोआ- आद्य उ कथबाना
 जलकोआ- जलके पत्र गीत
 जुमक- कानक भूषण विशेष
 जुनर- पुरुषक केशक भीटल अंगभाग
 जुल्लो- स्त्रीक न्यून वस्त्र विशेष
 झोहर- अस्त्रजन्मके जोड़ल चुन्चिआयल वस्त्र
 झुनामलमल- घलपलक प्रपेद विशेष
 झोपड़ा- नयनर कोआरयल केश

कतिपय आभूषणक रेखाचित्र:-



कविश्री अमरनाथ गुरुद्वारा -



अधीत ग्रन्थक सूची

संस्कृत—

- | | |
|------------------|--|
| 1. अमरकोष- | स. चन्द्रधारी सिंह, चन्द्रनगर देहली, राँते मधुबनी, 1957 |
| 2. ठसपंथ- | कालिदास ग्रन्थालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस 221 005 |
| 3. अष्टावक्र- | कालिदास ग्रन्थालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस 221 005 |
| 4. कृतारत्नकर- | चण्डेश्वरदास, ऐतिहासिक संशोधन और संग्रह कलकत्ता 1925 |
| 5. कुमारसंभव- | कालिदास ग्रन्थालय, स. रत्न ग्रन्थालय देहली बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस 221 005 |
| 6. गृहस्थश्रुति- | चण्डेश्वरदास, ऐतिहासिक संशोधन और संग्रह कलकत्ता 1925 |
| 7. तन्त्रकौमुदी | मोता प्रस, मद्रास |
| 8. दुर्गाचरितम् | हैयचन्द्र, स. ठस. पी. रत्ने, गोपबन्धु संस्कृत बुक डिपो बनारस 1960 |
| 9. नन्दयशस्वम् | प्रस, निर्णयप्रस प्रस मुम्बई, 1947 |
| 10. पञ्चरायक- | कविशङ्कर न्यायिदास, जयकृष्णदास हरिदास बौध्दाचार्य संस्कृत संशोधन और संग्रह, विश्वविद्यालय, बनारस 221 005 |
| 11. पुरुषपरिचय- | विश्वपति पटना विश्वविद्यालय, पटना, 1960 |

- | | |
|-----------------------------|---|
| 7. संस्कृत हिंदी कवि- | श्री.एस. अष्ट |
| 8. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण- | गोता प्रेम. गंगस्वरपुर सं० 2013 |
| 9. स्मृतिस्मृति-पूराण- | अथर्वचंद्र, अश्वर, हंसप्रियागवतपुराण शत्रुवंत
संज्ञाप्रत्यय स्मृति |

भारत का

- [illegible]

29. मैथिली ग्रामर- श्री ए. प्रियमन, रोयल एस्मिन्टिक् स्टैंडर्ड्स ऑफ़ बंगाल कलकत्ता, 1976
30. कुरान एण्ड एपिकलचरल ग्रीसरी फार द वाथ इस्टन इन्विस्सिबल एण्ड अवब विलियम कुक, संकंपड एडिसन, सुपरिफरपैट आफ गौधर्ममेन्ट प्रिंटिंग इन्डिय कलकत्ता 1988 ।

हिन्दी-

1. उर्दू हिन्दी कांश- ... 1948 एवं उर्दू हिन्दी शब्दकोश-हिन्दी मर्मिनि हिन्दीमवन, लखनऊ, 1972
- कृपक बोंठन मध्वन्या ब्रजभाषा ... 1987 ... 1980-8.
3. ग्रामांध्या ग्रीम रसकी शब्दकोश ... 1959
34. चर्यापद- ... 206 कर्णवर्गिनस स्ट्रीट, कलकत्ता-6 वर्षाव 1367
35. ... म ... 1917
36. पतंजलिकान्यांन भाषा- ... 1973
37. बुद्धिमाननं वगैर और धन- ... 1977
38. ... 1977
39. ... 1977
40. ... 1972
41. महाकवि शूद्रक- डा. रमेशचंद्र तिवारी चौधुर्या विद्याधवन वाराणसी 1, 1967
42. ... अकादमी फरती, 1977

43. रामचरितमानस- श्रीधरपति, मंगलपुर
44. ... 1977
45. ... 1977
46. ... 1977
47. हिन्दी ... 1965
- मैथिली-
48. अचंभ- सुरेन्द्रा सुमन' मैथिली मन्दिर ... 98
49. अन्धकार- सुरेन्द्रा सुमन', ... 1969
50. अन्तर्गत- ... 989
51. अन्धकार- ... 1966
52. ... 1978
53. ... 1977
54. ... 1977
55. ... 1977
56. उद्यम- सुरेन्द्रा सुमन' ... 1987
57. एकद्वितीय और फॉक- सम्पदबला मुवा प्रकाशन, ... 1965
58. एकाकोशिक- मैथिली अकादमी श्रीकृष्णपुरी पटना-3, 1977
59. कथोत्तर- मैथिली अकादमी श्रीकृष्णपुरी पटना 1, 1984
60. कन्दकार- श्रीमध्वन्या बनेसोदन प्रकाशन कुमार जाजितपुर वैशाली, 1982
61. ... 1984
62. ... 1984
63. ... 1984
64. ... 1984
65. ... 1984
66. ... 1984
67. ... 1984
68. ... 1984
69. ... 1984
70. ... 1984
71. ... 1984
72. ... 1984
73. ... 1984
74. ... 1984
75. ... 1984
76. ... 1984
77. ... 1984
78. ... 1984
79. ... 1984
80. ... 1984
81. ... 1984
82. ... 1984
83. ... 1984
84. ... 1984
85. ... 1984
86. ... 1984
87. ... 1984
88. ... 1984
89. ... 1984
90. ... 1984
91. ... 1984
92. ... 1984
93. ... 1984
94. ... 1984
95. ... 1984
96. ... 1984
97. ... 1984
98. ... 1984
99. ... 1984
100. ... 1984

64. कोचकवच- तुन्नायझा राजकुमारगंज, दरभंगा सन् 1372 साल
65. कोलैलता- विद्यापति-सं काबुराम स्वसन-कामेश्वरिणी सप्त कारणसो 1929
66. कृष्णजन्म- मनकांशु स. सुरेन्द्र झा 'सुमन', दरभंगा 1988
67. जगन्- संकषिप्त, मैथिली प्रकाशन मैथिली-4 राजकुमार गंजिन लेन, कलकत्ता-7
68. छोटकरकाक करि- हरिमोहन झा पुस्तकभंडार, पटना, 1967
69. गीतक फुलवारो- भवानी प्रकाशन, मुमल्लहपुर, पटना-6
70. गीतनाद- विभूतिआनन्द, न्यायनाआनन्द, भवानी प्रकाशन पटना-6 1986
71. गीतनाद- 2 काबुराम स्वसन-कामेश्वरिणी सप्त कारणसो 1929
72. गुरुपूरी- चन्दनधामिन्द्र अम्बर, न्यायनाआनन्द, दरभंगा 1988
73. गीतनाद गीतनाद- स. सुरेन्द्र झा 'सुमन' दरभंगा, 1980
74. गौरीपरिणय- शिखरस. स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
75. गौरी स्वयंवर- कविलाल- स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तौमपुर्व-1, एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
76. चर्चरी- हरिमोहन झा मैथिली प्रकाशन 67) धनद पाठशाला कलकत्ता 9 1960
77. सन् 1971-18 मध्यमका- स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
78. चन्दनधामिन्द्र अम्बर- हाविमोहन झा मैथिली प्रकाशन 67) धनद पाठशाला कलकत्ता 9 1960
79. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति 1 धी-स. पी.सी. बनजोर्ड प्रकाश 1398 साल
80. खोलीकलहडू- ईशानायाझा विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1964
81. जाहिना छो छो- खोन्दनाय ठाकुर, विद्यापति फाउण्डेसन, दरभंगा 96

- स. झा. प्रकाशनागणन मिथि मिथिली दर्शन प्रा. नि. 4 जो खोलीकलहडू लेन, कलकत्ता-9 सं. 202
82. चन्दनधामिन्द्र अम्बर- हाविमोहन झा पुस्तकभंडार, पटना-4
83. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
84. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
85. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
86. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
87. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
88. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
89. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
90. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
91. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
92. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
93. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
94. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
95. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
96. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
97. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
98. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
99. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
100. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96
101. चिन्ता- पात्रो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति तौमपुर्व-1 एनमगांव, रोड उनाहवाय 2 96

102. प्राचीनगीत- स. रमणकृष्ण झा
103. प्राचीन काली मैथिली शतक- डॉ. दिनिकुमारदत्त, वर्धमान विश्वविद्यालय, वर्धमान, 1960
104. पुष्पोप- ललित, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965
105. प्रेम पत्रावली- रामदेवप्रसाद, काठमा, लहरीप्रकाशन, दरभंगा, 1948
106. प्रेरणापुञ्ज- कालिका-लाल-प्रभु, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
107. फूटल हूडी- विद्यानाथजी 'विदित' एस. पी. कॉलेज, दुमका ।
108. ब्रह्मग्रन्थ- प्रफुल्लकुमारसिंह 'मैत्र', कुकसेन्टर, ठाकुर चौक, दरभंगा, 1972
109. भलयानुस- योगानन्दप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1987
110. मधुप-अमर कोर्ति कवि तरि- मिथिला सांस्कृतिक परिषद, 1 गुरुदास पब्लिशिंग रोड, कलकत्ता-6
111. मधुआखणोपनामिका- तेजराज, कन्देरा लाल कृष्णदास, ककहरी, चौक, लहरीप्रकाशन, दरभंगा, सन् 1983 साल
114. मनुकसन्तान- रामदेवप्रसाद, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, 1968
115. मरौतिका- तिलोत्तरे- मैथिली अकादमी, लोकेशपुरी, पटना-1, 1981
116. मिथिला चित्रकला- जगन्मोहनजी, मैथिली अकादमी, लोकेशपुरी, पटना-1
117. मिथिला दर्पण- पुन्यानन्दप्रसाद, बहादुर, पटना, दुर्गापुर, 1925
118. मिथिला सम्प्रदायगत नाटक संग्रह- डा० शशिनाथप्रसाद, काद. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1986
119. मिथिला भाषा रामायण- कालीदास चन्द्राप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1987
120. मिथिला भाषा विद्यालय- रामदेवप्रसाद, मैथिली अकादमी, लोकेशपुरी, पटना, 1953 साल
121. मिथिला संस्कारगोत- स. काशीप्रसाद देवी, मैथिली अकादमी, लोकेशपुरी, पटना-1, 1980
122. मुनिक पतिप्रप- योगानन्दप्रसाद, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1969
123. भूषणप्रतिमा- मधुसूदनचौधरी, मधुर, कटुक कार्यालय-1, एलनगंज रोड, प्रयाग-2, 1961

124. मैथिली संस्कृति ओ सम्पत्ति- डा० उमेशप्रसाद, वैदेही समिति, दरभंगा, 1954
125. मैथिली कथा संग्रह- स. पदनेश्वरप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1983
126. मैथिली काव्य पदस- जगन्मोहनजी, रामदास, वास्तव संस्कृत प्रकाशन भवन, सी. को. 15/52, मुद्रिया, वाराणसी, 1969
127. मैथिली गद्यकुसुममाला- डॉ. ठाकुरप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1939
128. मैथिली गद्य पद्यसंग्रह- विद्यापति टेकचन्द्रक कर्मिटी लिमिटेड, पटना-1
129. मैथिली प्रसिद्ध कथा- डॉ. रामकुमारनाथप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1984
130. मैथिली प्राचीन गीतमाला- मैथिली अकादमी, लोकेशपुरी, पटना-1
131. मैथिली भाषा का विकास- गणेश्वर झा, विद्यापति हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना-4, 1974
132. मैथिली लोकगीत- रामदेवप्रसादसिंह 'शकेश', हिन्दी सम्मेलन, प्रयाग
133. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह- डॉ. इन्द्रकांतप्रसाद, कथक प्रकाशन, नयादौला, पटना-4, 1987
134. मैथिली व्यकरण सौम्य- डा० सुब्रह्मण्य, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा, 1983
135. मैथिली जैवसाहित्य- डा० रामदेवप्रसाद, मैथिली अकादमी, पटना, 1979
136. मैथिली साहित्यिक इतिहास- डा० दुर्गाप्रसाद 'बोता', भारती पुस्तकालय, दरभंगा
137. मैथिली साहित्यिक काल- चेतनासिन्धु, विद्यापतिभवन, विद्यापतिमार्ग, पटना, 1974
138. रचनसंग्रह प्रथम भाग- वैदेही समिति, दरभंगा
139. रामचरित- कविप्रसादसिंह कालिका-लाल-प्रभु, ठाकुरप्रसाद सिंह स्मारक निधि, राधापुर, पुष्पारी इन्फेन्टी, दरभंगा, 1969
140. रत्नमयी परिषद- मधुआखणोपनामिका, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
141. रंगमाला- ठाकुरप्रसाद, पुस्तकमंडार, पटना
142. ललितप्रसाद- कंदारनाथप्रसाद, पद्मतीर्थभवन, पटना-4, 1964
143. ललितप्रसाद- सुनेन्द्रप्रसाद, दरभंगा, 1969
144. लोकगीत विवेचन- रामदेवप्रसाद, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1974

145. लोकजीवन ओ लोकसाहित्य- डा. योगानन्द झा, कीर्तिलाल को-अपरेटिव प्रेसवाटो, दरभंगा, 1986
146. लोचनकृत रागहरीगिनी- स. शशिनाथ झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1
147. वर्णरत्नाकर- ज्योतिषीश्वरदास, सं० ककुआरौनिह एवं सुनेति कुमार चटर्जी, एस्मिन्टिक प्रेसवाटो माथ बनारस कलकत्ता, 1940 एवं मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1 संस्करण स. खगेन्द्रनाथ मिश्र तथा विमानविहारोपबन्धुमिश्र, पटना, सं० 2010
148. विद्यापति- डा. इन्द्रकान्त झा, मैथिली अकादमी, पटना, 1986
149. विद्यापतिकालीन मिथिला- विश्वेश्वरमिश्र, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965
150. विद्यापतिक काव्य संपन्न- स. गोकुलदास, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
151. विद्यापति गीतावली- चन्द्रशर्मा मिश्र अमर, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1971
152. विद्यापति- डा. जयकान्तमिश्र, इण्डियन इन्स्टिट्यूट आफ एडमन्स स्टडीज, सिमला-5, 1973
153. वृहत् मैथिली शब्दकोष- राजेश्वरदास, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1972
154. श्यामा चक्रे- नन्दोपति, स. डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तौरमुक्ति, 1. एलनगंगरोड, इलाहाबाद-2, 1961
155. श्रीकृष्ण केलिमासा- श्रीकान्तमिश्र, सं० डा. जयकान्तमिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1. एलनगंगरोड, इलाहाबाद-2, 1960
156. श्रीकृष्णजन्म रहस्य- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', श्रीभवन, बोरिंगरोड, पटना-1, 1978
157. सन्यासी- सुरेन्द्रनाथमुनि, मैथिली मन्दिर, राककुल गंज, दरभंगा, 1969
158. सनेस- किरणेश्वरमिश्र, राककुल, दरभंगा, 1937
159. सरस्वती- महाकवितासदास, मैथिली अकादमी, पटना-1, 1985
160. सावित्री सत्यवान- स. डा. शैलेंद्रमोहन झा, पुरनककोट, नालबार्ग, दरभंगा 1969

162. सोमनाथ- डा. भीमनाथ झा, साहित्य अकादमी, रवीन्द्रभवन, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-1, 1983
163. सोमनाथ- प्रपुन्यगणजा प्रदीप, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, 1971
164. सोमनाथ रहस्य- प्रभासकुमारचौधरी, मैथिली अकादमी, पटना, 1977
165. इरायें विवाह- जगन्मोहिनिमल्ल, स. डा. रामदीन झा, दरभंगा, 1982
166. शिवोन्म- उर्वशी प्रकाशन, पटना- 8

पत्र-पत्रिका

1. फूलफूल, नेपालीय मैथिली मासिक
2. मरती, नेपालीय मैथिली मासिक, दरभंगा
3. मनोहर, संस्कृत मैथिली त्रैमासिक, दरभंगा
4. मिथिला भाषा, मैथिली त्रैमासिक, पटना
5. मिथिला मिहिर, मैथिली मासाहिक, पटना
6. मिथिला मोद, मैथिली मासिक, काशी
7. वेदहरी, मैथिली मासिक, दरभंगा
8. स्वदेश, मैथिली मासिक, दरभंगा
9. मिथिलाकानन, नेपालीय मैथिली मासिक, विशेषांक सं० 2046
10. न्यासी, मैथिली त्रैमासिक, भुवनेश्वरपुर

एही पोथीमें...

- [illegible]

डा. कमला चौधरी

जन्म : १ जून १९३३ ई.

पिता : श्रीकृष्णशरणदास, अधिवक्ता, महेन्द्रिचमराव, दादुभंग
माता : विनायका, भंडेल, मधुबनी

शिक्षा : स्नातकोत्तर स्नातकोत्तर

वर्ग : स्त्री (इंग्लिश) कनैदाचौधरी

पता : बनारस-मिनापुर, दादुभंग-२४४०३३।

विशेष : ● बी.ए. (मैथिली प्रविष्टि) १९७३, ल.रा. विधिना विश्वविद्यालय, दादुभंग
(प्रथम श्रेणी)

● एम.ए. (मैथिली) १९७६, ल.रा. विधिना विश्वविद्यालय, दादुभंग
(प्रथम श्रेणी)

● पी.एच.डी. १९९१ में मैथिली भाषा और साहित्य में प्रयुक्त वेदा-भूषा-
प्रमाणन सम्प्रदाय में राष्ट्रीयक भाषासाहित्यिक अनुसंधान विषय पर
ल.रा. विधिना विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट प्राप्त।

वृत्ति : अनुसंधान, मैथिली विभाग, एम.बी.डी.एम. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

अतिरिक्त कार्यवाही :

- मुजफ्फरपुर में प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका (त्रैमासिक) स्वातंत्र्य
(१९९४-९९) सम्पादन।
- विभिन्न चर-परिचय कथा, कविता और निबन्ध प्रकाशित।
- महेन्द्रिचमराव पत्रिका दर्शन में मैथिली प्रकाशक सम्पादन।
- आकाशवाणी, दादुभंग और पटना में कथा, कविता और निबन्ध प्रसारित।

प्रकाशकपूर्ण : १. बाटे विचारपत्र पत्रिका (कथा संग्रह)

२. पिका मधुमाय (कविता संग्रह)

३. अक्षरपूर्णदेवीके बंगला लघु उपन्यास का संयोजक मैथिली अनुवाद

परिचय : १९७६ में ल.रा. विधिना विश्वविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर में मैथिली एकांक में
सफल अभिलेखक हेतु प्रयुक्त। १९७६ में पत्रिका समिति पत्रिका में मंच पर
म.रा.वि. विश्वविद्यालय दिल्ली में पत्रिका प्रकाशित पाठ्य पाठ्य में सफल
अभिलेख।

संविदा : मैथिली शिक्षक सोसाइटी, मुजफ्फरपुर।